₹25

हिन्दी श्रोताओं की मासिक पत्रिका

क्रान्ति

अगस्त 2017



- पैग़म्बरों पर ईमान
  —सैयद अबुल आला मौदूदी
- नये रंग में नयी कविता
  —मुहम्मद इलियास हुसैन
- क़ुरआन की सामाजिक व्यवस्था
  —विजय गोपाल मंगल
- प्रकाशपुंज हज़रत मुहम्मद (स॰)
  —स्वामी लक्ष्मण प्रसाद

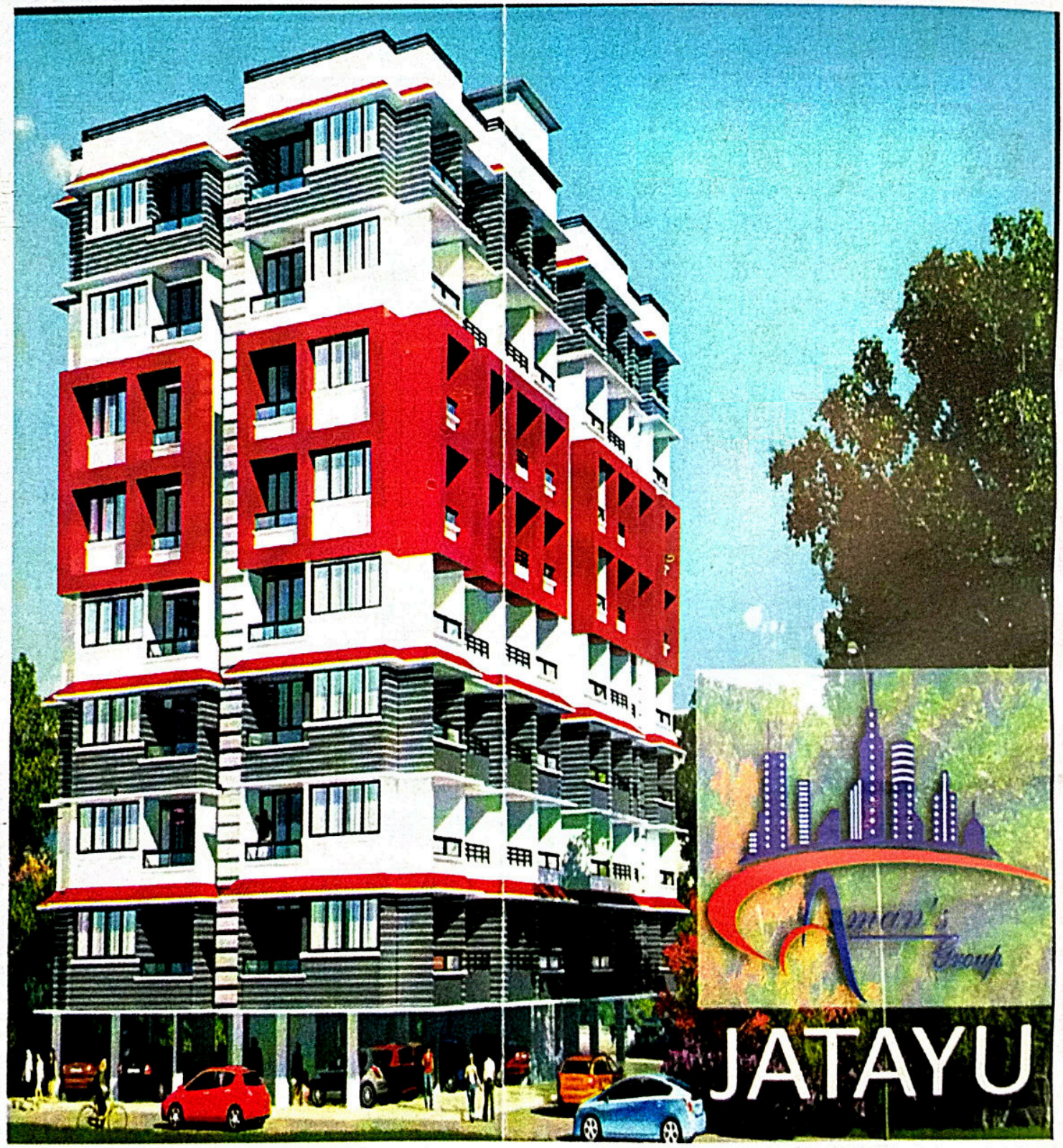

Aman's Group

Shop No.3- 4, Ground Floor, Karma Empress Bldg., Near K.T.C Bus Stand, Vasco-da-Gama, Goa.

Ph: 0832 2500823 / 2514134 Cell: 9326127351 / 9823577351

Sales: 9637888409 Email: amanbuilders4u@gmail.com

आपकी आशाओं का सुन्दर प्रतिबिम्ब

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका

कान्ति

वर्ष 27 अंक 2 अगस्त 2017

जिसने किसी इन्सान को क़त्ल के बदले या ज़मीन में बिगाड़ फैलाने के सिवा किसी और वजह से क़त्ल कर डाला उसने मानो सारे ही इन्सानों को क़त्ल कर दिया, और जिसने किसी की जान बचायी उसने मानो सारे इन्सानों को जीवन दान किया । –क़ुरआन

संपादक

डॉ० मुहम्मद अहमद

अपने विचार, लेख, रचनाएं भेजने एवं संपादकीय मामलों के लिए लिखें–

संपादक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल editorkanti@yahoo.com

* * *

ख़रीदार बनने, एजेंसी लेने, प्रचार-प्रसार एवं प्रबंधकीय मामलों के लिए लिखें–

प्रबंधक, 'कान्ति' मासिक

डी-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव

जामिया नगर, नयी दिल्ली–110025

ई मेल managerkantidelhi@gmail.com

* * *

फ़ोन संपादकीय एवं प्रबंधकीय

011-26949430, 09818799223

सहयोग राशि

एक प्रति रु० 25/- विशेषांक रु० 50/-

वार्षिक रु० 270/-, दो वर्ष 500/-

पांच वर्ष 1100/-, आजीवन रु० 6000/-

सऊदी अरब और खाड़ी के देशों से–110 रियाल

यूरोप व अमेरिका से–40 US डॉलर

वेब : **www.kanti.in**

चेक / ड्राफ्ट **'कान्ति'** के नाम से बनवाएं

ग़ज़लें

कहां यह सतह-पसन्दी अदब[1] को ले आयी
जहां नज़र की बलन्दी न दिल की गहराई

अब आदमी का ठिकाना, न कायनात की ख़ैर
सुना है अह्ले-ख़िरद[2] हो गये हैं सौदाई[3]

हज़ार हैफ़[4] कि हम तेरे बेवफ़ा ठहरे
हज़ार शुक्र कि हम को हवस न रास आयी

अब अपने जेबो-गरेबां का क्या सवाल रहा
जुनूं का हाथ बटाने को ख़ुद बहार आयी

हयात[5] पूछ रही थी सुकून का मफ़हूम[6]
तड़प के दिल ने तेरे दर्द की क़सम खायी

उसी की राह में आंखें बिछाएगी मंज़िल
वो अज़्म[7] जो नहीं मुहताजे-हिम्मत-अफ़ज़ाई[8]

मुशायरों में 'हफ़ीज़' आज कल वही जाए
कि जिसको हद से ज़्यादा हो ज़ौक़े-रुसवाई[9]।

1. साहित्य, 2. अक़्ल वाले, बुद्धिमान, 3. पागल, उन्मादी, 4. हाय, अफ़सोस, 5. ज़िन्दगी, 6. अर्थ, 7. इरादा, संकल्प, 8. उत्साह, साहस बढ़ाने की ज़रूरत, 9. बदनामी का शौक़ ।

(2)

छा जाएगी माहौल पे कुछ और उदासी
बुझती हुई शम्ओं[1] से चिराग़ां तो न होगा

इन्सान को इन्सान का ग़मख़्वार[2] बना दे
इस दौर से ये कारे-नुमायां तो न होगा

ख़ुद उसने कहा है तो उसे क्यों न भुला दूं
जानां से ज़्यादा ग़मे-जानां[3] तो न होगा ।

1. चिराग़ों, दीपकों, 2. हमदर्द, 3. प्रेम-पात्र का दुख, महबूब या महबूबा का ग़म ।

● हफ़ीज़ मेरठी



कहां क्या है ?

ग़ज़लें	–हफ़ीज़ मेरठी	3
क़ुरआन ज्योति		5
सुशीलता (हदीस मंजरी)		6
व्यक्तित्व सुन्दर कैसे बने ? (संपादकीय)		7
मिलावट एवं घटतौली (आपके पत्र)		9
पैग़म्बरों पर ईमान (आस्था)	–सैयद अबुल आला मौदूदी	13
सकारात्मक बदलाव के लिए आगे आएं (सामयिक)	–संपादन प्रभाग	20
हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) संसार के लिए प्रकाशपुंज (जीवन आदर्श)	–स्वामी लक्ष्मण प्रसाद	21
आचार संहिता (कविता)	–ओमप्रकाश बजाज	23
पानी के दोहे (काव्य)	–अशोक अंजुम	25
नये रंग में नयी कविता (विशेष आयोजन)	–मुहम्मद इलियास हुसैन	26-27
नयी कविता और उसके बाद	–प्रो॰ देवराज	31
वेद और क़ुरआन (इक दूजे को जानें)		33
क़ुरआन की सामाजिक व्यवस्था	–विजय गोपाल मंगल	35
सीरिया वैश्विक शक्तियों की चेतना शून्यता	–संपादन प्रभाग	38
अभागिन (कहानी)	–अबरार मुहसिन	39
आधार की अनिवार्यता पर सवाल (ज्वलंत सामयिक)	–रीतिका खेड़ा	44
नयी मुद्रा बिट कॉइन (अर्थ-उपभोक्ता)	–संकलित	45
आलोचना होने लगी (कविता)	–योगेन्द्र मौदगिल	46
वरिष्ठजनों को सम्मान दीजिए (घर-परिवार)	–राखी बंसल	47
बालवीथी		49

कुरआन ज्योति

(35) इनसे पूछो तुम्हारे ठहराए हुए शरीकों में कोई ऐसा भी है जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करता हो ?[43]–कहो, वह केवल अल्लाह है जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है । फिर भला बताओ, जो सत्य की ओर मार्गदर्शन करता है वह इसका अधिक हक़दार है कि उसका पालन किया जाए या वह जो स्वयं राह नहीं पाता, अलावा इसके कि उसको रास्ता दिखाया जाए ? आख़िर तुम्हें हो क्या गया है, कैसे उलटे-उलटे फ़ैसले करते हो ? **–क़ुरआन, 10 : 35**

43. यह एक बड़ा महत्वपूर्ण प्रश्न है कि जिसको तनिक विस्तार में जाकर समझ लेना चाहिए । दुनिया में इन्सान की ज़रूरतों का क्षेत्र केवल उसी सीमा तक सीमित नहीं है कि उसको खाने-पीने, पहनने और जीवन बिताने का सामान मुहैया हो और विपदाओं, मुसीबतों और हानियों से वह बचा रहे, बल्कि उसकी एक ज़रूरत (और वास्तव में सबसे बड़ी ज़रूरत) यह भी है कि उसे दुनिया में ज़िन्दगी गुज़ारने का सही तरीक़ा मालूम हो और वह जाने कि अपने आपके साथ, अपनी शक्तियों और योग्यताओं के साथ उस सामग्री के साथ जो धरती पर उसके इस्तेमाल में है, उन अनगिनत इन्सानों के साथ जिनका अलग-अलग हैसियतों में उसे सामना करना पड़ता है और कुल मिलाकर सृष्टि की उस व्यवस्था के साथ जिसके अधीन रहकर ही बहरहाल उसे काम करना है वह क्या और किस तरह मामला करे जिससे उसकी ज़िन्दगी कुल मिलाकर सफल हो और उसकी कोशिशें और मेहनतें ग़लत राहों में लगकर तबाही व बर्बादी के रूप में सामने न आएं । इसी सही तरीक़े का नाम 'सत्य' है और जो मार्गदर्शक इस तरीक़े की ओर इन्सान को ले जाए वही 'सत्यवान मार्गदर्शक' है । अब क़ुरआन तमाम मुश्रिकों से और उन सब लोगों से जो पैग़म्बर की शिक्षा को मानने से इन्कार करते हैं, यह पूछता है कि तुम अल्लाह के सिवा जिन-जिन की बन्दी करते हो, उनमें कोई है जो तुम्हारे लिए 'सत्य का मार्गदर्शन' प्राप्त करने का साधन बनता हो या बन सकता हो ?–स्पष्ट है कि इसका उत्तर न के सिवा और कुछ नहीं है, इसलिए कि इन्सान अल्लाह के सिवा जिनकी बन्दगी करता है, वे दो प्रकार के हैं–

एक वे देवियां, देवता और ज़िन्दा या मुर्दा इन्सान जिनकी पूजा की जाती है, सो उनकी ओर तो इन्सान का रुजू सिर्फ़ इस उद्देश्य के लिए होता है कि पराप्राकृतिक तरीक़े से वे उसकी ज़रूरतें पूरी करें और उसको विपदाओं से बचाएं । रहा सत्य का मार्गदर्शन, तो वह न कभी उनकी ओर से आया, और न कभी किसी मुश्रिक ने उसके लिए उनकी ओर रुजू किया और न कोई मुश्रिक यह कहता है कि उसके ये उपास्य उसे चरित्र, आचरण, संस्कृति, सभ्यता, अर्थ, राजनीति, क़ानून, न्याय आदि के नियम सिखाते हैं ।

दूसरे वे इन्सान जिनके बनाए हुए सिद्धांतों और क़ानूनों की पैरवी और आज्ञापालन किया जाता है, सो वे मार्गदर्शक तो ज़रूर हैं, मगर सवाल यह है कि क्या सच में वे 'सत्य के मार्गदर्शक' भी हैं या हो सकते हैं ? क्या उनमें से किसी का ज्ञान भी उन तमाम तथ्यों तक व्याप्त है जिनको जानना इन्सानी ज़िन्दगी के सही नियम बनाने के लिए ज़रूरी है ?

(शेष पृष्ठ 11 पर)

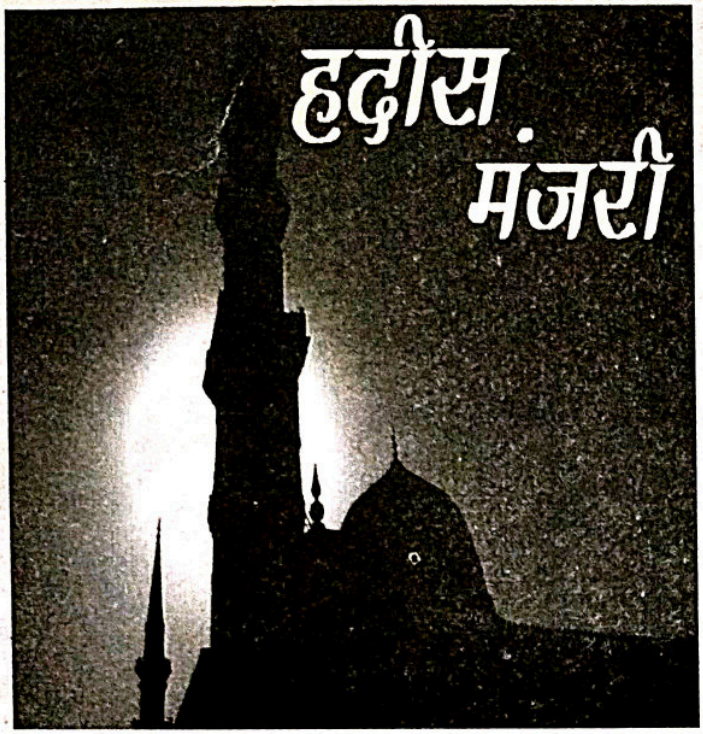

सुशीलता

● हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल-आस (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) स्वभावत: न तो अश्लील शब्द कहते थे और न अस्वाभाविक रूप से अश्लील शब्द कहते थे और आप कहते थे : "निश्चय ही तुममें सबसे अच्छे वे लोग हैं जो तुममें शील-स्वभाव में सबसे अच्छे हैं ।" –बुख़ारी, मुस्लिम

● हज़रत अबू दरदा (रज़ि॰) से रिवायत है कि नबी (सल्ल॰) ने कहा : "क़ियामत के दिन मोमिन की तुला में सुशीलता से बढ़कर कोई चीज़ भारी न होगी और अल्लाह अश्लील वक्ता और अभद्र और व्यर्थ बकने वाले से घृणा करता है ।"

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन सहीह' है ।

● हज़रत अबू हुरैरह (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहते हैं कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) से उन चीज़ों के विषय में पूछा गया जिनके कारण अधिकतर लोग जन्नत में प्रवेश करेंगे ? आपने कहा : "अल्लाह का डर रखना और अच्छा शील-स्वभाव ।" और आपसे उन चीज़ों के विषय में भी पूछा गया जिनके कारण अधिकतर लोग दोज़ख़ में प्रवेश करेंगे ? आपने कहा : "मुंह और शर्मगाह (जननेंद्रिय) ।"

–तिरमिज़ी

● हज़रत अबू हुरैरा (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "मोमिनों में ईमान की दृष्टि से सबसे पूर्ण वह व्यक्ति है जो उनमें शील-स्वभाव की दृष्टि से सबसे अच्छा हो । और तुममें अच्छे वे हैं जो अपनी स्त्रियों के प्रति अच्छे हों ।"

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन सहीह' है ।

● हज़रत आइशा (रज़ि॰) से रिवायत है । वे कहती हैं कि मैंने अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) को यह कहते सुना : "निश्चय ही मोमिन अपनी सुशीलता से उस व्यक्ति के पद को प्राप्त कर लेता है जो (दिन में) रोज़ा रखता हो और (रात में नमाज़ में ख़ुदा के सामने) खड़ा रहता हो ।"

–अबू दाऊद

● हज़रत जाबिर (रज़ि॰) से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने कहा : "क़ियामत के दिन तुममें मुझे सबसे अधिक प्रिय और मेरे अधिक निकट बैठने वाले वे लोग होंगे जिनके अख़्लाक़ तुममें सबसे अच्छे होंगे । और क़ियामत के दिन तुममें मुझे सबसे अधिक अप्रिय और मुझसे दूर रहने वाले वे लोग होंगे जो बनावट के साथ बहुत ज़्यादा बोलते हैं ('सरसारून') और बाछें फाड़-फाड़कर (रोब डालने के लिए) बातें करते हैं । (मुतशद्दिकून) और अपनी बड़ाई जताते हैं (मुतफ़ैहिकून)।" लोगों ने कहा कि हम 'सरसारून' और 'मुतशद्दिकून' को जानते हैं । ये 'मुतफ़ैहिकून' कौन हैं ? आपने कहा : "घमंड करने वाले ('मुतक़ब्बिरून')।"

–तिरमिज़ी । तिरमिज़ी ने कहा कि यह हदीस 'हसन' है ।

तिरमिज़ी ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मुबारक से सुशीलता की व्याख्याएं रिवायत की है कि उन्होंने कहा : वह खिले हुए चेहरे (प्रफुल्लता) और नेकी को फैलाने और कष्टदायक चीज़ों से बचने का नाम है ।

('रियाज़ुस्सालिहीन' से)

इस्लाम-परिचय : हिन्दी वेबसाइटें

www.islamdharma.org
www.islamic videos.com
www.islamicwebdunia.com
www.quranhindi.com

संपादकीय

व्यक्तित्व सुंदर कैसे बने ?

मानव-जीवन में व्यक्तित्व की बड़ी महत्ता है । यह वह चीज़ है, जो जीवन को सफल बनाने में आधारभूत भूमिका निभाती है । परन्तु सवाल यह है कि अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण कैसे किया जाए ? प्लेटो, अरस्तू से लेकर वर्तमान काल के विशेषकर पश्चिमी विद्वान भी व्यक्तित्व निर्माण पर ज़ोर देते हैं और इसके विषय में अपने-अपने विचार प्रकट करते रहे हैं । यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं होना चाहिए कि व्यक्तित्व निर्माण के जो तरीक़े इनके द्वारा सुझाए गये हैं उनमें से कुछ ऐसे हैं जो व्यावहारिक होने के साथ स्वीकार्य भी हैं, लेकिन इनमें वे तरीक़े भी सम्मिलित हैं जो व्यावहारिक और अस्वीकार्य भी है । अत: ये तरीक़े सफल नहीं हो पाते हैं । इतिहास के पृष्ठ बताते हैं कि इनके प्रस्तावित तरीक़े अपने मूलभूत दोषों के कारण कभी व्यावहारिक नहीं बन सके । इस पर विडंबना और अफ़सोस की बात यह कि वर्तमान काल में ऐसे ही विद्वानों एवं विचारकों द्वारा तैयार की गयी चरित्र अथवा व्यक्तित्व निर्माण की रूपरेखा को इसकी निरर्थकता को जानते-समझते प्रचारित-प्रसारित किया जा रहा है । ऐसे में लोगों को भ्रम और संशय में पड़ जाना सहज बात है । प्रत्येक व्यक्ति अपना व्यक्तित्व संवारना चाहता है । इसके लिए उसे इतना भ्रमित होते भी देखा गया है कि वह अपने आचार, व्यवहार और बर्ताव को विकृत कर डालता है अथवा अनैतिक बना लेता है । वह अपने चाल-ढाल में कृत्रिमता ले आता है । इस प्रकार मनुष्योचित गुणों से वह वंचित होने लगता है और एक समय ऐसा आ जाता है कि सही और ग़लत की भी पहचान करने की क्षमता खो देता है । इसका नतीजा यह होता है कि उसका रहा-सहा व्यक्तित्व भी ख़त्म हो जाता है और उसका जीवन पशुवत हो जाता है । पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति का मानव-जीवन पर यह बड़ा उपकार है । आधुनिकता के नाम पर फैल रही इस अपसंस्कृति ने मनुष्य को उसके सहज-स्वाभाविक गुणों से वंचित कर डाला है ।

यह अच्छी बात है कि लोग अब इसके कुप्रभावों से परिचित हो रहे हैं । व्यक्तित्व का संबंध आध्यात्मिकता, नैतिकता और मानवीय गुणों से होता है । नैतिक मूल्य और गुण अपने आपमें आध्यात्मिकता समाहित किये होते हैं । अत: यथार्थ आध्यात्मिक मूल्य एवं शिक्षाएं नैतिकता का आधार बन जाती हैं । व्यक्तित्व के सकारात्मक विकास के लिए ज़रूरी है कि इन्सान अपने अन्दर नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य पैदा करे । नैतिकता के द्वारा आध्यात्मिक, भौतिक और सौंदर्य विषयक मूल्यों में सामंजस्य पैदा किया जा सकता है । इसी के द्वारा समाज में पाये जाने वाले अंतर्विरोधों को परस्पर समन्वित किया जा सकता है । नैतिकता के सिलसिले में भली और बुरी सोच का प्रश्न आता है । लेकिन इसको हल करने में हमारा अनुभव और स्वज्ञान अपर्याप्त सिद्ध होता है । इस मामले में बुद्धि दूर तक हमारा साथ नहीं देती । नैतिकता की आंतरिक शक्ति और उसके प्रेरक-तत्व के विषय में मानव-चिंतन ने जो चीज़ें प्रस्तावित की हैं, जिनकी अनदेखी की जा सकती । परंतु धर्म की रहनुमाई और निर्देशन न हो तो इन चीज़ों की हैसियत स्पष्ट नहीं

होती और न इन्हें कोई सुदृढ़ आधार मिल सकता है । इस मामले में जब हम इस्लाम का अध्ययन करते हैं तो हमें उन सारे प्रश्नों का संतोषजनक उत्तर मिल जाता है, जो व्यक्तित्व निर्माण और नैतिकता के विषय में उभर कर सामने आते हैं । यहां हमको भलाई, बुराई, अच्छी-बुरी, सही और ग़लत चीज़ें स्पष्ट रूप से अवगत हो जाती हैं । यहां स्पष्ट शब्दों में बता दिया गया है कि ज्ञान का मूल स्रोत अल्लाह की हिदायत और पवित्र क़ुरआन है । अल्लाह ने जो नैतिकता का क़ानून प्रदान किया है उसके पालनीय होने के लिए सही आधार पर्याप्त है कि वह अल्लाह की ओर से है । मनुष्य के लिए जो चीज़ अपेक्षित है, वह अल्लाह की ख़ुशनूदी और उसकी प्रसन्नता के अतिरिक्त कोई दूसरी चीज़ नहीं हो सकती । अल्लाह की प्रसन्नता की प्राप्ति और अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण इस्लामी शिक्षाओं पर चलकर ही किया जा सकता है । इससे हटकर कोई और उपाय नहीं । इन्सानों को हुक्म दिया गया है कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) के श्रेष्ठ चरित्र का अनुपालन करें और अपनी ज़िन्दगियों में आप (सल्ल॰) के पवित्र जीवन से रहनुमाई हासिल करें । क़ुरआन में है : "वास्तव में तुम लोगों के लिए अल्लाह के रसूल में एक उत्तम आदर्श है, प्रत्येक उस व्यक्ति के लिए जो अल्लाह और अंतिम दिन की आशा रखता हो और अल्लाह को अधिक याद करे (अल-अहज़ाब : 21)।" अल्लाह के रसूल (सल्ल॰) ने फ़रमाया, "अल्लाह ने मुझे नैतिक गुणों और अच्छे कामों की पूर्ति के लिए भेजा है (शरहुस्सुन्नह)।" आइए, अपने समय को व्यर्थ न गंवाकर इस्लाम की शिक्षाओं को जीवन में उतारें और जो लोग इनसे वंचित हैं, उन तक पहुंचाएं ताकि वे भी अपने व्यक्तित्व को बना-संवार कर लोक-परलोक की सफलता सुनिश्चित कर सकें ।



मिलावट एवं घटतौली

मान लेते हैं कि जनता को पता चल गया है कि एक लीटर पेट्रोल की पूरी क़ीमत अदा करने के बाद भी 900 मिली॰ पेट्रोल मिल रहा था, और आगे भी मिलेगा लेकिन केवल कमतौली ही एक अकेला अपराध नहीं बल्कि मिलावट के कारण वाहनों के इंजन भी ख़राब हो रहे हैं। अब जनता को इस खुलासे से आख़िर लाभ क्या होगा क्योंकि विकल्प जनता के पास क्या है ? यह खुलासा एक सस्ती लोकप्रियता या सनसनी फैलाकर ख़त्म हो जाएगा। हलवाई डब्बे को भी मिठाई के साथ तौलता है। दूध में पानी ही नहीं बहुत कुछ मिलाया जाता है।

हिन्दुओं के त्योहार आते ही मीडिया नक़ली मिठाइयों की ख़बरें हर बार एक सीरियल की तरह चलाते हैं। गोवध न पूजा में देवता पर कच्चा दूध चढ़ाया जाता है और सारा का सारा सिंथेटिक। यानी जब दुस्साहस की पराकाष्ठा कि देवता को ही नक़ली दूध चढ़ा दिया तो भला इन्सान की क्या औक़ात ?

मिलावटी नक़ली कमतौली ये सब अब व्यापार के सेक्युलर अलंकार हैं लेकिन इनके पीछे मूल कारण क्या है? सबको मालूम भी है कि कारण क्या है लेकिन अंगर नेताओं का सेक्यूलरिज़्म या व्यापारियों का सेक्यूलरिज़्म कहीं स्थायी है तो वह केवल मिलावट कमतौली या नक़ली सामान बनाने-बेचने में है।

नक़ली, मिलावटी सामान बेचने वाले व्यापारियों को कभी भाजपा सपा बसपा लोकदल कांग्रेस में बंटते नहीं देखा होगा और अगर सेल्स टेक्स या एक्ससाइज टीम या इनकम टैक्स की टीम बाज़ार में आ जाए तो देखिए कि 125 करोड़ जनता को एक साथ इकट्ठे प्रेम सद्भाव और वैररहित रहने का इससे बड़ा उदाहरण कहीं और देखने को नहीं मिलेगा यानी एकता की ऐसी मिसाल कहीं देखने को न मिलेगी।

पेट्रोल पम्प या राशन सस्ते ग़ल्ले की दूकान या केरोसिन या गैस एजेंसी क्या किसी साधारण आदमी को मिल सकती है ? गृह मंत्रालय, वित्त मंत्रालय, रक्षा मंत्रालय बहुत चर्चित पोर्टफोलियो होते हैं, लेकिन पेट्रोल डीज़ल संबंधित मंत्रालय का कोई ज़िक्र नहीं करता, जबकि सबसे ज़्यादा लाभकारी पोर्टफोलियो यही तेल मंत्रालय है। मथुरा रिफाइनरी से केवल डीज़ल, पेट्रोल गैस और पेट्रो प्रोडक्ट ही नहीं निकलते बल्कि इन सबसे ज़्यादा तो नोट निकलते हैं। इंडियन ऑयल कारपोरेशन के अधिकारियों से लेकर डिपो और फिर माप-तोल अधिकारी, ज़िला सप्लाई अधिकारी और ऊपर नीचे के सारे अधिकारी सबके बाक़ायदा रेट तय हैं और अब छापेमारी होगी तो निस्संदेह नया रेट तय होगा जैसे वेतन आयोग की सिफ़ारिशें तय होती हैं ठीक वैसे ही यहां भी समय-समय पर महंगाई के हिसाब से रेट में संशोधन होता रहता है।

ऐसा नहीं है कि केवल तेल मंत्री ही लाभ में रहेगा क्योंकि ज़िलापूर्ति मंत्रालय, गृह मंत्रालय, कार्मिक मंत्रालय के मंत्री भी तो बेचारे पूरे 29 दिन का उपवास रखकर एक अंतिम तारिख़ का इन्तिज़ार करते हैं जहां जगमहाहट के साथ आंखों के चश्मे भी उतर जाते हैं। बैंक विंडो छोड़ने से पहले आदमी कई बार नोट गिनता है यहां तक कि वेतनभोगी और व्यापारी भी नोट गिनते हैं परन्तु रिश्वत ही एक मात्र ऐसा प्रबंधन है जहां नोटों की संख्या का पूरा विश्वास बना हुआ है और रिश्वत पूरी तरह सेकुलर और धर्मनिरपेक्ष और सिस्टेमेटिक परंपरा है जहां कभी-कभी कोई छुट्टी नहीं और कोई घाल-मेल नहीं और जब सत्ता बदलती है तो रिश्वत की रेट अगर स्वतः रिवाइज नहीं होते हैं तो सिस्टम ऐसी ईमानदारी की राह पकड़ता है कि अख़बारों मीडिया में सोशल मीडिया में भक्तों की प्रतिक्रियाएं सुर्ख़ियां बनने लगती हैं और इस ईमानदारी की क़ीमत अन्तोगत्वा आम आदमी यानी ग्राहक को ही देनी पड़ती है।

इतिहास गवाह है कि जब-जब सरकारें ईमानदार आयी है तब-तब रिश्वत के रेट जल्दी-जल्दी रिवाइज होने लगते हैं। हर परिवर्तन की अपनी एक क़ीमत है और क़ीमत का

भुगतान बेचारा वही करता है जो इसका ख़रीदार है । परिवर्तन लाने के लिए टिकट भी महंगे बिकते हैं और परिवर्तन दिखने के लिए बड़ी-बड़ी जनसभाएं भी करनी होती हैं और फिर 125 करोड़ लोगों को चोर, बेईमान और लुटेरा डिक्लेयर डिक्लेयर करने के लिए अपने-आपको हरिश्चंद्र और सम्राट अशोक का वंशज साबित करना होता है । कभी-कभी शिवाजी की ड्रेस पहनकर, तो कभी महाराणा प्रताप की कॉस्ट्यूम पहनकर लालक़िले से सारी दुनिया के सामने अपने को कटप्पा और पूर्वर्ती सरकार को बाहुबली भी कहना पड़ता है ।

इसलिए ज़्यादा गंभीर न हों क्योंकि तेल मालिश करने वाले आपके ही तेल से आपकी मालिश करेंगे और फ़ीस के तौर पर आपकी ज़िन्दगी गिरवी रख लेंगे वरना अगर वाक़ई में सरकार अपने को ईमानदार कहने का साहस रखती तो मिलावट या कमतौली करने वाले और इस सिस्टम को संरक्षण देने वालों को फांसी की सज़ा का प्रावधान करती जिसमें केवल एक कोर्ट का प्रावधान होता परन्तु यह होना नहीं है और जब गंगा की गन्दगी कोई सरकार दूर न कर सकी तो भला सिस्टम क्या शुद्ध होगा ?

सुलभ सस्ता त्वरित न्याय ?

देश के मुख्य न्यायाधीश, राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री देश में इलेक्ट्रॉनिक पेपरलैस न्यायिक व्यवस्था लागू करने के प्रमुख पक्षधर हैं और प्रधानमंत्री तो देश में कैशलेस अर्थव्यवस्था अपनाने के लिए भरसक प्रयास कर रहे हैं और ग़रीब शोषित, पीड़ित, वंचित, दलित और किसान ये छह शब्द या वर्ग प्रधानमंत्री के हर भाषण की प्राथमिकता हैं और देश के सुदूर कोने में बैठे एक भी व्यक्ति को शिक्षा, स्वास्थ्य, रोज़गार, सुरक्षा और न्याय देने की वकालत करते-करते तीन साल भी बीत गये ।

नोटबंदी प्रधानमंत्री की भूल थी या क्रांतिकारी सफल प्रायोजन इसका प्रमाण तो यू॰पी॰ का एक पूर्व मंत्री गायत्री प्रजापति है जिसने साबित कर दिखाया कि देश में न्याय बिकता है और जिस नोटबंदी से रिश्वत भ्रष्टाचार पर लगाम कसने की बात कही गयी थी और 31 मार्च 2017 तक ग़रीब कल्याण योजना में मात्र 45 प्रतिशत पर अपना कालाधन सफ़ेद करने की स्वैच्छिक योजना भी लागू थी उसी समयांतराल में ही राजनीतिक सामाजिक क्षेत्र में ही काम कर रहे दलित हृदय सम्राट भीम राव अंबेडकर द्वारा निर्मित संविधान की शपथ खाये एक कैबिनेट रैंक के दलित राजनेता ने एक जघन्य सामाजिक अपराध करने के बाद जेल से बाहर निकलने के लिए मात्र दस करोड़ ख़र्च करके आसानी से न केवल ज़मानत ही पायी अपितु जजों का ट्रांसफ़र तक कराया गया और स्वयं हाईकोर्ट इलाहाबाद की जांच आंख्या में इस पूरे षड्यंत्र में करोड़ों रुपयों की बंदरबांट का पूरा गणित लिखा है । पूरे देश के सामने यह एक ऐसा ज्वलंत प्रकरण है जो भारत की न्यायिक व्यवस्था को ठीक ढंग से समझाता है कि कैसे नक़द धन की न्योछावर से मनोवांछित जजमेंट पाया जा सकता है और अपराध कितना भी संगीन क्यों न हो लेकिन दस करोड़ रुपये से ढका जा सकता है ? यह तो केवल एक क़िस्सा सामने आ गया लेकिन भारत में सेशन कोर्ट से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक रोजाना न जाने कितने गायत्री मनोवांछित जजमेंट पाते रहते होंगे ?

रचना रस्तोगी
वेस्टर्न कचहरी रोड, मेरठ

आपका पत्र

जुलाई 2017 'कान्ति' साप्ताहिक मासिक अंक प्राप्त हुआ । इस अंक के अंतर्गत अधिकांश आलेखों का अध्ययन करने से ज्ञात हुआ कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मानवीय मूल्यों का ह्रास में बढ़ोत्तरी होती जा रही है । घटोतरी का होने का प्रश्न नहीं होता । कैसे इनमें सुधार हो उचित ढंग से वर्गीकरण किया गया है ।

इस अंक के अंतर्गत आलेख 'महिला समस्याओं का निदान आवश्यक' (महिला जगत) रचयिता 'ज़हीर ललितपुरी का मैंने अध्ययन किया, उनके विचारों का मैं पूरातिया समर्थक हूं । पुरातन भारतीय सभ्यता व संस्कृति के इतिहास में हिन्दुस्तानी नारियों को ही लक्ष्मी का वास माना गया है ।

हिन्दुस्तानी महिला ही ममता, करुणा व समता का दिग्दर्शन कराती है । भारतीय इतिहास के पन्नों कोउलट कर देखें तो उन नारियों के त्याग, बलिदान व कार्यक्षमता से महिला समाज को नया जीवन, नयी दिशा व नयी प्रेरणा मिलती है । उदाहरण के लिए सती अनुसूया, द्रोपदी आदि सभी वर्तमान में देखें तो अलगाववादियों द्वारा कश्मीर की

प्रसिद्ध जामा मस्जिद में सुरक्षा प्रभारी श्री अयूब का मारा जाना तथा अपने देश हिन्दुस्तान के लिए शहीद हो जाना। इस पर बड़े गर्व से उसकी भतीजी ने कहा कि मैं प्रथम हिन्दुस्तानी हूं। ऐसे कई उदाहरण इस्लाम धर्म के मानने वाली नारियों से संबंधित है, जिससे अपने देश को गौरव है।

परंतु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखा जाए पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति ने अपने अर्थ उपार्जन हेतु टी॰वी॰ समाचार पत्र पत्रिका के विज्ञापनों में नारी का अश्लील घिनौना विकृत रूप दर्शाया जाता है, ऐसी परिस्थितियां जब मैं अपनी आंखों से देखता हूं कि लज्जा के मारे मेरा मस्तिष्क नीचे झुक जाता है। खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार आदि ने नारी की महत्ता को समाप्त कर दिया है। दुख इस बात का है कि दोनों पुरुष व महिला वर्ग अपने कार्यों में नैतिक दायित्व को भूला बैठे हैं। इसके कारण महिलाओं का बड़ा वर्ग यौन उत्पीड़न, भ्रूण-हत्या, दहेज हत्या, घरेलू हिंसा, तीन तलाक़, ख़ुलाअ, बहु-विवाह आदि का शिकार है।

पाश्चात्य सभ्यता व संस्कृति ने नारी के सम्मान व चरित्र को चोट पहुंचाई है। अनैतिकता का प्रदूषण घर-घर में बढ़ता जा रहा है। संयुक्त परिवार टूटते जा रहे हैं। विज्ञापन, टी॰वी॰ व मोबाइल संस्कृति, सभ्यता व संस्कृतिको विकृत करने की साज़िश है।

इस संक्रमण काल में नारी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। शारीरिक सौंदर्य की अपेक्षा मानसिक सौंदर्य को अधिक महत्व देना होगा। प्रदर्शन व आडम्बर के जाल को काट कर जीवनशैली में सादगी व विनम्रता लानी होगी। प्रत्येक को आत्म विश्वास, आत्म निर्भरता, आत्म प्रेरणा, आत्म नियंत्रणा व आत्मानुभूति से परिपूर्ण होना होगा। नारी कुशल गृहणी, आदर्श पत्नी व करुणामयी माता की भूमिका उचित तरीक़े से निभाये व जीवन मूल्यों को प्रेरित करे। अंग्रेज़ी माध्यम के बढ़ी हुई विद्यालयों की बाढ़ को रोकना होगा।

इसी उपरोक्त पाठक-पत्र के साथ मैं लघु रचना शीर्षक 'नारी का अपमान' भिजवा रहा हूं। कृपया आपसे निवेदन है कि इसे भी पत्रिका में प्रकाशित करवाने का कष्ट करें।

रामस्वरूप झैवर
9-10 शास्त्रीनगर विस्तार,
भीलवाड़ा (राज॰)

क़ुरआन ज्योति

(पृष्ठ 5 का शेष)

क्या इनमें से किसी की नज़र भी इस पूरे क्षेत्र पर फैलती है जिसमें मानव-जीवन से ताल्लुक़ रखने वाली समस्याएं फैली हुई हैं ? क्या इनमें से कोई भी उन कमज़ोरियों से, उन पक्षपातों से, उन निजी या गिरोही रुचियों से, उन स्वार्थों और कामनाओं से और उन रुझानों और झुकावों से उच्च है जो इन्सानी समाज के लिए न्यायपूर्ण क़ानूनों के बनाने में रुकावट बनते हैं। अगर उत्तर नहीं में है, और स्पष्ट है कि कोई सही दिमाग़ वाला आदमी इन प्रश्नों का उत्तर हां में नहीं दे सकता, तो आख़िर ये लोग 'सत्य-मार्गदर्शन' का स्रोत कैसे हो सकते हैं ?

इसी कारण क़ुरआन यह प्रश्न करता है कि लोगो ! तुम्हारे इन धार्मिक उपास्यों और सांस्कृतिक उपास्यों में कोई ऐसा भी है जो सीधे रास्ते की ओर तुम्हारा मार्गदर्शन करने वाला हो ? ऊपर के प्रश्नों के साथ मिलकर यह अन्तिम प्रश्न दीन व मज़हब (धर्म) के पूरे मसले का फ़ैसला कर देता है। इन्सान की सारी ज़रूरतें दो ही प्रकार की हैं–

एक प्रकार की ज़रूरतें ये हैं कि कोई उसका पालनहार हो, कोई शरण देने वाला हो, कोई दुआओं का सुनने वाला और ज़रूरतों का पूरा करने वाला हो जिसका स्थायी सहारा इस कारण-जगत के कमज़ोर सहारों के बीच रहते हुए वह थम सके। अतएव ऊपर के प्रश्नों ने फ़ैसला कर दिया कि इस ज़रूरत को पूरा करने वाला अल्लाह के सिवा कोई नहीं है।

दूसरे प्रकार की ज़रूरतें ये हैं कि कोई ऐसा रास्ता दिखाने वाला हो जो दुनिया में ज़िन्दगी बिताने के सही सिद्धांत बताए और ज़िन्दगी के लिए जिसके दिए हुए नियमों का पालन पूरे भरोसे और संतोष के साथ किया जा सके। सो इस अन्तिम प्रश्न ने उसका निर्णय भी कर दिया कि वह भी केवल अल्लाह ही है। इसके बाद दुराग्रह और हठधर्मी के सिवा कोई चीज़ बाक़ी नहीं रह जाती जिसके कारण इन्सान शिर्क पर आधारित धर्मों और धर्मविहीन सांस्कृतिक, नैतिक चरित्र व राजनीतिक सिद्धांतों से चिपटा रहे।

قال اللہ تعالیٰ

احل اللہ البیع وحرم الربوا (القرآن)

اللہ تعالیٰ نے تجارت کو حلال کیا ہے اور سود کو حرام فرمایا۔

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Eat Halal Earn Halal

HALAL
INVESTMENT & FINANCE

Best Concept For Bright Future & Best Economic Conditions

Nihal Co-Operative Credit Society Ltd.

Eat Halal Earn Halal
INTEREST FREE INVESTMENT & FINANCE

Regd No. TNA/(TNA)/RSR/1029 Year : 1998/99
Regd. Office : 3rd Floor, Nihal House,
N. H. School Road, Opp. Ideal Tower, Mira Road (E)
Mumbai (Maharashtra)

Chairman : Janab Imammuddin Nihaluddin Shaikh

Contact Us : 9022665544, 9869641648

पैग़म्बरों पर ईमान

■ सैयद अबुल आला मौदूदी

"अल्लाह किसी प्राणी पर उसकी ताक़त से बढ़कर ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं डालता ।" (क़ुरआन, 2:286)

इस आयत के मुताबिक़ हर शख़्स पर उसके ज्ञान और सोच- विचार की गहराई तक ही बोझ डाला गया है । अगर तरबियत, माहौल और ज़ाती क़ुव्वत शर्तों के पूरा करने में बाधा हैं, तो इस कमी की ज़िम्मेदारी उस जानने की चाहत रखने वाला पर क्यों आए? तरीक़े के इन्तिख़ाब में उसने अपनी योग्यता और लियाक़त के मुताबिक़ सूझ-बूझ और अक़्ल से काम लिया है और इसी हद तक उस पर बोझ डाला गया था । उसको आरोपी और अज़ाब का हक़दार ठहराना ज़ाहिर में एक ऐसा बोझ उसपर डालना है जिसको सिहारने की ताक़त उसमें न हो ।

अल्लाह तआला ने इन्सान को यह तकलीफ़ ही नहीं दी है कि वह अपनी महदूद क़ुव्वतों से उसकी पहचान हासिल कर सके और उसकी बन्दगी का सही तरीक़ा पता लगाने की कोशिश करे । जिस ख़ुदा ने इन्सान को बनाया है वह जानता है कि इन्सान के इल्म की गहराई और सोच-समझ कहां तक है । उसको मालूम है कि आम इन्सानों के सोचने-समझने की शक्ति और इल्म हासिल कर पाने की योग्यता और क्षमता इतनी है ही नहीं कि वे उस बुलन्द मक़ाम तक उड़ान भर सकें, जहां उस जैसी बुद्धि की सीमा से परे हस्ती की पहचान हासिल होती है ।

एक साहब कहते हैं कि "क़ुरआन मजीद कोई मुसलसल लिखी किताब नहीं है जिसमें तरतीब के साथ हर मसले को एक-एक जगह तफ़सील के साथ बयान किया गया हो, बल्कि यह संग्रह है उन आयतों का जो तेईस साल की लंबी मुद्दत में मौक़ा और ज़रूरत के लिहाज़ से समय-समय पर उतरती रही हैं ।" मगर फिर भी कहा जाता है कि "सूरा-3 आले- इमरान को छठे रुकू से बारहवें रुकू तक मुसलसल पढ़ा जाए, ताकि बेमेल बातों का मामूली धब्बा तक न रहे ।" सवाल भेजने से पहले भी पढ़ा था और दोबारा भी उन सब आयतों को पढ़ा है, मगर मुश्किल दूर नहीं होती । किताब वालों के झगड़ों, ज़िद, शिर्क वग़ैरह को देखकर एक संतुलित रवैये की तरफ़ दावत दी गयी थी कि–

"आओ एक ऐसी बात की तरफ़, जो हमारे और तुम्हारे बीच एक समान हैं ।" (क़ुरआन, 3:164)

इन बातों और इस दावत का क्या मतलब और मक़सद था ? ज़ाहिर में तो यही है कि तुम अगर अपनी सच्ची तालीम पर अमल करोगे और शिर्क छोड़ दोगे तो अल्लाह की तरफ़ दावत देने के साझे काम में तुम और हम बराबर होंगे । दिल नहीं मानता कि ये शब्द यूं ही रस्मी तौर पर समय को टालने या एतिराज़ को दूर करने के लिए कहे गए और हक़ीक़त में अमल में साझेदारी और दावत अपेक्षित न था ।

सवाल लिखते समय ज़ेहन में किताब वाले ही थे और बयान की गयी आयतें इसी लिए गवाही के तौर पर पेश की गयी थीं । जहां कहीं किताब वालों के उस गिरोह की तरफ़ बात की गयी है जो दियानतदार थे, ख़ुदातरस थे, अमानतदार थे, रात के इबादतगुज़ार थे, कुछ टीकाकारों ने इसकी वही व्याख्या की है जिसकी तरफ़ आप गए हैं कि यह वह गिरोह है जो मुसलमान हो चुका था जैसे कि अब्दुल्लाह-बिन-सलाम, सअ़लबा, नसारी और नजरान के अनसारी वग़ैरह, मगर अफ़सोस कि इससे तसल्ली नहीं होती और न क़ुरआन के अलफ़ाज़ इसका साथ देते हैं । मिसाल के तौर पर–

"ये किताब वाले ईमान लाते तो इन्हीं के हक़ में बेहतर था । हालांकि इनमें कुछ लोग ईमान वाले भी पाए जाते हैं, मगर इनके अधिकतर लोग नाफ़रमान हैं ।"

(क़ुरआन, 3:110)

इस आयत के अनुवाद में आप कहतें हैं कि इनमें से थोड़े ईमान लाए और अधिकतर नाफ़रमान हैं । यहां ईमान वालों और नाफ़रमानों दोनों का साथ-साथ ज़िक्र किया गया है । मगर दूसरी आयत अधिक वाज़ेह है जिसमें ऐसे स्पष्टीकरण की गुंजाइश ही नहीं और जिसका अनुवाद सवाल करने वाले ने नहीं किया । यानी–

"मगर सारे किताब वाले एक समान नहीं हैं, उनमें कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो सीधे रास्ते पर क़ायम हैं, और रातों को अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और उसके आगे सजदे करते हैं, और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, नेकी का हुक्म देते हैं, बुराइयों से रोकते हैं और भलाई के कामों में सरगर्म रहते हैं । ये सज्जन लोग हैं । और जो नेकी भी ये करेंगे, उसकी नाक़द्री न की जाएगी, अल्लाह परहेज़गार लोगों को ख़ूब जानता है ।"

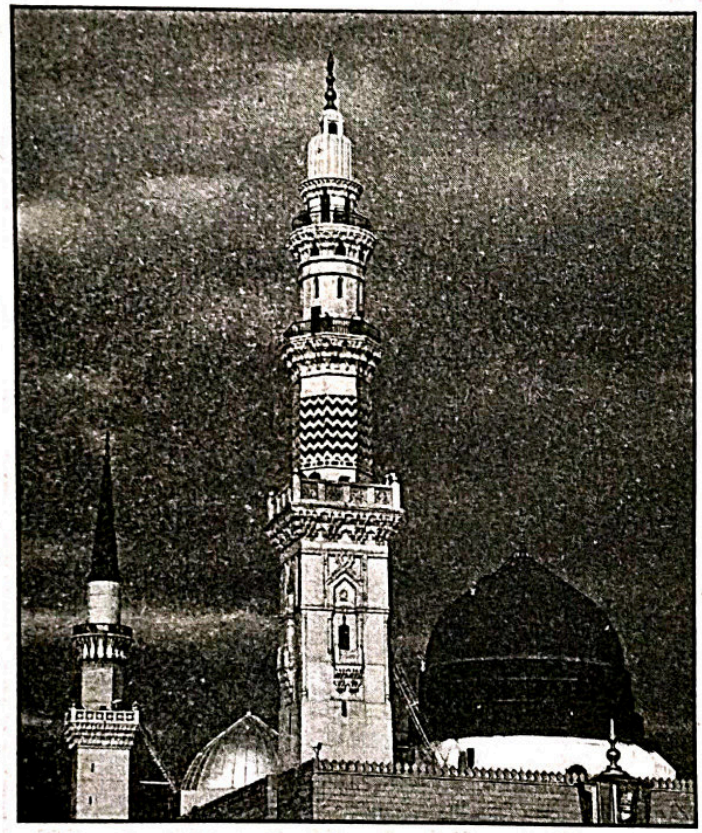

(क़ुरआन, 3:113-115)

इसका समर्थन क़ुरआन मजीद की उस आयत से भी होता है जिसमें ईसाइयों की प्रशंसा है कि उनमें दीनदार गिरोह है और वे घमंडी नहीं हैं । अगर बयान की गयी आयत में वही लोग मुराद होते जो सवाले करने वाले ले रहे हैं तो क़ुरआन की सुन्दर वर्णन-शैली को नज़र में रखते हुए अलफ़ाज मुख़्तलिफ़ होते–

"ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह से डरो और उसके पैग़म्बर (सल्ल॰) पर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हें अपनी रहमत का दोहरा हिस्सा प्रदान करेगा ।"

(क़ुरआन, 57:28)

इस आयत के बारे में सवाल करने वाले कहते हैं, "इसमें उन तमाम लोगों को जो पिछले नबियों पर ईमान ला चुके हैं, दो चीज़ों की दावत दी गयी है । एक यह कि ख़ुदा से डरें और परहेज़गारी अपनाएं, दूसरे यह कि ख़ुदा के पैग़म्बर यानी हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर ईमान लाएं ।" फिर कहा गया कि अगर तुम ये दोनों बातें अपना लोगे तो तुमको ख़ुदा की रहमत के दो हिस्से मिलेंगे यानी एक हिस्सा पिछले पैग़म्बरों पर ईमान और परहेज़गारी के बदले में और दूसरा हिस्सा हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर ईमान लाने के बदले में ।

इससे मालूम होता है कि जो लोग तक़वा और परहेज़गारी के साथ पिछले नबियों पर ईमान रखते हैं और उनकी दी हुई तालीम पर ठीक-ठीक अमल भी करते हैं, उनको भी ख़ुदा की रहमत का एक हिस्सा मिलेगा । इसका समर्थन दूसरी आयतों से भी होता है । मिसाल के तौर पर–

"जो लोग किताब की पाबन्दी करते हैं और जिन्होंने नमाज़ क़ायम कर रखी है, निस्सन्देह ऐसे नेक किरदार लोगों का अज्र हम बरबाद नहीं करेंगे ।" (क़ुरआन, 7:170)

मगर इन सब आयतों को मिलाकर जो नतीजा सवाल करने वाले ने आख़िर मज़मून (लेख) में निकाला है वह हैरतअंगेज है । यानी "उनको अल्लाह की रहमत का सिर्फ़ इतना हिस्सा मिलेगा कि उनकी सज़ा में कमी हो जाएगी ।" (यह तो वही मिसाल हुई कि–)

''तेली भी किया और रूखा भी खाया ।''

कम इल्मी की वजह से ये शक और सन्देह सूझे हैं । अगर सवाल करने वाले और दूसरे प्रतिष्ठित आलिम और अधिक ध्यान देकर इन सन्देहों को दूर करेंगे तो अल्लाह ने चाहा लोगों के नज़दीक़ शुक्रिया के पात्र और अल्लाह के नज़दीक़ अच्छे बदले के हक़दार होंगे ।

आपने जो ऐतिराज़ किए हैं, उन सबके जवाब संक्षेप में

ये हैं–

1. आपकी दलीलों को अगर सही मान लिया जाए तो इससे न सिर्फ़ पैग़म्बरी का इन्कार करने वालों को लाज़िमी तौर पर हक़ पर मानना पड़ेगा, बल्कि हर आदमी के पंथ को उसकी हद तक सही मान लेना लाज़िम आएगा, चाहे वह बहुदेवादी हो या नास्तिक या कोई और, क्योंकि जब हर आदमी अपने व्यापक ज्ञान और सोच की हद तक समर्थ है और हक़ (सत्य) की तलाश में ग़लती या कोताही की ज़िम्मेदारी उस पर कुछ नहीं है, तो जिस तरह वह एकेश्वरवादी सवाल करने वाला और अज़ाब का हक़दार नहीं है जो सोच-विचार के बावजूद पैग़म्बरी में नेक नीयती के साथ सन्देह रखता है ।

उसी तरह वह बहुदेववादी भी किसी सज़ा का हक़दार नहीं होना चाहिए जो नेक नीयती के साथ किसी पत्थर या पेड़ या जानवर को ख़ुदा समझता है और वह नास्तिक भी किसी सज़ा का पात्र नहीं होना चाहिए जो सिरे से ख़ुदा ही के वुजूद में नेक नीयती के साथ सन्देह रखता है । इसलिए कि ये सब भी तो अपनी सोच-समझ और व्यापक ज्ञान तक ही समर्थ हैं और इनके ज्ञान और सोच-समझ की पहुंच भी तो वहीं तक है, जहां तक ये पहुंचे हैं ।

इस क़ायदे को अगर मान लिया जाए तो ईमान वाला, ख़ुदा का इन्कारी और बहुदेववादी का मतभेद सरासर बकवास क़रार पाएगा और दीन के प्रचार-प्रसार के लिए सिरे से कोई अक़्ली बुनियाद ही बाक़ी न रहेगी, क्योंकि दीन जिन बातों की तरफ़ बुलाता है उनको अगर कोई आदमी अपनी सोच-समझ की कोताही की वजह से मगर नेक नीयती के साथ रद्द कर दे, तब भी वह हक़ पर ही रहेगा और अपने इस काम के लिए किसी आरोप या किसी सज़ा का हक़दार न होगा ।

आप इस क़ायदे की बुनियाद इस आयत पर रखते हैं–

"अल्लाह किसी जानदार पर उसकी ताक़त से बढ़कर ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं डालता ।" (क़ुरआन, 2:286)

लेकिन मैं कहता हूं कि अगर इसका वही मतलब है जो आपने सवाल करने वाले ने समझा है तो यह आयत क़ुरआन मजीद की पूरी तालीम के ख़िलाफ़ है और इस सूरत में यह मानना ज़रूरी हो जाता है कि क़ुरआन ने दो बिल्कुल विरोधाभासी उसूल पेश किए हैं । एक तरफ़ तो वह इन्सान को ख़ुदा और उसके फ़रिश्तों, किताबों, पैग़म्बरों और आख़िरत पर ईमान लाने की दावत देता है और कहता है कि अगर तुम इन चीज़ों को न मानोगे तो हक़ के इन्कारी होगे और तुमको आख़िरत में सज़ा दी जाएगी ।

दूसरी तरफ़ वही क़ुरआन (आपके गुमान के मुताबिक़) कहता है कि तुम सिर्फ़ अपने इल्म-ज्ञान और सोच-समझ तक समर्थ हो, अगर तुम्हारी सोच-समझ की पहुंच इन पांचों ईमान वाली चीज़ों, या इनमें से किसी एक तक न हो, और इस सोच-समझ के नहीं पहुंचने की वजह से तुम एक या सबको मानने से इन्कार भी कर दो और इनके उलट कोई दूसरा अक़ीदा रखो, तब भी तुम पर कोई ज़िम्मेदारी नहीं है और तुम किसी आरोप या सज़ा के हक़दार नहीं हो । यक़ीन मानिए कि अगर क़ुरआन मजीद की तालीम में सचमुच इतना स्पष्ट विरोधाभास मौजूद होता तो कोई अक़्ल वाला इन्सान इसको ख़ुदा की किताब न मानता ।

अल्लाह तआला ने इन्सान को यह तकलीफ़ ही नहीं दी है कि वह अपनी महदूद क़ुव्वतों से उसकी पहचान हासिल कर सके और उसकी बन्दगी का सही तरीक़ा पता लगाने की कोशिश करे । जिस ख़ुदा ने इन्सान को बनाया है वह जानता है कि इन्सान के इल्म की गहराई और सोच-समझ कहां तक है । उसको मालूम है कि आम इन्सानों के सोचने-समझने की शक्ति और इल्म हासिल कर पाने की योग्यता और क्षमता इतनी है ही नहीं कि वे उस बुलन्द मक़ाम तक उड़ान भर सकें, जहां उस जैसी बुद्धि की सीमा से परे हस्ती की पहचान हासिल होती है ।

उसको यह भी मालूम है कि आम इन्सान अपनी पैदाइशी कमज़ोरियों और माहौल के प्रभावों से इस क़द्र पाक-साफ़ और बरी नहीं हो सकते कि सिर्फ़ अपनी अक़्ल के इस्तेमाल से सारे जहान के ख़ुदा के लिए अपनी बन्दगी को ख़ालिस कर दें । इसलिए उसने इनकी व्यापकता और ताक़त से ज़्यादा इनपर तकलीफ़ का भार डाला ही नहीं । उसने तो ख़ुद इन्सानों ही में से कुछ ख़ास आदमियों को चुन करके उन्हें सीधे रास्ते का इल्म दिया और उनको इस बात पर नियुक्त किया कि अपनी मानव-जाति को उसकी निशानियां खोल-खोलकर बताएं और उसकी बुद्धि और विवेक के अनुसार उन्हें तालीम दें–

"ऐ आदम की सन्तान, याद रखो ! अगर तुम्हारे पास ख़ुद तुम ही में से ऐसे रसूल आएं जो तुम्हें मेरी आयतें सुना रहे हों तो जो कोई नाफ़रमानी से बचेगा और अपने रवैए का

सुधार कर लेगा, उसके लिए किसी डर और रंज का मौक़ा नहीं है ।" (क़ुरआन, 7:35)

फिर तकलीफ़ जो कुछ भी दी गयी है वह इस बात की है कि इन्सान ख़ुदा के भेजे हुए पैग़म्बरों की जीवनी और उनकी तालीम पर ग़ौर करे । और जब देखे कि वे जिस रास्ते की तरफ़ बुला रहे हैं उसमें उनकी कोई ज़ाती ग़रज़ नहीं है, न वे झूठ बोलने वाले और धोखा देने वाले लोग हैं, न किसी ऐसी बात की तरफ़ बुला रहे हैं जो ईश-भय, परहेज़गारी और भलाई के उलट हो, तो उनपर ईमान लाए और उनकी पैरवी करे ।

इस तकलीफ़ को उनके बस से बाहर का क़ाम नहीं कहा जा सकता । अगर हिदायत को इन्सान के इल्म और अक़्ल से इतना क़रीब कर देने के बाद भी कोई आदमी नेक नीयती या बदनीयती के साथ इसको क़बूल नहीं करता और उसके ख़िलाफ़ चलता है तो उसको अपनी इस कोताही का अंजाम ज़रूर देखना पड़ेगा ।

आप फिर पलट कर कहेंगे कि अगर कोई आदमी अपने व्यापक ज्ञान और सोच-समझ की हद तक पैग़म्बरों की जीवनी और उनकी तालीम पर ग़ौर करने के बावजूद उनकी पैग़म्बरी पर मुत्मइन न हो सके तो इस सोच-समझ की कोताही और मामले की तह तक न पहुंचने की उसपर कोई ज़िम्मेदारी नहीं और उसको इल्ज़ाम नहीं देना चाहिए और न ही उसे अज़ाब का हक़दार होना चाहिए ।

मैं अर्ज़ करूंगा कि जब कोई चीज़ इन्सान के इन्सान होने की हैसियत की हद तक अक़्ल और समझ से बाहर हों और कोई इन्सान उस तक न पहुंचे तो अलबत्ता वह विवश है, क्योंकि उस चीज़ की वह शान ही नहीं है कि इन्सान उस तक पहुंच सके । लेकिन अगर कोई चीज़ उस हद के अन्दर हो और उसकी शान यह हो कि इन्सान-इन्सान होने की हैसियत से अपनी इन्सानी क़ुव्वतों के साथ उस हद तक पहुंच सकता हो, और फिर कोई आदमी उस तक न पहुंचे तो यह दो हाल से ख़ाली न होगा, या तो इस पहुंच न बना पाने में उसके मन की इच्छाओं का दख़ल होगा, या यह न पहुंच पाना विशुद्ध रूप में उसकी समझ-बूझ की कोताही पर आधारित होगी ।

पहली सूरत में तो उसके मुजरिम होने में किसी को सन्देह नहीं हो सकता । रही दूसरी सूरत, तो आपको चाहे इस कम अक़्ल इन्सान पर कितना ही रहम आए, बहरहाल इससे आप इन्कार नहीं कर सकते कि वह तो अपनी समझ-बूझ की कोताही से जिस नतीजे पर पहुंचा है, वह हक़ नहीं है और यह किसी तरह भी इन्साफ़ की बात नहीं कि जो हक़ तक नहीं पहुंचा है, वह अंजाम के एतिबार से उन लोगों के बराबर हो जो हक़ तक पहुंच गये हैं ।

इस बात से किसी को इन्कार नहीं है कि हर आदमी जो कुछ सोचे और समझेगा अपने ज्ञान और सोच-समझ की हद तक ही सोचे और समझेगा । उस हद से आगे जाना उसके बस की बात नहीं है । मगर सवाल यह है कि क्या हक़ और सच्चाई हर आदमी की व्यक्तिगत समझ-बूझ के अनुसार बदलने वाली चीज़ है, या एक निश्चित चीज़ है चाहे कोई आदमी उसे समझे या न समझे ?

अगर आप पहली बात को मानते हैं तो मानो आप यह कहते हैं कि जैसे 30 और 50 का योग कोई ख़ास संख्या नहीं है, बल्कि हर आदमी अपनी हद तक सोच- विचार करने के बाद नेक नीयती के साथ जिस संख्या पर भी पहुंच जाए वह सही योग है, चाहे वह 79 हो या 81 या 80, मगर यह ऐसी अनुचित बात है कि मुझे उम्मीद नहीं कि आप इस बात को मानें । इसलिए आपको आख़िरकार दूसरी बात माननी पड़ेगी, यानी यह कि 30 और 50 का योग बहरहाल 80 है, चाहे किसी के ज्ञान और सोच-विचार की हद वहां तक पहुंचे या न पहुंचे । अब यह ज़ाहिर है कि जो आदमी 30 और 50 के योग को 79 या 81 या कुछ और कहता है, चाहे समझ की कोताही के आधार पर नेक नीयती के साथ ऐसा कहे या जान-बूझकर बदनियती के साथ, दोनों सूरतों में उसका हिसाब ग़लत होगा, उसका हिसाबी काग़ज़ उसकी ग़लती की वजह से आख़िर तक ग़लत हो जाएगा, और उसकी सारी मेहनत जो उसने हिसाबी काग़ज़ तैयार करने में लगाई है सब बेकार हो जाएगी ।

नेक नीयती और बदनीयती का कोई दख़ल हिसाब के सही होने या सही न होने में नहीं है, न यह हो सकता है कि नेक नीयती के साथ ग़लत हिसाब लगाने वाले को उस आदमी के बराबर कर दिया जाए जिसने सही हिसाब लगाया है । हां, इतना ज़रूर होगा कि नेक नीयत मूर्ख को इतनी सज़ा दी जाएगी जितनी बदनीयत नटखट को दी जाएगी ।

2. क़ुरआन मजीद की तरतीब के बारे में जो कुछ कहा गया था उससे यह कहना मक़सद न था कि क़ुरआनी आयतों में कोई मेल नहीं है, बल्कि इस बात की तरफ़ इशारा

मक़सद था कि क़ुरआन मजीद में एक-एक मसले पर निरंतरता के साथ एक जगह बहस नहीं की गयी है, बल्कि जहां जैसा मौक़ा पेश आया है मसलों के पहलुओं में से एक पहलू या कुछ पहलुओं को बयान कर दिया गया है, इसलिए क़ुरआन मजीद के ध्यान से पढ़ने वाले को लाज़िम है कि जब वह किसी मसले पर कोई राय क़ायम करना चाहे तो मजमूई तौर पर क़ुरआन की पूरी तालीम नज़र के सामने रखे । नहीं तो अगर वह सिर्फ़ एक आयत या कुछ आयतों पर निर्भर रहेगा और दूसरी आयतों को जो उस मसले से जुड़ाव रखती हैं, नज़रअन्दाज़ कर देगा, तो सही राय क़ायम न कर सकेगा ।

3. हैरत है कि आपने सूरा-3 आले-इमरान को छठे रुकू से लेकर बारहवें रुकू तक कई बार पढ़ा और फिर भी मुश्किल दूर न हुई । जबकि छठे रुकू के शुरू ही में आप देख सकते थे कि जो लोग हज़रत इबराहीम, याकूब, मूसा (अलैहि.) और बनी-इस्राईल के दूसरे पैग़म्बरों (अलैहि.) पर ईमान रखते थे, उनको इस आधार पर दुनिया और आख़िरत में सख़्त अज़ाब की धमकी दी गयी है कि वे हज़रत ईसा (अलैहि.) पर ईमान न लाए थे । विचार कीजिए कि ये लोग बिल्कुल पूरी तरह पैग़म्बरी के इन्कारी न थे, सिर्फ़ एक पैग़म्बर की पैग़म्बरी का दावा सुनकर उन्होंने अपनी व्यापक इल्म और फ़िक्र तक विचार किया और जब उनका दिल उसपर न टिका तो उन्होंने मानने से इन्कार कर दिया । मगर इसपर कहा गया–

"अल्लाह किसी जान पर उसकी सहनशक्ति से बढ़कर ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं डालता ।" (क़ुरआन, 2:286)

इसका वह क़ायदा जो आप अपने विचार से पेश करते हैं अल्लाह तआला ने जारी न किया बल्कि कहा–

"उन्हें दुनिया और आख़िरत में कड़ी सज़ा दूंगा ।"
(क़ुरआन, 3:56)

न सिर्फ़ इस स्थान पर बल्कि क़ुरआन मजीद में किसी दूसरे स्थान पर भी कहीं यह नहीं कहा गया कि इस अज़ाब की धमकी से वे लोग अलग हैं जो अगरचे हज़रत ईसा (अलैहि.) की पैग़म्बरी में नेक नीयती के साथ शक रखते हैं मगर शिर्क (बहुदेववाद) से बचते और तौहीद और तक़वा के तरीक़े पर क़ायम हैं ।

4. उलझन की बड़ी वजह वह आयत है जिसमें किताब वालों को एक 'समान' कलिमे की तरफ़ बुलाया गया है, और उसमें मुहम्मद (सल्ल.) की पैग़म्बरी पर ईमान लाने का ज़िक्र नहीं है । इससे पहले कि आयत पर बहस की जाए, आयत के अस्ल शब्द सुन लीजिए–

"ऐ नबी (सल्ल.) कहो : ऐ किताब वालो, आओ एक ऐसी बात की तरफ़ जो हमारे और तुम्हारे बीच एक 'समान' है, यह कि हम अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करें, उसके साथ किसी को साझी न ठहराएं और हम में से कोई अल्लाह के सिवा किसी को अपना रब न बना लें । इस दावत को क़बूल करने से अगर वे मुंह मोड़ें तो साफ़ के दो कि गवाह रहो हम तो मुस्लिम (सिर्फ़ ख़ुदा की बन्दगी और फ़रमांबरदारी करने वाले) हैं ।" (क़ुरआन, 3:64)

इस आयत में कौन-सा शब्द है जिससे आपने ये मानी (अर्थ) निकाले कि इस कलाम से मक़सद यहूदियों और ईसाइयों को अल्लाह की तरफ़ दावत देने का मतलब मुसलमानों के साथ काम में शामिल होने की दावत देना था? और यह कहां कहा गया है कि अगर तुम अपनी सच्ची तालीम पर अमल करोगे और शिर्क को छोड़ दोगे तो अल्लाह की तरफ़ दावत देने के साझा काम में हम और तुम एक समान होंगे ? और इस मानी और मतलब की तरफ़ कौन-सा इशारा है कि मुहम्मद (सल्ल.) की पैग़म्बरी पर ईमान न लानेवाले ईमान लाने वालों की तरह हक़ पर हैं और उनके बराबर दर्जा रखते हैं ।

अस्ल बात यह है कि जब अल्लाह के नबी (सल्ल.) ने किताब वालों (यहूदी-ईसाई) के सामने अपनी पैग़म्बरी का दावा पेश किया और वे आप (सल्ल.) से झगड़ा करने लगे (जैसा कि ऊपर ही बयान किया गया है) तो अल्लाह तआला ने अपने नबी (सल्ल.) को हुक्म दिया कि तुम उनको इस बात की तरफ़ दावत दो जो तुम्हारे और उनके बीच मुश्तरक (साझा) है यानी यह कि–

- अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो ।
- अल्लाह के साथ किसी को साझीदार न बनाओ ।
- अल्लाह के सिवा किसी को अपना रब और अपना ख़ुदा और वास्तविक शासक और हाकिम न बनाओ ।

ये तीनों बातें वे थीं जो मूसा और ईसा (अलैहि.) की अस्ल शिक्षाओं में मौजूद थीं, मगर यहूदी और ईसाई इनको छोड़ बैठे थे । ईसाइयों ने हज़रत ईसा और मरयम (अलैहि.) को माबूद (पूज्य-प्रभु) बना लिया था । यहूदी और ईसाई दोनों अल्लाह के साथ दूसरों को साझी ठहराने लगे थे ।

"यहूदी कहते हैं कि उज़ैर अल्लाह को बेटा है और ईसाई कहते हैं कि मसीह (ईसा) अल्लाह का बेटा है ।"

(क़ुरआन, 9:30)

यहूदी और ईसाई दोनों ने अपने आलिमों, पेशवाओं और धर्म गुरुओं (पदाधिकारियों) को ख़ुदा बना रखा था ।

"उन्होंने अपने आलिमों और दरवेशों को अल्लाह के सिवा अपना रब बना लिया है ।" (क़ुरआन, 9:31)

चूंकि यहूदियों और ईसाइयों की गुमराही की शुरुआत इसी वजह से हुई थी कि उन्होंने मूसा और ईसा (अलैहि.) की मूल शिक्षाओं को छोड़ दिया था, इसलिए हुक्म हुआ कि पहले इनको उस चीज़ की तरफ़ बुलाओ जो इनके अपने माने हुए मज़हब की तालीम भी है और तुम्हारे दीन की बुनियाद भी । इस दावत से दो फ़ायदे अपेक्षित हैं ।

एक यह कि किताब वालों में से जो इतना हक़पसन्द और सच्चे- सरल स्वभाव का होगा कि अपने मज़हब के सदियों के विरासत में मिले हुए झूठे अक़ीदों को छोड़ देने पर आमादा हो जाएगा, उसके लिए मुहम्मद (सल्ल.) की सच्चाई तस्लीम करने में कोई मुश्किल रुकावट न रहेगी । दूसरे यह कि इस एक समान वाले कलिमे की दावत से यहूदियों और ईसाइयों दोनों को मालूम हो जाएगा कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) भी उस चीज़ की तरफ़ बुलाने वाले हैं जिसकी तरफ़ ईसा और मूसा (अलैहि.) और पैग़म्बर (अलैहि.) बुलाते थे । फिर उनकी पुष्टि और समर्थन करने वाले के लिए इनकी झुठलाने का कौन-सा उचित कारण है ?

यह इस आयत का साफ़ मतलब और अर्थ है । इससे वह बात कहां निकलती है कि किताब वालों से मुहम्मद (सल्ल.) पर ईमान लाने की मांग न थी ? और इससे यह बात कैसे निकाली जा सकती है कि अगर किताब वाले सिर्फ़ अपनी सच्ची तालीम पर अमल करें और शिर्क छोड़ दें तो वे मुहम्मद (सल्ल.) को झुठलाने या आप (सल्ल.) की पैग़म्बरी में शक रखने के बावजूद हिदायत पाए हुए और नजात के हक़दार होंगे । क्या यह आयत उस आयत को रद्द करती है जिसमें तमाम इन्सानों को हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) पर ईमान लाने की दावत दी गयी है ?

"ऐ मुहम्मद (सल्ल.) के दो कि ऐ इन्सानो ! मैं तुम सबकी तरफ़ उस ख़ुदा का पैग़म्बर हूं ।"

(क़ुरआन, 7:158)

"तो फिर ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके भेजे हुए उम्मी नबी पर ।" (क़ुरआन, 7:158)

"उम्मीद है कि तुम सीधा रास्ता पा लोगे ।"

(क़ुरआन, 7:158)

और क्या यह आयत उस आयत को भी निरस्त करती है जिसमें कहा गया है कि जो इस नबी की पैग़म्बरी और इसके लाए हुए पैग़ाम को न मानेगा वह घाटे में रहेगा–

"और जो उसके साथ इन्कार का रवैया अपनाएं, वही अस्ल में नुक़सान उठाने वाले हैं ।" (क़ुरआन, 2:121)

क्या क़ुरआन मजीद में कोई ऐसी मिसाल मिलती है कि किसी क़ौम के पास पैग़म्बर भेजा जाए और वह उसको न माने और फिर भी हिदायत पाई हुई और नजात के हक़दार ही रहे ? अगर ख़ुदा की तरफ़ से आए हुए पैग़म्बर को मानना और न मानना दोनों बराबर हों और न मानने की सूरत में भी उसी तरह नजात पा सके जिस तरह मानने की सूरत में होती है, तो पैग़म्बरों के भेजने से बढ़कर बेकार और व्यर्थ काम और क्या होगा ? ज़ाहिरी तौर पर तो ऐसा ख़याल करने में बड़ी रवादारी नज़र आती है । मगर हक़ीक़त में ग़ौर कीजिए तो मालूम होता है कि ख़ुदा की तरफ़ इस बात को मंसूब करना ख़ुदा को (अल्लाह माफ़ करे) नादान साबित करना है ।

5. प्रश्न के तहत सवाल करने वाले ने जो कुछ कहा है उसके जवाब में वह बात काफ़ी है जो मैं अभी बयान कर चुका हूं । मगर जिन दो आयतों की तरफ़ उसने इशारा किया है उनकी कुछ और व्याख्या कर देनी ज़रूरी है ।

"ये किताब वाले ईमान लाते ।" (क़ुरआन, 3:110)

आयत के अरबी शब्द 'आ-म-न' से मुराद हज़रत मुहम्मद (सल्ल.) पर ईमान लाने के सिवा और क्या हो सकता है? इस आयत में जिनका ज़िक्र 'अहले-किताब' के शब्द से किया गया है, उनको अहले-किताब (किताब वाले) होना ही इस बात की दलील है कि वे अल्लाह पर, अपनी किताब पर, अपने रसूल या पैग़म्बरों पर, फ़रिश्तों पर और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं । अब आप ही बताएं

पाठकों और विज्ञापनदाताओं से निवेदन

चेक और ड्राफ्ट केवल
'कान्ति' के नाम से बनवाएं,
'मासिक कान्ति' के नाम से नहीं ।

–मैनेजर

कि और किस पर ईमान लाने की कसर बाक़ी रह गयी है?

इसी तरह—"अगरचे उनमें कुछ लोग ईमान वाले भी पाए जाते हैं ।" (क़ुरआन, 3:110)

इस आयत में आया है कि अहले-किताब में से कुछ लोगों को जब ईमान वाला कहा गया है तो इसका मतलब भी इसके अलावा और क्या हो सकता है कि ये ईमान वाले वे अहले-किताब हैं जो हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) पर ईमान लाए थे ? और यह मालूम है कि वे कुछ ही थे । उनमें से अक्सर ईमान नहीं लाए और उन्हें नाफ़रमान कहा गया है । मैंने तर्जमे में अतीत और वर्तमान का फ़र्क़ सिर्फ़ मतलब वाज़ेह करने के लिए कर दिया था । वरना अगर आयत का तर्जमा इस तरह किया जाए कि "उनमें से कुछ ईमान वाले हैं और अक्सर नाफ़रमान" तो इससे भी मतलब नहीं बदलता।

रही दूसरी आयत, तो उसमें यह बताया गया है कि किताब वालों में भी दर्जों का फ़र्क़ है । उनमें से जो गिरोह रातों को इबादत करता और किताब पढ़ता है और ख़ुदा और आख़िरत (परलोक) के दिन पर ईमान रखता है, और परहेज़गारी के साथ ज़िन्दगी बसर करता है, और न सिर्फ़ ख़ुद सत्कर्मी है बल्कि दूसरों को भी नेकी का हुक्म देता और बुराई से रोकता है, वह उस गिरोह से बेहतर और उच्चतर दर्जे में है जो ख़ुदा की आयतों का इन्कारी और हक़ से नाफ़रमानी करने वाला, बदकार वह गुमराह है । ज़ाहिर है कि अगर इन दोनों गिरोहों को एक समान समझा जाए और इनका अंजाम एक ही सा हो तो यह इन्साफ़ के ख़िलाफ़ होगा । उन बदकारों के मुक़ाबले में उन नेकी करने वालों की क़द्र यक़ीनन होनी चाहिए और होगी भी । मगर यह पहले ही के दिया कि उन परहेज़गार और नेक किताब वालों के हक़ में भी बेहतर यही था कि वे उम्मी नबी (सल्ल॰) पर ईमान ले आते—

"ये अहले-किताब ईमान लाते तो इन्हीं के हक़ में बेहतर था ।" (क़ुरआन, 3:110)

क्योंकि ख़ुदा ने जिस नबी को भी भेजा है इसी लिए भेजा है कि उसकी बात मानी जाए—

"(उन्हें बताओ कि) हमने जो पैग़म्बर भी भेजा है इसी लिए भेजा है कि ख़ुदा के हुक्म की बिना पर उसकी आज्ञा का पालन किया जाए ।" (क़ुरआन, 4:164)

जो शख़्स ख़ुदा के रसूल की बात नहीं मानता वह असल में ख़ुदा की बात नहीं मानता ।

"जिसने रसूल की पैरवी की उसने अल्लाह की पैरवी की ।" (क़ुरआन, 4:80)

और नाफ़रमानों को उसकी जगह ज़रूर दिखाई जाएगी । इसी का नाम नाफ़रमानी है—

"अगरचे उनमें से कुछ लोग ईमानदार भी पाए जाते हैं, मगर उनके अधिकतर लोग नाफ़रमान हैं ।"

(क़ुरआन, 3:110)

"अल्लाह तुम्हें अपनी रहमत का दोहरा हिस्सा प्रदान करेगा ।" (क़ुरआन, 57:28)

इस आयत की व्याख्या में जो कुछ मैंने बयान किया है वह शक की बात के साथ है । मैं यक़ीन के साथ नहीं के सकता कि परहेज़गार और नेक किताब वालों को अल्लाह की रहमत (दयालुता) में से कितना हिस्सा मिलेगा और उनके कर्मों की क़द्र किस सूरत में होगी ? इसको अल्लाह ही बेहतर जानता है, और अल्लाह ने अपनी किताब में जब इसकी कोई व्याख्या नहीं की है तो मुझे और किसी को भी अपने राय से इसको तय करने का कोई हक़ नहीं । मैं यक़ीन के साथ जो कुछ कह सकता हूं, वह बस इसी क़द्र है कि न तो वे उस कम दर्जे में रखे जाएंगे जो बदकार इन्कारियों के लिए है और न उन पूरे ईमान वालों के दर्जे के बराबर कर दिए जाएंगे जो तमाम पैग़म्बरों के साथ मुहम्मद (सल्ल॰) पर और तमाम किताबों के साथ क़ुरआन मजीद पर ईमान लाए हैं ।

(तर्जमानुल-क़ुरआन, नवम्बर 1934 ई.)

UNITED ELECTRONIC SPARES

Deals :
Electronic Spare Parts,
TV, DVD, DTH & All Types of Remote,
CFL Glass & CFL Kit, USB Set, Fan,
Iron, Mixer, Mobile Accessories,
0-25 KVA To 10 KVA Stabiliser &
Inverter, CFL Inverter &
12 V 7.2AH Battery

Shop No-8, Hotel Ashoka Complex,
L.T. Road, Ramgarh Cantt, Jharkhand

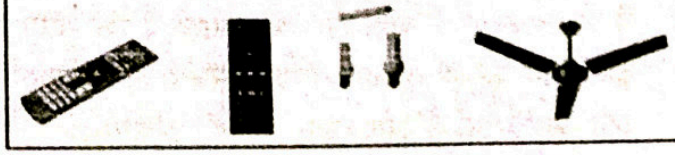

सकारात्मक बदलाव के लिए आगे आएं

● संपादन प्रभाग

हमारे देश में आजकल नफ़रत का कारोबार करने वालों की कमी नहीं ! 'दूकान' से आगे बढ़कर फैक्टरी चल रही है इसकी । प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का एक बड़ा वर्ग तो बहुत पहले से इसका पैरोकार बना हुआ है ! ये सभी अपने निजी घिनौने स्वार्थों की तकमील में जुटे हुए हैं, इसकी परवाह किये बग़ैर कि क्या उनका यह अमल उचित है और मूल्यों, मर्यादाओं का लिहाज करता है । इस शग़ल में अब सोशल मीडिया भी कूद पड़ा है । इसके ज़रिये भी लक्षित धर्म और विचारों एवं उनके मानने वालों पर अनुचित प्रहार किया जाता है, अनर्गल टीका-टिप्पणी की जाती है । ऐसा भी हो रहा है कि भारतीय इतिहास जो अंग्रेज़ों की 'फूट डालो, राज करो' के ख़ास मक़सद से लिखा गया है, के आधार पर भी पुरानी झूठी और ग़लत-सलत बातों का बदला चुकाने के लिए लोगों को उकसाया एवं वरगलाया जाता है । तरह-तरह के भड़काऊ नारे आगे लाए जाते हैं और भ्रामक बातें कही जाती हैं ।

यह कहना अधिक सही है कि शासन-प्रशासन तंत्र में भी ऐसे तत्व मौजूद हैं, जो मौक़ा पाकर इस मानसिकता को अमली जामा पहनाते रहते हैं । इस कारण से मुसलमानों के प्रति पक्षपात, अनाचार और नाइंसाफ़ी की घटनाएं बढ़ती ही जाती हैं, जो हर दृष्टि से निंदनीय एवं चिंतनीय है । पशु वध रोकने के नाम पर नागरिकों को अकारण परेशान और टारगेट करने की भी शिकायतें मिल रही हैं । इस कारण से भी केन्द्र सरकार द्वारा पशु बिक्री को लेकर लाए गये अध्यादेश को लेकर कांग्रेस समेत कई विपक्षी दलों के साथ ही समाज कल्याण के कार्यों में लगे संगठन व कई मुस्लिम संगठन विरोध जता रहे हैं । जमाअत इस्लामी हिन्द ने कहा है कि केन्द्रीय अध्यादेश से ख़ासकर किसानों और देश की अर्थव्यवस्था को नुक़सान पहुंचेगा ।

जमाअत के महासचिव जनाब मुहम्मद सलीम इंजीनियर ने एक वक्तव्य में कहा कि हम समझते हैं कि भारत सरकार द्वारा जारी पशुओं के क्रय-विक्रय संबंधी अधिसूचना किसान और जनविरोधी है और इससे देश की अर्थव्यवस्था को बड़ा नुक़सान पहुंचेगा । सरकार जानती है कि वह देश स्तर पर खाने से लोगों को नहीं रोक सकती, इसलिए उसने "बीफ" के द्वारा इस मक़सद को हासिल करने की कोशिश अधिसूचना के ज़रिए की है । वक्तव्य में महासचिव महोदय ने कहा है कि पशु के ज़िबह को निर्दयता और ज़ुल्म की उपमा देकर इसे ग़ैर-क़ानूनी क़रार देकर सरकार ने पशु व्यापार को ज़बरदस्त नुक़सान पहुंचाया है । विशेषज्ञों का कहना है कि जो किसान पशु रखते हैं, उनको 40 प्रतिशत आय बूढ़े पशु के विक्रय से होती है । पशु का केवल 30 प्रतिशत हिस्सा मांस-व्यापार में इस्तेमाल होता है । शेष भाग चमड़ा, साबुन, ब्रुश, टूथपेस्ट, मेडिकल स्टिचिंग के लिए प्रयुक्त होता है ।

2014-15 में हमारे देश से तीस हज़ार करोड़ रुपये का भैंस-मांस निर्यात किया गया । इस अध्यादेश से बेरोज़गारी बढ़ेगी और देश की अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा । जमाअत के महासचिव ने कहा कि यदि हम पशु के ज़िबह को क्रूर कर्म स्वीकारते हुए इसे ग़ैर-क़ानूनी क़रार देते हैं, तो इस दृष्टि से कल भेड़-बकरियों और मुर्ग़ का मांस भी ग़ैर-क़ानूनी बन सकता है । जमाअत इस्लामी हिन्द सरकार से मांग करती है कि वह जल्द से जल्द इस अधि सूचना को वापस ले और देश की अर्थव्यवस्था को क्षति पहुंचाने से बचाए । सभी जानते हैं और यह हक़ीक़त भी है कि हमारा देश एक लोकतांत्रिक देश है । यहां के सभी नागरिकों को बिना किसी भेदभाव के समान और बराबर के संवैधानिक अधिकार प्राप्त हैं । हमारे देश के संविधान ने ऊंच-नीच, छूत-छात एवं जातीय श्रेष्ठता के अमानवीय दुर्गुणों को जड़मूल से ढहा दिया है एवं नागरिकों की उन्नति-प्रगति में बाधक तत्वों को यथासंभव समाप्त कर दिया है । परन्तु इस सच्चाई से कौन इन्कार कर सकता है कि इन संवैधानिक प्रावधानों के बावजूद यहां यह 'सब कुछ' मौजूद है !!! कब होगा इनका अंत ??? नफ़रत का बाज़ार काफ़ी गर्म है, जिसे ठंडा करने के लिए देश-समाज के सभी हित-चिन्तकों को एकजुट होकर ठोस प्रयास करने की सख़्त ज़रूरत है ।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) संसार के लिए प्रकाशपुंज

■ स्वामी लक्ष्मण प्रसाद

वर्तमान कालीन भारत के सामने जिस महान हस्ती के हालात रखे जा सकते हैं, मेरे ख़्याल में वह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) हैं। आज के भारत और अज्ञानताकालीन अरब में कितनी साम्यता है, इसका अंदाज़ा भारतीय समाज की जीवन-शैली देखने से हो जाता है। वर्तमान भारत में क्या नैतिकता और शराफ़त के उसूलों को स्वार्थ सिद्धि तथा धन लोलुपता के बलिदेवी पर क़ुरआन नहीं किया जा रहा है? क्या खुलेआम शराब पीना आधुनिक सभ्यता का एक मनोरंजन का साधन नहीं बन गया है? अश्लीलता, नग्नता क्या आम नहीं हो गई है ?

उस वक़्त ख़ूंख़ार भेड़िए की शक्ल में एक इन्सान दूसरे इन्सान के ख़ून का प्यासा था। आजकल दिखावटी मुहब्बत और सुन्दर शब्दों की मीठी छुरी से एक इन्सान दूसरे इन्सान को ज़िब्ह करने की कोशिश करता है। उस वक़्त पाप और कुकर्मों के नाम पर मुंह काला किया जाता था, आजकल शराफ़त, धार्मिकता के नाम पर इज़्ज़त लूटी जाती है। उस वक़्त बुतपरस्ती आमतौर पर राइज थी। आजकल बुतपरस्ती और नफ़्सपरस्ती दोनों को बढ़ावा मिल रहा है। उस वक़्त बुतों के नाम पर मुजाविर (पुजारी आदि) कमाते थे, आजकल ईश्वर, धर्म, संगठन, दल के नाम पर चालाक लोगों ने रोज़गार का धंधा बना लिया है। ख़ुदा को पूजने वाले इन्सान उस वक़्त भी न थे, उसके आगे शीश नमन करने वाली गर्दनें आज भी नहीं है।

आज से तेरह सौ वर्ष पहले ऐसा ही अंधकार अरब के आकाश में भी फैला हुआ था, तो उसके क्षितिज पर यसरब का चांद (हज़रत मुहम्मद सल्ल०) उदय हुआ। जिसने अपनी किरणों से सम्पूर्ण अरब क्षेत्र को प्रकाशित कर दिया। आस्ता-विश्वास पूजा-अर्चना, नैतिकता, सामाजिकता के सम्पूर्ण आवाहक हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) के आगमन से पहले दुनिया में कहीं कोई आशा की किरण दिखाई नहीं देती थी।

मानवता पुनर्जीवित हुई

विश्वव्यापी गुमराहियों और भयंकर अंधकार में कहीं सभ्यता और संस्कृति की रोशनी नज़र नहीं आती थी। जब शराफ़त का नाम व निशान मिट चुका था। जब फ़ितरत का हक़ीक़ी हुस्न और रुहानियत की सुंदरता कुफ़्र व बातिल की तारीकियों में छुप गए थे। जब कुफ़्र व कुकर्म और ज़ुल्म व सितम की ख़ूंख़ार देवी ने तमाम दुनिया पर अपनी नागिन की तरह लहराती हुई काली ज़ुल्फ़ों का जाल फैला रखा था। और इन्सानों के दिल ख़ुदा की क़द्र व महत्ता को भूलकर इसी ज़हरीली देवी केशों के दास होकर अपने गले में कुकर्मों और बुतपरस्ती की लानत की ज़ंजीर पहन चुके थे। एक बार इन्सानियत मरकर फिर ज़िंदा हुई।

एशिया महाद्वीप के दक्षिण-पश्चिम में एक बड़ा प्रायद्वीप है, जो अरब के नाम से मशहूर है। इसी अज्ञानता और गुमराही के केन्द्र अरब के फ़ारान पहाड़ की चोटियों से एक नूर चमका जिसने दुनिया की हालत को आमूल मूल से बदल दिया। गोशा-गोशा नूरे हिदायत से जगमगा दिया।

आज से तेरह सौ सदियां पहले इसी गुमराह देश के शहर मक्का की गलियों से एक क्रांतिकारी आवाज़ उठी, जिसने ज़ुल्म व सितम की फ़ज़ाओं में तहलका मचा दिया। यहीं मार्गदर्शन का वह स्रोत फूटा, जिसने दिलों की मुरझाई हुई खेतियां सरसब्ज़ कर दीं। इसी रेगिस्तानी चमनिस्तान में रूहानियत का वह फूल खिला जिसकी रूहपरवर महक ने नास्तिकता की दुर्गंध से घिरे हुए इन्सानों के दिल व दिमागों को सुगंधित कर दिया।

पहली वह्य

जब हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) चालीस वर्ष के हुए और इबादत, साधना से अपना दिल अनवारे इलाही (दिव्य आलोक) को ग्रहण करने के लिए तैयार हो गया तो एक शुभ क्षण में एक नूर (प्रकाश) हिरा घाटी के अंधेरे में चमका, जिससे यह छोटी-सी घाटी (ग़ार) प्रकाशमय हो गई। आप (सल्ल०) की बंद आंखें इस नूर की ताब न लाकर खुल गईं तो एक वैभवशाली फ़रिश्ते को सामने पाया। उसने आपकी ख़िदमत में निहायत अदब से इल्तजा की कि खुदा ने अपनी हुज्जत आप पर ख़त्म की और आप ख़ातिमुल अंबिया (आख़िरी नबी) है। मैं खुदा का फ़रिश्ता जिबरील हूं और आपके पास वह्य लेकर हाज़िर हुआ हूं–

'पढ़ उस खुदा के नाम से जिसने तमाम कायनात को पैदा किया। जिसने इन्सान की गोश्त के एक लोथड़े से रचना की। पढ़ तेरा रब कृपालु है, वह जिसने इन्सान को क़लम के ज़रिए इल्म सिखाया। वह जिसने इन्सानों को वह बातें सिखाईं जो उसे मालूम न थीं।'

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने किसी पाठशाला से शिक्षा प्राप्त नहीं की थी, और न ही किसी शिक्षक से कुछ सीखा था। इसलिए आप लिखना-पढ़ना नहीं जानते थे। जिब्राईल (अलैहि०) की दरख़्वास्त पर आपने साफ़ कह दिया कि 'मैं पढ़ा हुआ नहीं हूं।' जिब्राईल ने आपको बग़ल में दबा कर ख़ूब ज़ोर से भींचा और फिर कहा कि अब पढ़ो। आप (सल्ल०) ने वही पहला जवाब दोहराया। अब जिब्राईल ने फिर आपको आग़ोश में लेकर ज़ोर से भींचा और कहा कि अब पढ़ो, मगर आप (सल्ल०) ने फिर वही जवाब दिया।

जिबरील ने एक बार फिर आपको भींचा। अब ज्ञान प्राप्त हो जाने की वजह से आपने जिब्राईल के साथ मिलकर पढ़ा। फिर जिबरील आपको ग़ारे हिरा से बाहर ले आए। पहाड़ के दामन में एक चादर बिछा कर उस पर आपको बिठाया और ख़ुद ज़मीन पर ज़ोर से पांव मारा जिससे पानी का एक स्रोत फूट निकला। हज़रत जिबरील ने ख़ुद वुज़ू किया और आपको वुज़ू का तरीक़ा सिखाया। फिर आपको अपने नेतृत्व में दो रक्अत नमाज़ पढ़ाई और आसमान की बुलंदियों की तरफ़ परवाज़ कर गये।

हालांकि हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का दिल अनवारे इलाही क़ुबूल करने के लिए तैयार हो चुका था। फिर भी आप (सल्ल०) आख़िर इन्सान ही थे। आपका दिल अल्लाह के जलाल से लबरेज़ हो गया, आपके जिस्म में कंपन पैदा हो गया। आप कांपते हुए घर पहुंचे और अपनी पत्नी हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) से फ़रमाया कि मुझे कंबल ओढ़ाओ, मुझे छुपाओ। पत्नी आपका कंपन देखकर घबरा गईं, उन्होंने जल्दी से आपको कंबल ओढ़ा दिया और इसका कारण पूछा। आपने अपने पर बीती पूरी घटना पत्नी को सुनाई और हैबत व जलाले इलाही से भयभीत होकर यह भी फ़रमा दिया कि मुझे तो अपनी जान का ख़ौफ़ हो गया है।

हज़रत ख़दीजा की तसल्ली

हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) ने आपको एक-एक शब्द पूरी तवज्जोह से सुना और फिर कहा–

'आप भयभीत न हों, आपका खुदा आपके साथ है। वह जो कुछ करेगा बेहतर ही करेगा। क्योंकि आप मेहमानों के ख़िदमत-गुज़ार, सुचरित्रवान, अमानतगुज़ार, मुसीबतों में लोगों के मददगार, यतीमों के संरक्षक, मुसाफ़िरों के सहायक और लोगों के साथ अच्छे आचरण से पेश आते हैं।'

हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) का चचेरा भाई वरक़ा बिन नोफ़ल इब्रानी भाषा का विद्वान था और तौरेत तथा इंजील का ज्ञाता था। इसलिए आप हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) को उनके पास ले गयीं और पूरा घटनाक्रम बताकर इसका आशय जानना चाहा। वरक़ा बिन नोफ़ल की आखें तो तमाम हालात सुनकर खुली की खुली रह गयीं। वह आश्चर्य एवं प्रफुल्लता से पुकार उठा–

'पाक है पाक है अल्लाह। मुझे उस सर्वगुण सम्पन्न विधाता की क़सम जिसके क़ब्ज़े में मेरी जान है। ऐ ख़दीजा ! अगर यह वाक़या जो तूने बयान किया है, दुरुस्त है तो उस पर वही फ़रिश्ता नाज़िल हुआ है जो हज़रत मूसा (अलैहि०) पर नाज़िल हुआ था। वह (हज़रत मुहम्मद सल्ल०) इस उम्मत का नबी है।'

यह शब्द कह चुकने के बाद फिर वरक़ा की ज़बान से कुछ काव्य निकला जो इस तरह है–

'ऐ ख़दीजा ! जो बात मुझे तू कहती है, अगर यह सच है तो समझ ले कि अहमद अल्लाह का रसूल है। जिबरील और मैकाईल दोनों खुदा से वह्य लेकर उसके पास नाज़िल करेंगे। जो उसके दीन की इज़्ज़त हासिल करेगा वह कामयाब होगा। बहुत से बदबख़्त गुमराह उसके ज़रिए नेकबख़्त बन जाएंगे। लोगों के दो गिरोह हो जाएंगे। कुछ

दोज़ख़ (नर्क) की ज़ंजीरों में जकड़े जाएंगे ।'

हज़रत ख़दीजा को संतुष्ट कर लेने के बाद वरक़ा बिन नोफ़ल हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की तरफ़ मुख़ातब हुए और आपकी ख़िदमत में आस्था के साथ अर्ज़ किया–

'यह वही फ़रिश्ता था जो हज़रत मूसा (अलैहि०) पर नाज़िल हुआ था । काश कि मैं उस वक़्त तक ज़िंदा रहता जब आपकी क़ौम आपको आपके वतन से निकाल देगी तो मैं उस वक़्त आपकी मदद करता ।'

ईसाई विद्वान वरक़ा की वार्त्ता के इस आख़िरी हिस्से को आप (सल्ल०) ने बड़ी हैरत से सुना और पूछा कि क्या मेरी क़ौम मुझे निकाल देगी? वरक़ा ने जवाब दिया–

'हां आपकी क़ौम आपको ज़रूर निकाल देगी । आपसे पहले भी जिस किसी ने ऐसी तालीम (सत्य धर्म) दुनिया के सामने पेश की है जैसी कि आप करने वाले हैं । उनके साथ दुनिया ने कुछ इसी क़िस्म का सुलूक किया है । अगर मुझे उस दिन तक ज़िन्दगी नसीब हुई जब आप हिजरत (प्रस्थान) पर मजबूर होंगे तो मैं आपकी मदद करूंगा ।'

तौरते और इंजील के विद्वान वरक़ा बिन नौफ़ल की ज़बान से अपने पैग़म्बर होने की गवाही सुनकर आप (सल्ल०) अपने घर तशरीफ़ लाए । सबसे पहले जिस सौभाग्यशाली हस्ती के हृदय पर इस्लाम के अमर प्रकाश का बिंब पड़ा, वह हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की चहीती पत्नी हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) थीं, जिनसे 15 वर्ष पहले आप (सल्ल०) का निकाह हुआ था ।

इन्सान अपने ख़्यालात का जज़्बात तमाम दुनिया से छुपा कर रख सकता है मगर पत्नी को धोखा देना किसी तरह मुमकिन नहीं । पत्नी से ज़्यादा पति का कौन राज़दार हो सकता है? ख़दीजा (रज़ि०) हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) की ज़िन्दगी के पोशीदा पहलुओं से भी वाक़िफ़ थीं । जब आप (सल्ल०) ने उन्हें इस्लाम पेश किया तो उन्होंने इसे निस्संकोच स्वीकार कर लिया और ख़ुशी-ख़ुशी आपकी रिसालत पर ईमान ले आईं और कहा-इसमें कोई शक नहीं कि आप वही नबी हैं जिनका, सत्य के तलाश करने वालों को एक लम्बी अवधि में इंतिज़ार था ।

आपने उन्हें वुज़ू करना सिखाया और दो रक्अत नमाज़ पढ़ाई । उस वक़्त तक मुसलमानों पर दो रक्अत नमाज़ ही फ़र्ज़ थी । फिर जब आप (सल्ल०) को मेराज हुई तो पांच वक़्त की नमाज़ फ़र्ज़ हुई ।

आप (सल्ल०) के सत्य के आह्वान पर हज़रत ख़दीजा का तत्काल ईमान लाना बल्कि अपनी पुरानी इच्छा की पूर्ति पर प्रसन्नता व्यक्त करना, इस बात का स्पष्ट सुबूत है कि आप (सल्ल०) के नबी होने के एलान से पहले भी आप (सल्ल०) की ज़िन्दगी दोहरेपन से पाक थी । दुनिया ने आपको दयानतदार, अमानतदार, चरित्रवान आदि गुणों को देखकर 'अमीन' व 'सादिक़' का ख़िताब दिया था । तो हज़रत ख़दीजा (रज़ि०) ने आपके साथ गुज़ारे पंद्रह दाम्पत्य के वर्षों में कभी भी आपको लोगों के साथ वचन भंग करते हुए नहीं देखा था । एक सच्चे व्यक्ति की वाज़ेह निशानी यह है क़ि जो शख़्स उससे जितना निकट होता है उतना ही उसके सद्गुणों की कशिश उसके दिल को अपनी ओर खींचती है । क्योंकि उसे दूर रहने वालों की अपेक्षा उसके हालात व ख़्यालात से ज़्यादा परिचित रहने का मौक़ा मिलता है ।

आचार संहिता

आवश्यकता है देश में तत्काल
एक कठोर प्रभावी आचार संहिता
लागू करने और उसे क्रियान्वित करने की
जो अंकुश लगाए अपनी मांगों के लिए
रेल पटरियां उखाड़ने वालों पर !
जो क़ानून का डर बैठाए
खाप पंचायतों के नाम पर अपनी
मनमानी करने वाले और क़ानून को
अपने हाथ में लेने वालों पर !
जो बंदिश लगाए ऐसे सिरफिरों पर
जो बात-बेबात ऊल-जलूल बोलकर
समाज की शांति भंग करते रहते हैं !
जो किसी संवैधानिक पद पर न होते हुए
सरकारी कामकाज में अवांछित
दख़ल दे-देकर अव्यवस्था फैलाते हैं !
जो मात्र मीडिया में बने रहने के लिए
जब तब उखाड़-पछाड़ करते रहते हैं !
जो.....

ओमप्रकाश बजाज
(इंदौर, म०प्र०)

मुनअम पब्लिक स्कूल

(इंगलिश मिडियम, सी॰बी॰एस॰ई॰, नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त)

महाराजगंज, पो॰ दादपुर, ज़िला हज़ारीबाग, (झारखण्ड)

नामांकण सूचना : एल के जी से कक्षा नवम् तक

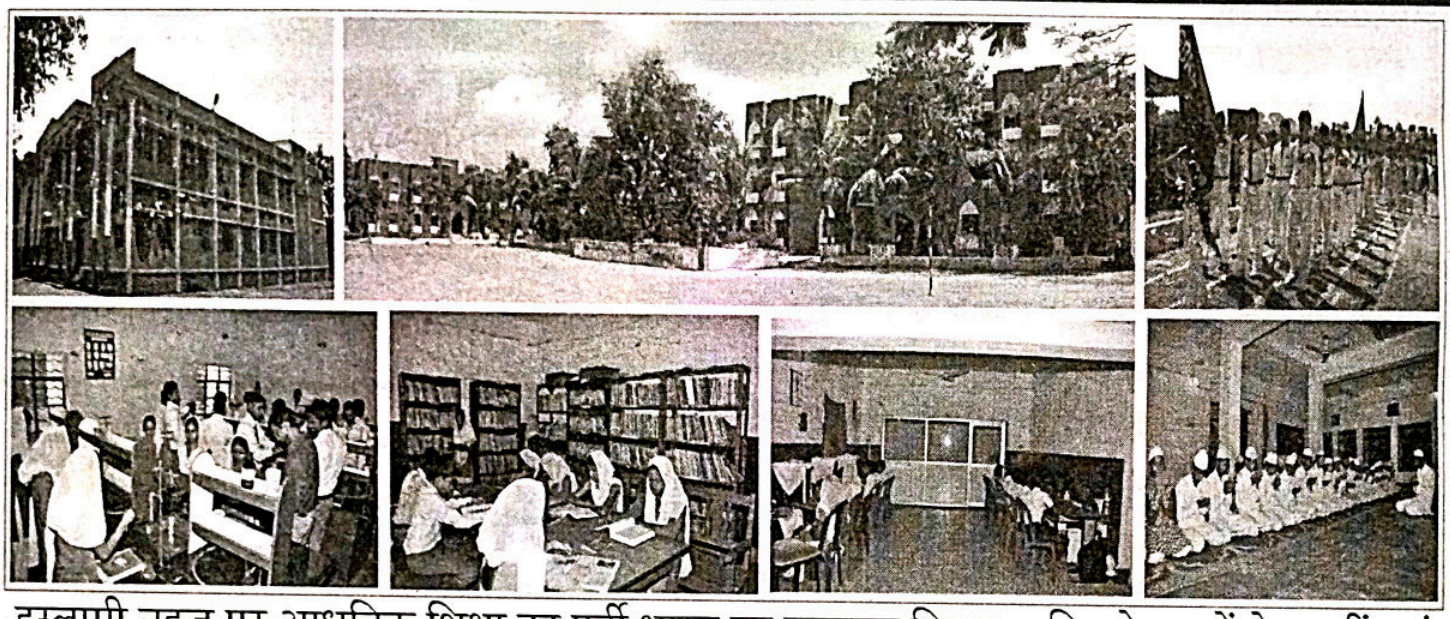

इस्लामी नहज पर आधुनिक शिक्षा का पूर्वी भारत का एकमात्र विद्यालय जिसके छात्रों ने दसवीं एवं बारहवीं के बोर्ड परीक्षा में शानदार कामयाबी हासिल की।

उपलब्ध सहूलियतें

विशाल कैंपस, भव्य इमारतें, छात्र-छात्राओं के लिए अलग-अलग आरामदेह साफ़-सुथरे छात्रावास की व्यवस्था, साइंस एवं कंप्यूटर लैब, ज्ञानवर्धक किताबों से भरपूर पुस्तकालय, स्पोर्ट्स एवं पी॰टी॰ के लिए विशाल खेल मैदान, सभी विषयों के लिए अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षकों की टीम, नमाज़ पंजगाना के लिए ख़ूबसूरत मस्जिद।

नामांकण फ़ार्म मिलने की अंतिम तिथि : 15 मार्च 2016

एस॰एम॰ नईम
एम॰ए॰, बी॰एड॰ए (अलीग॰)
निदेशक

साद राशिद ख़ान नदवी
फ़ाज़िल, नदवा, लखनऊ
छात्रावास अधिक्षक

वकील अहमद
एम॰एस॰सी॰, बी॰एड॰
प्राचार्य

विशेष जानकारी के लिए संपर्क करें

मोबाइल : 09431530878/7739748279, वेबसाइट : munammission.org

ई॰मेल : hmpt.mission@gmail.com

पानी के दोहे

लिये होठ सूखे, समय पूछे यही सवाल ।
किधर गया, कल था यहां पानी वाला ताल ।।

ना जाने किस मोड़ पर, चेतेगा इन्सान ।
पानी-पानी हो रही, पानी की पहचान ।।

सार्वजनिक नल बंद हैं, प्याऊ हैं लाचार ।
लगे हुए हैं हर तरफ़, पानी के बाज़ार ।।

नदिया अमृत बांटकर, ख़ुद करती विषपान ।
पता नहीं किस मोड़ पर दे दे अपनी जान ।।

सागर से बोली नदी, भर आंखों में नीर ।
हर पग पर इन्सान ने, रस्ते में दी पीर ।।

किस विकास के खुल गये, यारों आज किवाड़ ।
डरे-डरे हतप्रभ खड़े, जंगल, नदी, पहाड़ ।।

किस विकास की दौड़ में, रहा न कुछ भी याद ।
जीव-जन्तु जंगल सभी, पानी के अनुवाद ।।

जीवन एक निबंध-सा, यों पाये विस्तार ।
पानी ही प्रस्तावना, पानी उपसंहार ।।

हरी-भरी रचना सभी, ठहर, समझ, पढ़, देख ।
कितने पानीदार हैं, पानी के आलेख ।।

नित पानी का दायरा, हुआ अगर यूं तंग ।
पानी की ख़ातिर न हो, यारो अगली जंग ।।

नदिया कहे कराह के, दे ले अब तो घाव ।
कभी नांव में है नदी, कभी नदी में नांव ।।

नदिया चली पहाड़ से, मन में ले उल्लास ।
जब आयी मैदान में, पग-पग पसरी प्यास ।।

खोदे गये मकान जब, कुछ नगरों के पास ।
हर मकान की नींव में, थी पोखर की लाश ।।

जल ये जल-जलकर कहे, चेत अरे इन्सान ।
तरसाऊंगा कल तुझे, ले मत मेरी-जान ।।

जल ने मल में डूबकर, दिया मनुज को शाप ।
"दुख झेलेगी पीढ़ियां, जल-जल करते जाप ।।"

सागर बोला-री नदी ! कैसी थी वो राह ?
नदी सुबकने लग गयी, मुंह से निकली 'आह' ।।

जल ज़हरीला हो गया, पी-पीकर तेज़ाब ।
ऐ विकास ! तू धन्य है, मांगे कौन जवाब ।।

जल पहुंचा पाताल में, नभ पर पहुंचे लोग ।
काली नदिया बह रही, लेकर अनगिन रोग ।।

नदिया चली पहाड़ से, हुई राह में लुप्त ।
निकलेगा परिणाम क्या, जांच पड़ी है सुप्त ।।

जल स्तर यदि घटता रहा, यूं ही नित अविराम ।
कल होना है सुनिश्चित, एक महासंग्राम ।।

हम नदिया के तट खड़े, ले आंखों में नीर ।
प्यासी नदिया की विवश बांच रहे तक़दीर ।।

मिनरल वाटर बेचते सेठ करोड़ीलाल ।
गंगाबाई खोजती पानी वाला ताल ।

अशोक 'अंजुम'
चन्द्रविहार कॉलोनी
(नगला डालचंद),
अलीगढ़-1, उ०प्र०

नये रंग में नयी कविता

■ मुहम्मद इलियास हुसैन

कविता मानव-हृदय को प्रकृत दशा में लाती है और मानव-जीवन में उसका अधिकाधिक प्रसार करती हुई उसे मनुष्यत्व की उच्च भूमि पर ले जाती है। उसके हृदय को व्यापकता प्रदान करती है। इसलिए यह ठीक ही कहा गया है कि संसार में मनुष्य जाति के बीच कविता हृदय के भावों को लेकर उठी है और यह सतत् सद्भावों के सर्वहितकारी छत्र कर निर्माण करती और मनुष्य के हृदय को स्वार्थ संबंधों के संकुचित मंडल से ऊपर उठाकर लोकमंगल की भाव-भूमि पर प्रतिष्ठित हुई अबाध गति से आगे बढ़ती रही है। कविता मानव-हृदय में इन्सानियत का दर्द भरती है और सद्भाव तथा इन्सानी समाज में भाईचारा की शीतल बयार प्रवाहित करती है और शोषण के ख़िलाफ़ इन्सान को जागरूक करती है। इसी लिए इसकी ज़रूरत इन्सान को हमेशा से रही है और हमेशा रहेगी।

अधिकांश विद्वानों के अनुसार, नयी कविता का जन्म पश्चिम में हुआ। यह वहीं पली, बढ़ी और जवान हुई। वहीं से भारत के नये दीवाने कवियों ने इसे दुल्हन बना कर यहां लाया। इसलिए नयी कविता पर पश्चिम के साहित्य-चिन्तन का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। यह सॉरेन कीर्कगार्द दर्शन के अस्तित्ववादी दर्शन की अनुचरी है, जो विज्ञान विरोधी दर्शन है। यह दर्शन चयन की अगाध छूट देता है और अराजकता, अनास्था और अति स्वच्छन्दतावाद को प्रश्रय देता है।

डॉ॰ हरिनन्दन प्रसाद कहते हैं–

"नयी कविता हिन्दी साहित्य शृंखला की सशक्त एवं जीवन्त प्रक्रिया है। आधुनिक काल की विविध काव्य प्रवृत्तियों एवं काव्य शैलियों में से यह एक है। मानव-जीवन की यथार्थपरक एवं बौद्धिक भंगिमा नयी कविता में दृष्टिगोचर होती है।"

नयी कविता नयी क्यों है ? इस संबंध में कहा जाता है कि नयी कविता विषय-वस्तु और भाषा-शिल्प दोनों दृष्टियों से पुरानी परंपरा से हटकर है। यह जीवन के यथार्थ की ओर उन्मुख है। इसमें अनुभूति की सच्चाई है। अतिशय यथार्थवाद इसका मूल आधार है। यह विषय-बहुला है, इसमें विषयों का अंबार है।

'मुक्तिबोध' ने नयी कविता के विषय-वैविध्य के बारे में लिखा है और ठीक ही लिखा है–

"नयी कविता वैविध्यमय जीवन के प्रति आत्मचेतस् व्यक्ति की प्रक्रिया है। नयी कविता का स्वर एक ही नहीं, विविध हैं।"

नयी कविता किस प्रकार के भेदभाव को सही नहीं मानती। डॉ॰ रामदरश मिश्र के शब्दों में–

"नयी कविता की दृष्टि मानवतावादी है, किन्तु यह मानवतावाद मिथ्या आदर्शों की परिकल्पनाओं पर आधारित नहीं है, बल्कि यथार्थ की तीखी चेतना, अपने परिवेश से जुड़े मनुष्य के बौद्धिक प्रयासों से उनकी संवेदना के उलझे हुए नाना स्तरों तक अनुभूति और चिन्तन दोनों दिशाओं में पहुंचने की चेष्टाओं पर अवलम्बित है। इसने छोटे-बड़े का भेद नहीं रखा, छोटी-बड़ी अनुभूतियों, सत्यों, क्षणों, स्थितियों, घटनाओं और दृश्यों का बनावटी अन्तर नहीं स्थापित किया।"

विद्वानों ने नयी कविता को प्रयोगवाद का विकसित रूप माना है अर्थात् प्रयोगवाद उस काव्यधारा की आरंभिक अवस्था है और नयी कविता उसकी विकसित अवस्था। प्रयोगवाद का विकास ही कालांतर में नयी कविता के रूप में हुआ।

डॉ॰ शिवकुमार शर्मा के शब्दों में, "ये दोनों एक ही धारा के विकास की दो अवस्थाएं हैं। सन् 1943 से 1953 ई॰ तक कविता में जो नवीन प्रयोग हुए, नयी कविता उन्हीं का परिणाम है। प्रयोगवाद उस काव्यधारा की आरंभिक अवस्था है और नयी कविता उसकी विकसित अवस्था।"

कुछ लोगों ने कहा कि नयी कविता प्रयोगवादी कविता का परिष्कृत रूप है और कुछ के विचार से नयी कविता अज्ञेय के प्रयोगवाद से मुक्ति का प्रयास है; क्योंकि अज्ञेय के विराट व्यक्तित्व के सामने बहुत-से कवियों को उनका व्यक्तित्व बौना नज़र आने लगा था।

नया आदमी, नया जीवन

स्पष्टत: प्रयोगवादी काव्य में जो नये प्रयोग भाषा, उपमान, प्रतीक, बिम्ब, विषय इत्यादि की दृष्टि से हुए उन्हीं का परिणाम नयी कविता के रूप में सामने आया । इसलिए प्रयोगवाद और नयी कविता के बीच सीमा रेखा खींच पाना कठिन है ।

इस प्रकार 'नयी कविता' को 'प्रयोगवाद' की 'पुत्री' कहा जा सकता है; क्योंकि प्रयोगवाद का विकास ही कालांतर में नयी कविता के रूप में हुआ । ''नयी कविता प्रयोगवादी कविता का नया संस्कार है ।'' (डॉ॰ बच्चन सिंह, आधुनक हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ॰ 258)

विजयदेव नारायण साही का कहना है कि नयी कविता में न केवल काव्य का बाह्य कलेवर बदला है बल्कि गहरे स्तर पर काव्यानुभूति की बनावट में ही अन्तर आ गया है ।

प्रयोगवादी काव्य की समय-सीमा 1943 (तार सप्तक के प्रकाशन के साथ) से 1953 तक मानी जाती है, जबकि नयी कविता की समय-सीमा 1953 से 1960 तक स्वीकार की गयी है ।

डॉ॰ जगदीश गुप्त ने 1954 ई॰ में 'नयी कविता' नामक मासिक पत्रिका प्रकाशित किया । इसी पत्रिका के नाम के साथ यह शब्द प्रचलन में आ गया और उत्तरोत्तर साहित्यकाश में छाया गया, हालांकि इस शब्द का सबसे पहले प्रयोग नन्ददुलारे वाजपेयी ने अपने एक लेख में किया था ।

नयी कविता के प्रमुख हस्ताक्षर हैं– अज्ञेय, मुक्तिबाध, गिरिजा कुमार माथुर, कुंवर नारायण, दुष्यंत कुमार, धूमिल, अजित कुमार, प्रभाकर माचवे, सर्वेश्वर दयाल सक्सना, लक्ष्मीकान्त वर्मा, विजयदेव नारायण साही, शमशेर बहादुर सिंह, भवानी प्रसाद मिश्र, रघुवीर सहाय, नरेश मेहता, बालकृष्ण राव, जगदीश गुप्त इत्यादि । नयी कविता के प्रचार का श्रेय प्रतीक पत्रिका के माध्यम से अज्ञेय और नयी कविता पत्रिका के द्वारा जगदीश गुप्त को दिया जा सकता है । साथ ही, निकष, पाटल, धर्मयुग, कल्पना, दृष्टिकोण इत्यादि पत्रिकाओं ने भी नयी कविता को बढ़वा दिया ।

नयी कविता में नये भावबोध, नये मूल्यों, नये शिल्प-विधानों, लोकानुभूति और आम आदमी का आम अन्दाज़ में चित्रण हुआ है । इसमें घोर वैयक्तिकता, मुक्त यथार्थबोध, बौद्धिकता, क्षणवादी जीवन दर्शन, आधुनिकताबोध, मृत्युबोध, अनास्था, संत्रास, कुंठा, निराशा, अश्लीलता की हद तक सेक्स चित्रण और नारी के प्रति भोगवादी दृष्टिकोण, अस्मिता की खोज का यथार्थपरक चित्रण, अस्तित्ववादी जीवन-दर्शन पर आस्था, नवीन उपमानों, प्रतीकों एवं बिम्बों का प्रयोग, मुक्त छन्द का इस्तेमाल और बोलचाल की भाषा का प्रयोग हुआ है ।

बहुआयामी नयी कविता में भूमंडलीकरण का जीवन्त चित्रण हुआ है, उस भूमंडलीकरण का जिसने 'जन' को 'मास' में बदलकर रख दिया है । भूमंडलीकरण के 'मास' में वही लोग शामिल हैं, जिनके पास क्रयशक्ति है और जो जनसंचार के उपयोग में दक्ष हैं । वही लोग संचार के साधनों द्वारा 'फूट डालो और राज करो' का सम्मोहक तान छेड़कर देश-दुनिया को अपनी उंगलियों के इशारे पर नचा रहे हैं । अपना देश इस रोग से बुरी तरह ग्रस्त हो चुका है, बल्कि ब्रिटिश शासनकाल से ही इसमें ग्रस्त रहा है । अंग्रेज़ों के चेले सत्ता रूपी मद्य का पान करके उन्मत्त भाव से यत्र-तत्र सर्वत्र लाठियां भांज रहे हैं । इसके कारण देश में भू-तापन (ग्लोबल वार्मिंग) की तरह साम्प्रदायिक उन्माद में बेतहाशा वृद्धि हो रही है, अमन-शान्ति का जनाज़ा उठ रहा है ।

नयी कविता में लघुमानव को काव्य का विषय बनाया गया, उसे प्रतिष्ठा प्राप्त हुई अर्थात् जो आम आदमी आज तक उपेक्षित था, कविता में स्थान नहीं मिला था, उसे कविता में पर्याप्त स्थान और सम्मान मिला, बल्कि यह कहना ग़लत न होगा कि कविता में अपनी अच्छी-बुरी विशेषताओं के साथ वही प्रधान हो गया । वह नयी कविता के रग-रग में समाया हुआ है । वह ज़माने के प्रहारों से त्रस्त और हताश तो है, लेकिन उसके अन्दर जिजीविषा और हर बाधाओं पर विजय पा लेने का अदम्य उत्साह भी मौजूद है । भारत भूषण अग्रवाल ने नये मानव को सर्वसमर्थ मानकर

उसे कुछ नया कर दिखाने के लिए इन शब्दों में प्रेरित किया है–

उठो,
सोच क्या, गयी ज्योति का
तुम आस्था का दीप जलाओ
अन्धकार की हदें खींच दो
लौ का यह छोटा सा घेरा
नयी किरण का बने पांवड़ा ।

नये कवि ने लघुमानव की जिजीविषा को, जीने की इच्छा को भी शब्दों का मनोरम रूप दिया है । कुंठाओं, संत्रासों और अभावों में भी लघुमानव जीना चाहता है, जी रहा है; क्योंकि जीने के 'अधिकार' पर किसी का 'एकाधिकार' नहीं । जो ऐसा करने की कोशिश करता है, वह मानव नहीं, दानव है और दानव मानवता का शत्रु है । अज्ञेय ने सागर में उछलती हुई मछली के प्रतीक से मानव की इसी जिजीविषा को इन शब्दों में व्यक्त किया है–

उछली हुई मछली
जिसकी मरोड़ी हुई देहब्ल्ली में
उसकी जिजीविषा की उत्कृष्ट आतुरता मुखर है ।

नयी कविता में प्राय: हर दृष्टि से नयापन है । भाव और शिल्प की नवीनता के प्रति अदम्य आकर्षण ने कवियों को कुछ ऐसा कहने को बाध्य किया है, जो पुरानी कविता में नहीं है । इसमें चाय की प्याली, गर्म पकौड़ी, चूड़ी का टुकड़ा, साइरन, रेडियम घड़ी इत्यादि नयी चीज़ों का वर्णन बहुतायत से हुआ है । विविध रंगों में रंगी हुई नयी कविता के अंग-अंग से रस टपकता है–

अंगों अंगों में रस की बरसात हो
रंगों रंगों में रंगों की बात हो।
–शिवमंगल सिंह सुमन

नया कवि नये मूल्यों की स्थापना करने को उत्सुक हैं और अतीत को भूल जाना चाहता है–

आओ हम उस अतीत को भूलें
और आज की अपनी रग-रग के अन्तर को छू लें ।
–मुद्राराक्षस

आज मानव-जीवन में रुपया-पैसा प्रधान हो गया है, पैसे वाला 'प्रधान' हो गया । जिसके पास यह नहीं वह बेवकूफ़ समझा जाता है और उसकी प्राय: इज़्ज़त नहीं की जाती है ।

पैसा है जिसके पल्ले, सच्चा सर्वज्ञ वही है ।
–रामेश्वर करुण

आज साधु-सन्त भी भोगी की श्रेणी में आ गए । कई तो 'वैभव भोगी' होने के कारण जेल की हवा पी रहे हैं–

हरदम हराम का खाते बनकर विकट वियोगी
कितना भूभार बढ़ाते यह साधु कि वैभव भोगी?
–रामेश्वर करुण

बुद्धिवादी नया कवि पाठक के हृदय को झंकृत करने के बजाय उसकी बुद्धि को झकझोरता है । इसलिए नया कवि बुद्धि के बल पर सूर्य, चन्द्र और नक्षत्रों को भी नापने का प्रयास करता है–



मेरी विशाल बुद्धि
सूर्य चन्द्र तारों के
तापवेग नाप रही
मेरी अतर्क्य शक्ति, जल-थल समीर व्योम
विद्युत को चांप रही । –डॉ॰ देवराज

जीवन की बहुआयामी छवि को लेकर विकसित होने वाली नयी कविता के अग्रज कवि सच्चे अर्थों में 'मुक्तिबोध ' को कहा जा सकता है । उनका युगबोध निम्न कवितांश में इस प्रकार व्यक्ति हुआ है–

मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक पत्थर में
चमकता हीरा है
हर एक छाती में आत्मा अधीरा है
प्रत्येक सुस्मित में विमल सदानीरा है
मुझे भ्रम होता है कि प्रत्येक वाणी में महाकाव्य-पीड़ा है

पलभर में सबसे गुज़रना चाहता हूं
इस तरह खुद ही को लिये फिरता हूं
अजीब है ज़िन्दगी ।

नयी कविता में प्रणयानुभूति का वर्णन भी बड़े मनमोहक अन्दाज़ में किया गया है । कवि के विचार में यौनाकर्षण ही प्रेम है, जो शरीर के स्तर पर जन्म लेता है और अंग-प्रत्यंग के चारों ओर चक्कर लगाता है, हृदय के पास भी नहीं फटकता । नयी कविता में आम तौर पर प्रेम का यही रूप दिखाई पड़ता है । नये कवियों पर भोगवाद हावी है । प्रेम के इस भाव को अज्ञेय की इन पंक्तियो में देखिए–

क्या है प्रेम ? घनीभूत इच्छाओं की ज्वाला है ।
क्या है विरह ? प्रेम की बुझती राख भरा प्याला है ।

नयी कविता में नारी का भोग की वस्तु के रूप में चित्रण किया गया है । यह पूंजवादजनित उपभोक्तावादी अपसंस्कृति का परिणाम है । नर-नारी का संबंध भोगवाद और सहवास यानी यूज एंड थ्रो वाली थेअरी पर अवलम्बित है । इस जंग में हर बार औरत ही हारी है । रघुवीर सहाय के शब्दों में–

नारी विचारी है, पुरुष की मारी है
तन से क्षुधित है, मन से मुदित है
लपक झपककर अन्त में चित है

आज का आदमी ज़िन्दगी का मज़ा पूरी तरह उठा लेना चाहता है–

क्यों न पूरी तरह भोगूं, मौत हो या ज़िन्दगी
अतल में डुबकी लगाकर क्यों न खोजूं ज़िन्दगी ।
–मलखान सिंह सिसौदिया

आज का मनुष्य लक्ष्यहीन होकर रह गया है । वह चरित्र की दृष्टि से बौना नज़र आता है और दिन-प्रतिदिन बौना ही होता जाता है । अपना उल्लू सीधा करने के लिए वह कुछ भी कर सकता है । दुष्यंत कुमार कहते हैं–

ज़िन्दगानी का कोई मक़सद नहीं है
एक भी क़द आदमक़द नहीं है ।

उपभोक्तावादी समाज में खोखलापन और छल-छद्म बढ़ता जा रहा है । समाज में ज़हर भरता जा रहा है । नागरिक जीवन में पनपती हुई ज़हरीली प्रवृत्ति पर व्यंग्य करते हुए अज्ञेय कहते हैं–

सांप तुम सभ्य तो हुए नहीं
नगर में बसना भी तुम्हें नहीं आया ।
एक बात पूछूं, दोगे उत्तर
फिर कहां सीखा डसना
यह विष कहां पाया ?

धूमिल संसद को 'तेल की घानी' कहते हैं और एक अदभुत यथार्थ का उद्घाटन करते हैं–

अपने यहां संसद तेली की वह घानी है
जिसमें आधा तेल और आधा पानी है ।

नयी नये कवियों को लगता है कि यह देश पराक्रमी और कर्तव्यपरायण लोगों का न होकर कायर और स्वार्थी लोगों का है–

यह कायरों का देश है
यहां लोग देखने को आगे देखते हैं
चलने को पीछे चलते हैं
घुनी लकड़ियों के धनुष बनाते हैं
और विवेक के नाम पर
प्रत्यंचा चढ़ाने से मना कर देते हैं ।
–सर्वेश्वर दयाल सक्सेना

अब पुराने प्रतीकों का जादू ख़त्म हो गया है, उनका असर बहुत कम हो चुका और उनकी अर्थवत्ता भी खो गई

है–

देवता अब इन प्रतीकों के कर गए हैं कूच
कभी बासन अधिक घिसने से मुलम्मा छूट जाता है ।

अन्यायमूलक पूंजीवादी व्यवस्था के प्रति नये कवियों के मन में आक्रोश भरा है । मुक्तिबोध ने अपने अन्त:करण के आक्रोश को इन शब्दों में वाणी दी है–

इतना काव्य, इतने शब्द इतने छंद
जितना ढोंग, जितना भोग है निर्बन्ध

नयी कविता में जिस दुनिया का चित्रण हुआ है वह है भूखी-प्यासी; नंगी-अधनंगी दुनिया; काली करतूतों से भरी काली दुनिया है–

तुम कहते हो ।
बाह्य जो कुछ है मिथ्या है। मैं कैसे मानूं
मैं जब आंखें बन्द करता हूं
कुछ मिलता है महज अंधकार
काली नंगी छायाएं
अगणित अनेक व्याकुलताएं ।

–लक्ष्मीकान्त वर्मा

आज प्रश्न है होने वाले घातों-प्रतिघातों का,
दलित देश दुखिया जननी के अविरल अश्रुपातों का ।

–मन्नूलाल शर्मा शील

हालांकि निराश और हताश होने की ज़रूरत नहीं है । धर्मवीर भारती अपनी कालजयी कृति 'अंधायुग' में मनुष्य की अपराजेय शक्ति का चित्रण करते हुए कहते हैं–

जब कोई भी मनुष्य
अनासक्त होकर चुनौती देता है इतिहास को
उस दिन नक्षत्रों की दिशा बदल जाती है

आम आदमी में जागरूकता आ रही है–

अब न धरा पर शेष रहेगा, लोहू का व्यापार
नया आदमी मांग रहा है जीने का अधिकार ।

–मन्नूलाल शर्मा शील

नयी कविता में कुछ कमियां भी हैं । यह सपाटबयानी, फ़िकरेबाज़ी और चालू मुहावरेदानी का शिकार है । इस बात को अशोक वाजपेयी ने इन शब्दों में व्यक्त किया है–

"रचनात्मक स्तर पर भाषा के संस्कार के प्रति, उसकी सांस्कृतिक जड़ों के प्रति उदासीनता आयी है और अपनी पारंपरिक अनुगूंज और आसंगों से, कवियों के अज्ञान और अरुचि के कारण, कट जाने से काव्य भाषा में–ज़्यादातर युवा कवियों की भाषा में–सपाटता, सतहीपन और मानवीय दरिद्रता आयी है ।"

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि नयी कविता अपने दामन में अनुभूति की सच्चाई और अतिशय बौद्धिकता की पूंजी समेटे आगे बढ़ती रही । नयी कविता ने लघुमानव अर्थात् वंचित, उत्पीड़ित और हताश आम आदमी को काव्य का विषय बनाकर उसे सम्मानित और प्रतिष्ठित किया । उसकी जीवटता को, जिजीविषा को सतत् ऑक्सीजन फ़राहम करने का काम किया ।

नयी कविता आम आदमी की भाषा में, आम अन्दाज़ में, आम आदमी की बात कहती हुई लोकानुभूति और लोकमंगल के मार्ग पर चलती रही । क्षणवादी और अस्तित्ववादी दर्शन के भरोसे यह आगे बढ़ती रही । हां, भोगवाद का नशा नयी इसपर ऐसा चढ़ा कि उसकी नज़र में नारी, जो जगत जननी है, केवल भोग की वस्तु बनकर रह गयी । उसका इस्तेमाल हर स्तर पर किया गया । वह भोग, भोग और केवल भोग की दासी बनकर जीने को मजबूर हुई । क्षणिक आनंद का उपभोग ही मानव का आधार बन गया ।

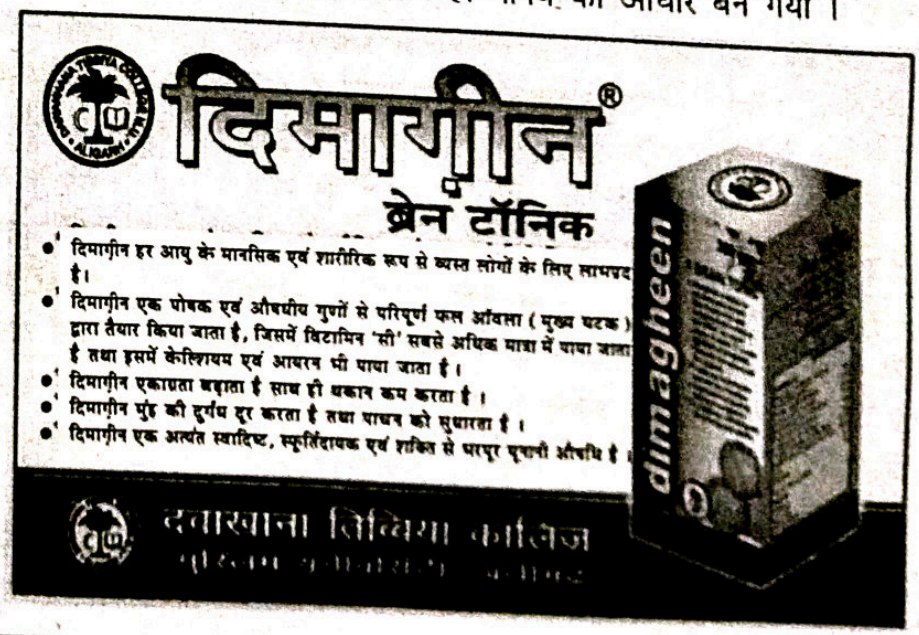

नयी कविता और उसके बाद

■ प्रो॰ देवराज

नवगीतकारों ने नवगीत के जो लक्षण निर्धारित किये, उनमें से कुछ हैं–छांदसिकता एवं लयात्मकता, संस्पर्शशीलता, स्मरणीयता एवं ग्राह्यता, संप्रेषणीयता, लोक-संपृक्ति, यथार्थ बोध, सामाजिक पीड़ा, विसंगतियों का अंकन, मनुष्य की केंद्रीय सत्ता, सौंदर्य, प्रेम, साधारण-जन के साथ तादात्म्य और भारतीय परिवेश के अनुकूल आधुनिक बोध । नवगीतकार प्रथम नवगीतकार के रूप में निराला को स्वीकार करते हैं, किंतु श्री राजेंद्र प्रसाद सिंह के अनुसार 'नयी चेतना' वाले गीत को उन्होंने ही सन् 1954 में गीतांगिनी नामक पत्रिका में नवगीत नाम दिया था । राजेंद्र प्रसाद सिंह और शंभुनाथ सिंह के अतिरिक्त प्रमुख नवगीतकारों में माहेश्वर तिवारी, ठाकुर प्रसाद सिंह, अमरनाथ श्रीवास्तव, श्रीकृष्ण तिवारी, ओम प्रभाकर, कुमार शिव, कुमार रवींद्र, उमाशंकर तिवारी, देवेंद्र कुमार, नईम, रमाकांतशर्मा उद्भ्रांत आदि के नाम उल्लेखनीय हैं ।

सन् 1950 से 60 के बीच नयी कविता की जो रचनाएं सामने आयी, उनमें से दो का संबंध युद्ध से बहुत गहरे स्तर पर है । ये रचनाएं हैं– 'कनुप्रिया' एवं 'अंधायुग' । ये दोनों रचनाएं धर्मवीर भारती की हैं और युद्ध की विभीषिका पर दो अलग-अलग कोणों से प्रकाश डालती है । कनुप्रिया वियोगजन्य पीड़ा और निराशा से भरे रोमानी धरातल पर रची गयी है तथा अंधायुग रचना महाभारत की घटना के आधार पर एकदम यथार्थवादी शैली में सृजित हुई है । इस दोनों के अलावा इस काल की नयी कविता स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रसन्नता, संविधान लागू किये जाने और लोकतंत्र अपनाये जाने के उत्साह की अभिव्यक्ति तथा धीरे-धीरे खुलती राजनीति व अर्थनीति की पर्तों के कारण अंदर-अंदर उभार लेते मोह-भंग की संवेदना की अभिव्यक्ति करती है ।

सन् 1960 के बाद नयी कविता में यथार्थवादी तथा अतियथार्थवादी प्रवृत्ति की बाढ़ आयी । काव्य-क्षेत्र में इसे मोह-भंग के काल के रूप में जाना जाता है । वस्तुत : पंचवर्षीय योजनाओं की दिशाहीनता, भारत की चीन के हाथों शर्मनाक हार और राजनीति के निरंतर भ्रष्ट होने रू तथा उसके परिणामों ने मोह-भंग की स्थिति को जन्म दिया । धूमिल और राजकमल चौधरी जैसे कवि इस अवस्था की उपज थे । ये उस युवा मानसिकता क प्रतिनिधित्व करते थे जो विद्रोह, भूख, बेकारी, निराशा आदि से बनी थी और जिसके लिए जीवन जीने का अर्थ एकदम बदल गया था । इस विद्रोही युवामानसिकता के कवि अक्रामक भाषा के पक्षधर थे तथा शब्द को तेज़ हथियार की भांति प्रयोग करना चाहते थे ।

इनके लिए विषयों का चयन भी समस्त सीमाओं से मुक्त हो गया था- न प्रसंगों, घटनाओं और संदर्भों का संकोच और न शिल्प का अनुशासन । डॉ॰ शिव प्रसात सिंह ने इस लेखन के भिन्न रंग की ओर संकेत करते हुए लिखा है– "स्वातंत्र्योत्तर दूसरे दशक का नवलेखन चाहे उसे युवा लेखन कह लें, जो बुभुक्षित पीढ़ी, अभिशप्त पीढ़ी, दिगंबर पीढ़ी नाम से या अविधात्मक, अ-कविता, अ-कहानी आदि नाम प्रकार का आ रहा है, अपना किंचित अलग रंग रखता है । (नवलेखन : स्थिति और समस्याएं, कल्पना, 1969, पृ 8-9) ।

साठोत्तरी कविता पर सबसे अधिक प्रभाव डॉ॰ राममनोहर लोहिया का पड़ा । वे सन् 1963 में एक उपचुनाव में विजय होकर संसद में पहुंचे थे । वहां उन्होंने देखा कि जनता के प्रतिनिधि संसद में निर्धन जनता के पक्ष में सबल आवाज़ नहीं उठा रहे हैं । तब उन्होंने कहा- "लोकसभा को देश की जनता का दर्पण होना चाहिए । अभी वह दर्पण बहुत साफ़ नहीं है । लोकसभा को जनता का दर्पण तभी बनाया जा सकता है, जब उसके सदस्यों की दृष्टि ऐसी न रहे कि वे केवल लोगों के प्रतिनिधि हैं, बल्कि ऐसा समझें कि वे भी लोगों में से ही हैं ।" (विग्रह - 1966, पृ॰ 30) । कांग्रेस के एकाधिकारवादी शासन की समाप्ति के लिए लोहिया ने 'ग़ैर-कांग्रेसवाद' का नारा दिया और विपक्षी दलों के

ध्रुवीकरण की दिशा में कार्य किया । नेहरू की मृत्यु से लोहिया का काम कुछ आसान हो गया, क्योंकि उससे कांग्रेस का तिलिस्म बहुत कुछ अपने आप ही टूट गया ।

अंततः सन् 1967 के आम चुनाव में पंजाब, बिहार, बंगाल, तमिलनाडु, केरल और उड़ीसा में ग़ैर-कांग्रेसी सरकारें बनीं । इससे सारे देश का राजनैतिक वातावरण ही नहीं बदला, बल्कि साहित्य भी प्रभावित हुआ । भ्रष्ट राजनीति पर व्यंग्य की तीखी मार तत्कालीन कविता की प्रमुख विशेषता बन गयी । यह व्यंग्य उस समय और भी पैना हो गया, जब डॉ॰ लोहिया की असमय मृत्यु के तुरंत बाद विपक्षी दलों के बीच तू-तू मैं-मैं की नौबत आ गयी तथा इंदिरा गांधी राजनीतिक मंच पर हावी हो गयीं । भारत के राजनैतिक मंच पर इंदिरा गांधी के क़दम रखते ही अहम्मन्यतापूर्ण एकाधिकारवादी राजनीति का खेल जवाहरलाल नेहरू के काल की अपेक्षा अधिक घिनौने रूप में शुरू हुआ । परिणामस्वरूप जनता में बौखलाहट बढ़ी । कविता ने इस आक्रोश को खुले रूप में अभिव्यक्त किया । मुक्तिबोध के संग्रह 'चांद का मुंह टेढ़ा है' (जो कवि की मृत्यु के बाद ही प्रकाशित हो सका) की फैंटेसी कविताएं उस युग के वास्तविक रूप तथा कलाकारों की असली स्थिति का बयान करती हैं । दूसरी ओर उसी काल में बीटनिक प्रभाव से ऐसी रचनाओं की बाढ़ भी दिखाई दी जो समस्त नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों को अस्वीकृत करके पूर्णतः स्वतंत्र मूल्यों की स्थापना का समर्थन करती थीं ।

साठोत्तरी कविता को समीक्षकों ने समकालीन कविता आंदोलन के अंतर्गत भी रखा है और माना है कि समकालीन कविता समकालीनबोध की कविता है । यह बोध अपने काल की संपूर्णता का सच्चा अनुभव है । इसमें क्षणों की सीमितता या गतिहीनता नहीं है, बल्कि काल के निरंतर प्रवाह की सक्रियता है ।

'कान्ति' (मा॰) का आगामी विशेषांक

'इस्लामी जीवन दर्शन'

लेख एवं अन्य सामग्रियां आमंत्रित हैं–

संपादक, 'कान्ति' (मा॰), दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नई दिल्ली-25

E-mail : editorkanti@yahoo.com

वेद और क़ुरआन

वैदिक संस्कृति तथा इस्लामी संस्कृति विश्व की दो महान संस्कृतियां हैं । दोनों संस्कृतियों की परम्पराओं, रीति-रिवाजों, रहन-सहन आदि में व्यापक अन्तर होने के बावजूद उनके धर्म ग्रन्थों (वेद तथा क़ुरआन) में वर्णित मूल सिद्धांत एक जैसे हैं । दोनों ग्रन्थों में, 'विश्व के सभी धर्मों की भांति' कुछ शाश्वत मूल्य बताये गये हैं । जैसे सत्य, क्षमा, दया, करूणा प्रेम तथा ईश्वर के प्रति पूर्ण आस्था । वस्तुतः वेद तथा क़ुरआन दोनों का लक्ष्य मानव कल्याण है । दोनों एक ही मूल सत्य, शाश्वत सत्य से जनमानस को परिचित कराते हैं । दोनों ही ग्रन्थ किसी व्यक्ति की रचना न होकर दैवीय रचना हैं, अपौरुषेय है । इनमें मात्र एक अन्तर परिलक्षित होता है : जहां वेद आदि ग्रन्थ है वहीं क़ुरआन अंतिम । इनके काल खण्ड में इतना दीर्घ अन्तराल होने के बावजूद इनमें अद्‌भुत साम्यता विद्यमान हैं ।

वैदिक धर्म की तीन आधारशिलाएं हैं- पहली, एकेश्वरवाद ('एको ब्रह्मा, द्वितीयो नास्ति'); दूसरी, ईश दूतत्व या ईश्वर से प्राप्त ज्ञान (संदेश) का प्रसार, तीसर, प्रलय की मान्यता । यही तीन इस्लाम धर्म की भी आधार शिलाएं हैं । वेद का अध्यात्मिक आधार है । क़ुरआन के प्रारम्भ में ही उल्लेखित है : अल्लाह सारे संसार का रब (पालनहार) है, मेहरबान है, जजा (अन्तिम न्याय) के दिन का मालिक है ।

वेद में जिसे एकेश्वरवाद कहा गया है इस्लाम में उसे तौहीद । ऋग्वेद में वर्णित है : इदं मित्रं वरुणमग्नि महारथो दिव्य स सुपर्णा गुरुत्मान । एकं सद विप्रा बहुधा वदन्ति वधव्यग्नि यम मातरिश्वानुमाह । (ऋग्वेद 1/116/46) ईश्वर एक है किन्तु विद्वत्जन उसे अनेक नाम से स्मरण करते हैं, जैसे-इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि, दिव्य, सुपर्ण, गुरुत्मान, यम आदि । वेदों में बहुदेवाद का विरोध है 'दैवेरा सत्सि महिंषि' (1/4/12) तथा 'अन्धतम् प्रविशयन्ति से सम्भूति मुपासते' (यजुर्वेद-4019) आशय यह है कि जो अनेक देवताओं की उपासना करते हैं वे वस्तुतः अंधकार में रहते हैं ।

क़ुरआन में कहा गया है ईश्वर एक ही है (आयत 112/1); तथा सभी मनुष्य एक ही समुदाय के हैं और एक ही ईश्वर सबका पालनहार है इसलिए सभी उसी एक ईश्वर की इबादत करें (आयत 21/92) ।

ईश्वरदौत्य या ईश्वर का सन्देशवाहक होने का वर्णन वेदों की विभिन्न ऋचाओं में है : 'अग्निदूत वृणीमहे' (ऋग्वेद-1/4/12) अर्था अग्नि देवों के दूत हैं; 'हिरण्यपक्ष वरुणस्यदूत' (ऋग्वेद 10/10/123) अर्थात वरुण हिरण्य के दूत हैं । इस्लाम धर्म में हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को अल्लाह का आख़िरी नबी (दूत) कहा जाता है । मान्यता है कि उन्हीं के द्वारा पाक क़ुरआन धरती पर नाजिल हुआ नमाज़ में कहा जाता है : 'मैं यह इकरार करता हूं कि हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) अल्लाह के बन्दे हैं, उनके नबी रसूल हैं ...'

समाधि में ईश्वर के साक्षात्कार के माध्यम से चार आदि ऋषियों-अग्नि, वायु, अदित्य और अंगिरा को वेद का ज्ञान हुआ । उन्होंने इसे अपने शिष्यों को सुनाया, इस तरह वेद अपौरुषेय हैं । क़ुरआन का ज्ञान हज़रत मुहम्मद (सल्ल॰) को हुआ, जो उन्होंने जन समुदाय को सुनाया या बताया, इस तरह क़ुरआन भी अपौरुषेय है ।

प्रलय की अवधारणा भी वेद तथा क़ुरआन में समान रूप से विद्यमान है । ऋग्वेद में 'अथाते अन्तमानां' (1/2/4) तथा यजुर्वेद में 'अरहरप्रयावं भरन्तोश्वाधेय तिष्ठते घासमस्य रापस्योवेण समिधा मदन्तोऽग्ने मां ते पृतिविषरिषाम्' (11/75) के द्वारा अंतिम दिन प्रलय का उल्लेख मिलता है; जिसमें कहा गया है कि दिन-प्रतिदिन जैसे अश्व के लिए घास निर्धारित है वैसे ही अन्तिम दिन मेरे द्वारा सभी से प्रश्न किया जाएगा । इस्लाम में भी कयामत के दिन (आख़िरत) का उल्लेख है, जिस दिन अल्लाह इन्सान से हिसाब पूछेगा । यह धारणा भी वैदिक ऋचा (यजुर्वेद 11/75) के काफ़ी निकट है । इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि वेद तथा क़ुरआन में काफ़ी निकटता, अद्‌भुत साम्यता विद्यमान है ।

('रा॰ सहारा' हिन्दी, नयी दिल्ली, 10 जून 2008

2017 کی نئی کتابیں

حدیث نبویؐ اور اس کے اصول وضوابط	مولانا عبدالخالق ندوی	100.00
برادران وطن سے روابط کی اہمیت	محمد اقبال ملّا	35.00
قرآن مجید اور مستشرقین	محمد جرجیس کریمی	72.00
ختم نبوت کا قرآنی تصور	پروفیسر سید مسعود احمد	82.00
مسلم پرسنل لا کے بعض مسائل	مولانا سید جلال الدین عمری	23.00
تحریک اسلامی کی رفتار کار	مولانا سید جلال الدین عمری	32.00
تزکیہ نفس اور اخلاق	محمد فاروق خاں	20.00
خواتین اسلام کی علمی خدمات	محمد فاروق خاں	12.00
حقیقی تصوف	محمد فاروق خاں	12.00
تربیت کے فکری وعملی پہلو	محمد فاروق خاں	36.00
حکمت نبوی احادیث کی روشنی میں	محمد فاروق خاں	20.00
صنفی عدل اور اسلامی تعلیمات	قاضی فرزانہ تبسم	24.00
عمرے کا پیغام	لئیق اللہ خاں منصوری	18.00
عربی کا معلم حصہ سوم	مولوی عبدالستار خاں	114.00
اسلامیات نرسری	مجلس تدوین وترتیب درسیات	22.00
اسلامیات جونیر کے جی	مجلس تدوین وترتیب درسیات	22.00
اسلامیات سینیر کے جی	مجلس تدوین وترتیب درسیات	18.00
اسلامیات حصہ دوم	مجلس تدوین وترتیب درسیات	45.00
سائنس حصہ پنجم	مجلس تدوین وترتیب درسیات	150.00

مرکزی مکتبہ اسلامی پبلشرز، نئی دہلی ۲۵

D-307, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-110025
Phone: 26981652,26984347 Fax:26987858
E-mail: mmipublishers@gmail.com - Website: www.mmipublishers.net

कुरआन की सामाजिक व्यवस्था

■ विजय गोपाल मंगल

कुरआन जुआ खेलना, मद्यपान और स्त्री-पुरुष के स्वच्छन्द मेल-मिलाप पर रोक लगाता है, क्योंकि ये सब सामाजिक अथवा वैयक्तिक जीवन को विकृत कर देते हैं। सामाजिक जीवन में कुरआन कुछ विशिष्ट नाते-रिश्तों को विवाह के लिए अवैध ठहराने के बाद दूर और निकट के संबंधियों में विवाह को वैध बताता है। उपजातीय भेदों को समाप्त करके समस्त मुसलमानों में परस्पर विवाह-संबंध की खुली आज्ञा देता है। विवाह इस्लामी समाज में एक सरल-सा संस्कार है जो कहीं भी दो गवाहों के सम्मुख वयस्क स्त्री-पुरुष की पारस्परिक स्वीकृति से हो सकता है। ऐसा इसलिए किया गया है ताकि विवाह कठिन और व्यभिचार सरल कार्य न हो।

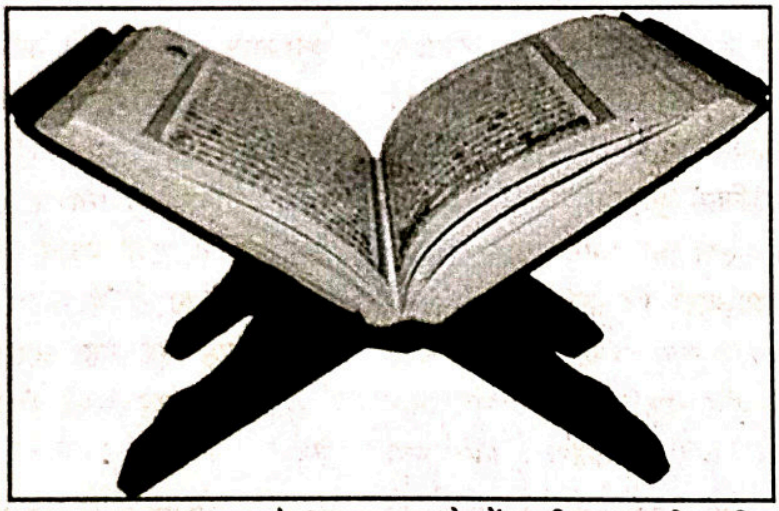

नारी की स्थिति

कुटुम्ब में परुष को घर में अनुशासन बनाए रखने के लिहाज़ से व्यवस्थापक का स्थान दिया है किन्तु इसका अर्थ यह कदापि नहीं है कि नारी एक विवश दासी के रूप में उसके अधिकार में दे दी गई है।

"हे मुसलमानो, तुमको यह जायज़ नहीं कि तुम बलपूर्वक औरतों के (माल के) वारिस बन जाओ और (देखना) इस नीयत से कि जो कुछ तुमने उनको दिया है उसमें से कुछ ले लो तो उन्हें (घरों में) मत रोक रखना। हां, अगर वे खुले तौर पर बदकारी करें तो दूसरी बात है। स्त्रियों के साथ अच्छी तरह रहो-सहो। अगर वे तुम्हें नापसन्द हों तो आश्चर्य नहीं कि तुम किसी चीज़ को पसन्द न करो और खुदा उसमें बहुत-सी भलाई पैदा कर दे।"

(कुरआन, 4:19)

इतना ही नहीं कुरआन स्त्रियों के साथ समानता और आदर का व्यवहार करने का निर्देश देता है। वह कहता है, सब मानव बराबर हैं क्योंकि सबका मूल एक है। उनके बीच रंग, वंश, लिंग, नस्ल पेशे के आधार पर भेद-भाव करना अनुचित है। कुरआन कहता है पुरुष के लिए सबसे बड़ी दौलत एक अच्छी पत्नी है। और पैग़म्बर मुहम्मद (सल्ल०) ने कहा है–

"तुममें से हर किसी को कृतज्ञ-हृदय, अल्लाह को स्मरण करनेवाली ज़बान और ईमानवाली पत्नी जो आख़िरत के (अर्थात् नेक) कामों में तुम्हारी सहायता करे, रखनी चाहिए।" (हदीस)

रिश्तेदारी

कुरआन का कहना है, अपने मां-बाप की इज़्ज़त करो, उनका कहा मानो, सिवाय इसके जब वे ईश्वर के अलावा किसी और को आराध्य मानने को कहें। मौत नज़दीक आने पर अपनी धन-संपत्ति के बारे में वसीयत करनी चाहिए। उनकी जायदाद में उनके माता-पिता, संतान और नज़दीकी रिश्तेदारों का हिस्सा रखा गया है। कुरआन में स्थान-स्थान पर रिश्तेदारों से सद्व्यवहार करने के आदेश दिए गए हैं और सद्व्यवहार अपनाने को पुण्य माना गया है।

उनके साथ भेदभाव की निन्दा की गई है और साथ ही ऐसी दशा में कि यदि वे अन्याय करें तो उनका समर्थन करने से रोका भी गया है। यदि कोई राजकीय पदाधिकारी जनता के धन से रिश्तेदारों का पालन-पोषण करने लगे अथवा अपने निर्णयों में अपने रिश्तेदारों के साथ अनुचित पक्षपात करने लगे तो यह कुरआन-विरोधी कार्य माना गया है।

पड़ोसी से सद्व्यवहार

क़ुरआन के आदेशों के अनुसार पड़ोसी सहयोग, सहानुभूति और सद्व्यवहार के पात्र हैं । इस बात को हदीस में कुछ इस प्रकार व्यक्त किया गया है–

"वह व्यक्ति धर्मात्मा नहीं है जिसके दुर्व्यवहार के कारण उसका पड़ोसी अशांति अनुभव करता है ।"

(हज़रत मुहम्मद)

"वह व्यक्ति धर्म से कोसों दूर है जो स्वयं पेट भरकर खाए और उसका पड़ोसी उसके पड़ोस में भूखा रहे ।"

(हज़रत मुहम्मद)

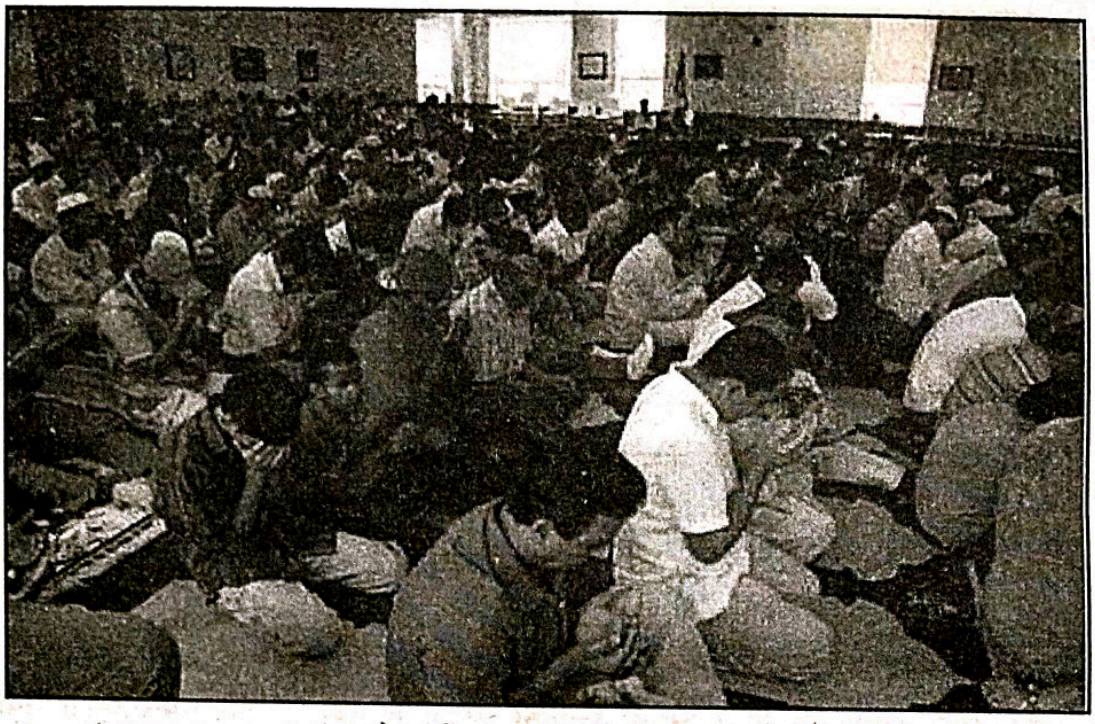

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) कहते हैं कि यदि तुम्हारे पड़ोसी तुम्हें अच्छा समझते हैं तो निस्सन्देह तुम अच्छे हो किन्तु यदि तुम्हारे पड़ोसी की सम्मति तुम्हारे बारे में अच्छी नहीं है तो तुम एक बुरे आदमी हो ।

इस प्रकार क़ुरआन सामाजिक जीवन में समस्त अच्छाइयों और गुणों से युक्त स्वस्थ मूल्यों की स्थापना करता है ।

न्यायसंगत व्यवहार पर ज़ोर

क़ुरआन धन के समान वितरण के बजाय न्याय-संगत वितरण पर ज़ोर देता है, क्योंकि प्रकृति में कहीं भी समान रूप से वितरण नहीं मिलता । क़ुरआन कहता है कि मनुष्य वैध साधनों से धन कमाए और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करे । फिर बच जाए तो मनुष्य उस धन को इस प्रकार उपयोग में जाए कि उससे उसके नैतिक स्वभाव और समाज को किसी प्रकार हानि न हो । उदाहरणार्थ, क़ुरआन मदिरा-पान, व्यभिचार, जुआ-बाज़ा, जमा-ख़ोरी अतिव्यय और कन्जूसी को हराम ठहराता है । क़ुरआन की शिक्षा यह भी है कि जो सच्चाई के साथ जीविका कमाते हैं उन्हें ईश्वर प्रेम करता है । भूखों को भोजन दो रोगियों की सेवा करो, मुसीबत में पड़े आदमियों की मदद करो । जब तक अपनी प्रिय वस्तुओं में से (भलाई के कामों में) ख़र्च न करो, पुण्य को नहीं पा सकते । (क़ुरआन, 3:92)

क़ुरआन में सूद (ब्याज) लेने को निषेध किया गया है । "ऐ ईमान लानेवालो! बढ़ोत्तरी के ध्येय से ब्याज न खाओ, जो कई गुना अधिक हो सकता है । और अल्लाह का डर रखो, ताकि तुम्हें सफलता प्राप्त हो ।" (क़ुरआन, 3:130)

क़ुरआन मांगनेवाले और न मांगनेवाले ज़रूरतमन्द (Needy) व्यक्ति की सहायता करने का निर्देश देता है ।

"दरिद्रता के भय से अपनी सन्तान की हत्या न करो, हम उन्हें भी रोज़ी देते हैं और तुम्हें भी । वास्तव में उनकी (इस आशंका से कि कल क्या खाएंगे अपनी सन्तान की) हत्या करना एक महा अपराध है ।" (क़ुरआन, 17:31)

"और उनके मालों में मांगनेवालों और धनहीनों का हक़ है ।" (क़ुरआन, 51:19)

"उनके मालों में मांगनेवालों और वंचित का एक ज्ञात और निश्चित हक़ होता है ।" (क़ुरआन, 70:24-25)

स्वतंत्रता

क़ुरआन मनुष्य की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की रक्षा का हामी (पक्षधर) है । उस पर केवल उतने ही नियन्त्रण की आज्ञा देता है, जिस सीमा तक मानव-जाति के कल्याण के लिए आवश्यक हो । क्योंकि प्रत्येक मनुष्य व्यक्तिगत रूप से अल्लाह के सामने उत्तरदायी है, इसलिए यह आवश्यक है कि मनुष्य को अपने व्यक्तित्व के विकास तथा भले कर्म करने के लिए अधिक से अधिक अवसर मिलें । ताकि मानवीय जीवन में दानशीलता, सहानुभूति, उपकार तथा अन्य अच्छे गुण क्रियात्मक रूप ले सकें ।

क़ुरआन के अनुसार उत्तम व्यक्ति वह है जो मानव-समाज

का कल्याण करता है ।

"धरती पर अकड़कर न चलो । न तो तुम धरती को फाड़ सकते हो और न तन कर पर्वतों की ऊंचाई तक ही पहुंच सकते हो ।" (क़ुरआन, 17:37)

अभिमान मनुष्य को नैतिक पतन की ओर ले जाता है । यह दोष मनुष्य को समाज के लिए हानिकारक बना देता है । पारस्परिक संबंध एवं भाईचारे को सहानुभूतिपूर्ण बनाने के लिए आवश्यक है कि लोग अपनी अपेक्षा दूसरे लोगों को नीच और हीन न समझें तथा उनके साथ अमानुषिक व्यवहार न करें ।

इस प्रकार क़ुरआन समस्त मानव-जाति के समक्ष एक ऐसी व्यवस्था प्रस्तुत करता है जिसमें जीवन के आध्यात्मिक, सामाजिक, अर्थिक तथा नैतिक पहलू आ जाते हैं । मानव-जीवन का कोई भी ऐसा पहलू नहीं है जो उसकी परिधि से बाहर हो । क़ुरआन "तुम्हारा धर्म तुम्हारे लिए और मेरा धर्म मेरे लिए" जैसी हिदायत करके धार्मिक सहिष्णुता पर बल देता है । उसका तो कहना है कि क़ुरआन कोई नई मज़हबी गरोह-बन्दी का सन्देश संसार में नहीं लाया, वरन् वह तो मानवता को उसी एक मार्ग पर एकत्र कर देना चाहता है, वह है : ईश्वर के बनाए नियमों का पालन करना ।

क़ुरआन उन सब कार्यों को धर्म निषिद्ध (मुनकर) क़रार देता है जिन्हें आम तौर पर लोग अस्वीकार करते हैं और जिन्हें बुरा कहने में सभी धर्म सहमत हैं । ईश्वरीय धर्म उन्हीं कार्यों को मनुष्य का आवश्यक कर्त्तव्य क़रार देता है जिनकी अच्छाई मनुष्य समाज ने समझ ली है । क़ुरआन मानव को ईश्वर का प्रतिनिधि मानता है, जिसके लिए वह अपने कार्यों का आख़िरत के दिन ईश्वर के समक्ष जवाबदेह है । आख़िरत निरा दार्शनिक विचार नहीं अपितु मानवीय सद्व्यवहार की नियामक शक्ति है । क़ुरआन मनुष्य की व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का समर्थक है । वह धन के समान वितरण की जगह धन के न्यायपूर्ण वितरण की व्यवस्था करता है । क़ुरआन के अनुसार सदाचरण धर्म का मूल-तत्व है ।

क़ुरआन का तो आदेश है कि मनुष्य भलाई और नेकी के कामों में बढ़-चढ़कर भाग ले और बुराई से बचने का भरपूर प्रयास करे । वह कहता है कि मनुष्य को वही कुछ मिलेगा जो उसने कमाया है ।

क़ुरआन मनुष्य को मानवीय गरिमा प्रदान करता है । क़ुरआन में मानवीय दृष्टिकोण विकसित करने के लिए अल्लाह में विश्वास, अनुवर्तन, संयम और परिष्कृत आचरण का विश्वासात्मक सिद्धांत प्रस्तुत किया गया है, तथा इन्हें क्रियात्मक रूप देने के लिए नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है ।

क़ुरआन कहता है कि धर्म की असलियत यही है कि ईश्वर ने जो कल्याण का मार्ग मनुष्य के लिए निश्चित कर दिया है उसका ठीक अनुसरण किया जाए । स्वयं हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने अपने जीवनकाल में समस्त मानव-जाति के लिए जो कार्य किया वह वास्तव में एक दर्पण की तरह स्पष्ट है । यदि आप-हम बाह्य आडम्बरों को छोड़कर क़ुरआन का अनुकरण करें तो हम अपने प्रयासों के द्वारा समस्त मनुष्य-जाति को एकता के सूत्र में बांध सकते हैं । जिसमें न जाति है, न धर्म, न वर्ग है और न ही कोई ऊंच-नीच । हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने भटकती मानवता के कल्याण व उत्थान का मार्ग प्रशस्त करने के लिए बताया कि जीवन में सफलता प्राप्त करने का एक ही मार्ग है, एक ईश्वर की उपासना तथा सदाचरण । मनुष्य को स्वार्थ-रहित होकर, समस्त कामनाओं का परित्याग कर मानवता के कल्याण हेतु एक-दूसरे के साथ सद्व्यवहार करना चाहिए जिससे वह ईश्वर के निकट हो सके ।

"अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि"

(आप सभी को शांति एवं प्रभु की कृपा प्राप्त हो ।)

M/s. ABBAS SOAP FACTORY

77/2, Topsia Road (South)
KOLKATA - 700 046

अगर कोई अपने ब्रांड के नाम से माल बनवाना चाहते हैं तो भी राबिता क़ायम करें।

PRODUCTS

- ✓ WASHING POWDER
- ✓ TOILET SOAP
- ✓ WASHING SOAP
- ✓ DETERGENT POWDER
- ✓ BATH SOAP

Contact For Business
For
Agency & Distributor Ship

M : 08100226137 (Mohd. Abbas)
M : 09831496237 (Mohd. Khalid)
M : 08981605834 (Mohd. Khalid)

सीरिया-वैश्विक शक्तियों की चेतना शून्यता

● संपादन प्रभाग

सीरिया के एक सुन्नी बाहुल्य शहर इदलिब में बशारुल असद और उनके मित्र देश रूस ने एक बार फिर रासायनिक हमला कर दिया, जिसके परिणामस्वरूप 25 नन्हें मासूम बच्चों सहित 100 से अधिक लोग शहीद और 400 से अधिक गंभीर रूप से घायल हो गये हैं, जिनमें से अधिकतर लोगों की हालत नाजुक बनी हुई है । प्राप्त जानकारी के अनुसार इदलिब शहर में हर तरफ़ क़यामत का मंज़र नज़र आ रहा है, जबकि युद्धक विमानों ने अस्पतालों पर भी राकेट बरसाए हैं ।

सीरिया 2011 ईसवी से ''अरब चेतना'' के झंझावात की झुलसा देने वाली थपेड़ों की ज़द में है । यह वह लहर थी, जिसने उत्तरी अफ़्रीक़ी अरब देश ट्यूनिस से उठकर लीबिया, मिस्र, यमन और सीरिया सहित पूरी अरब दुनिया को अपनी लपेट में ले लिया और इससे पूरी अरब दुनिया में ज़बरदस्त राजनैतिक अशांति फैली रही ।

ट्यूनिस, लीबिया और मिस्र में इस लहर के प्रभाव से राजनीति और सत्ता के गलियारों में अविश्वसनीय परिवर्तन हुआ, जबकि यमन और सीरिया अब तक इस लहर के नतीजे में गृहयुद्ध के चलते परिवर्तन के आकांक्षी हैं और इसके लिए प्रतीक्षारत हैं । इन दो देशों में जारी अशांति और खून-ख़राबे में वैश्विक शक्तियों और क्षेत्र के कुछ प्रभावशाली खिलाड़ियों के अस्थायी स्वार्थ शामिल होने के कारण शांति व सलामती की स्थापना की कोशिशें जटिल से जटिलतर होती चली जा रही हैं ।

वास्तव में ''अरब चेतना'' के दौरान वैश्विक शक्तियों ने जिन देशों में सत्ता-परिवर्तन को अपने हित में बेहतर समझा, वहां राजनीति के समन्दर में उठने वाली इस लहर को जनाकांक्षा से अलग करने में आगे बढ़कर भूमिका निभायी और जहां सत्ता के गलियारों में परिवर्तन उनके हितों के ख़िलाफ़ मालूम हुआ, वहां इस समय जंग की आग भड़की हुई है और इन्सानियत का क़त्लेआम जारी है । ऐसा महसूस होता है कि यमन और सीरिया में जंग की भट्टी को दहकाये रखना और उसमें मुस्लिम दुनिया के लोगों की समस्याओं और उनकी तबाही व बर्बादी का तमाशा देखना ही वैश्विक शक्तियों की कूटनीति है ।

इस वक़्त बशारुल असद के पैत्रिक शहर और राजधानी दमिश्क के कुछ गुप्त इलाक़ों के सिवा पूरा सीरिया एक ऐसे क़ब्रिस्तान का मंज़र पेश कर रहा है, जहां हर तरफ़ तबाही, बर्बादी, निराशा और वीरानी बरस रही है । लाखों लोगों को क़त्ल, अपाहिज और दर-बदर करके बशारुल असद का इसरार है कि वह इस क़ब्रिस्तान नुमा शहर का राष्ट्रपति है और रहेगा ।

पूर्व राष्ट्रपति मुअमर क़ज़्ज़ाफ़ी लीबिया में चालीस साल से सत्तासीन थे, फिर भी वहां सार्वजनिक स्तर पर बज़ाहिर कोई बड़ी बेचैनी नहीं थी । लीबिया राजनैतिक और आर्थिक लिहाज़ से अफ़्रीक़ा का एक मज़बूत देश था । उसकी आर्थिक स्थिति और वहां के निवासियों का जीवन स्तर आसपास के बहुत-से देशों के लिए क़ाबिले रश्क था और लीबिया के पासपोर्ट को यूरोपीय यूनियन में इज़्ज़त की दृष्टि से देखा जाता था ।

पड़ोसी देश ट्यूनिस में आने वाली राजनैतिक क्रांति से शह पाकर यहां के कुछ राजनीतिक लोगों ने विरोध-प्रदर्शन किये, तो पश्चिमी दूर संचार माध्यमों ने इन्हें बिल्कुल इस अंदाज़ में बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना शुरू कर दिया, जैसे कुछ साल पहले तुर्की के शहर इस्तंबूल में एक पार्क के विवाद पर होने वाले जन-प्रदर्शन को सरकार के विरुद्ध एलाने जंग बनाकर 'माहौल' बनाने की असफल कोशिश की थी ।

पश्चिमी मीडिया पर अतिश- योक्ति के साथ क़ज़्ज़ाफ़ी के ख़िलाफ़ ''जन-विद्रोह'' की रिपोर्टिंग के साथ ही वैश्विक शक्तियों की जन-समुदाय के साथ हमदर्दी जाग उठी, अत: उन्होंने राजनैतिक प्रदर्शनों को ख़ुद हथिया लिया और कुछ ही दिनों में जंग का औचित्य बनाकर लीबिया पर हमलावर हो गये । सीरिया में हालात इसके विपरीत थे, जहां बशारुल असद का परिवार दशकों से ऐसे लोगों की बहुलता की गर्दनों पर शक्ति के बल पर सत्तासीन थे, जो इनकी सत्ता से ख़ुश नहीं हैं ।

(शेष पृष्ठ 48 पर)

अभागिन

■ अबरार मुहसिन

बहुत दिनों की बात है, एक छोटा सा गांव था। गांव के लोग ज़्यादातर किसान थे। यह वे लोग थे, जिनके पास या तो अपनी ज़मीन थी या किसी ज़मींदार की ज़मीन पर खेती करते थे और उसे लगान अदा करते थे। किसानों का जीवन बड़ी मेहनत का था। जाड़ों की ठिठुरी हुई सुबह हो या गरमियों की आग बरसती दोपहर या मूसलाधार बारिश, उन्हें अपने खेतों पर पसीना बहाना ही पड़ता था।

हल जोतना, बीच बोना, सिंचाई करना, निराई करना, फ़सल को जानवरों और पक्षियों से बचाना, फ़सल काटना। मतलब यह कि साल में बारहों महीने कोई न कोई काम लगा ही रहता था। हल और बैल लेकर सुबह तड़के वे खेतों की तरफ़ निकल जाते और शाम को धुंध लगे गहरा अंधेरा होने पर थके मांदे वापस लौटते। खा-पीकर चौपाल पर सब इकट्ठा होते। हुक़्क़ा गुड़-गुड़ाते, गांव के हालात पर बातचीत होती और जब रात ज़्यादा बीत जाती, वातावरण शांत हो जाता और कुत्तों और गीदड़ों की आवाज़ें सुनाई देने लगतीं तो वे अपने-अपने घरों में जाकर सो रहते।

सैकड़ों साल से ज़िन्दगी इसी डगर पर चलती आ रही थी। कुछ लोग जो खेती न कर सकते थे, वे भेड़-बकरियां चराते और चरवाहे कहलाते थे। किसान और चरवाहे सभी ग़रीब लोग थे। उनके घर मिट्टी के बने हुए थे जिनकी छतें फूस-पताई आदि की थीं। सिर्फ़ ज़मींदार का मकान पक्का बना हुआ था। ज़मींदार ही गांव का मुखिया भी था। गांव में कोई काम उसकी मरज़ी के ख़िलाफ़ या उसकी इजाज़त के बग़ैर नहीं हो सकता था।

गांव से दो मील दूर पश्चिम की ओर एक टीला था, सुनसान और वीरान। टीले के पीछे से ही वह घना जंगल शुरू हो जाता था जो सैकड़ों एकड़ के एक बड़े क्षेत्र में फैला हुआ था। उसमें इतने ज़्यादा पेड़ और झाड़ियां थी कि दिन में भी अंधेरा रहता था। वह जंगल जानवरों और लुटेरों का अड्डा था। गांववाले भी आमतौर से जंगल के अंदर जाने से बचते थे। लकड़हारे भी जंगल के बाहर से ही लकड़ियां काट लाया करते थे। गांव में शिक्षा की रोशनी न पहुंच सकी थी।

इसलिए वहां जिहालत के अंधेरे बहुत गहरे थे। जिहालत हज़ारों क़िस्म के ग़लत अक़ीदों और रस्मों को फलने-फूलने का मौक़ा देती है। गांव के लोग भी अनगिनत वहमों और पुराने रिवाजों के ग़ुलाम थे। वे उन्हें सिर्फ़ इस वजह से जारी रखे हुए थे कि उनके बुज़ुर्ग सदियों से उन्हें मानते चले आ रहे थे। इन अक़ीदों और रस्मों ने ख़ुद उनकी ज़िन्दगियों में कितना ज़हर घोल रखा था इसका अंदाज़ा उन्हें था ही नहीं, न ही उन्होंने कभी इस बात पर सोच-विचार करने की ज़रूरत समझी।

उस गांव में अब्दुल नामक एक चरवाहा रहता था। वह छोटी-सी झोपड़ी में अपनी बीवी और आठ-दस साल की बच्ची के साथ रहता था। उसके पास चार गाएं थीं। उनका दूध गांववालों के हाथ बेच कर वह अपना और अपनी बीवी व बच्ची का पेट पालता था। बस किसी तरह ज़िन्दगी के दिन गुजर रहे थे।

एक दिन अचानक अब्दुल बीमार पड़ा और अगले दिन इस दुनिया से चल बसा। उसके कुछ दिन बाद ही उसकी बीवी भी परलोक सिधार गई। तीन गाएं भी देखते ही देखते ख़त्म हो गईं।

बेचारी बच्ची जिसका नाम चुन्नी था, इस दुनिया में बिलकुल अकेली रह गई। होना तो यह चाहिए था कि लोग उस यतीम को सहारा देते, उसका दिल हाथों में लेते, उसके सिर पर हाथ रखते। मगर हुआ इसका बिलकुल उलटा। लोग चौपाल पर जमा हुए और अब्दुल और उसकी बीवी की मौत पर टिप्पणी करने लगे।

मूंछों वाला क़ुरबान बोला– "ख़ुदा का क़हर टूटा है अब्दुल और उसकी बीवी पर। गुनाहों की सज़ा में दोनों को मरना पड़ा है।"

बूढ़ा शबराती खांसता हुआ कहने लगा– "मां-बाप की मौत की वजह वह लड़की चुन्नी है। याद नहीं उसकी पैदाइश जिस रात हुई थी उस रात चांद ग्रहण पड़ा था? वह

अभागिन है, मां-बाप को खा गई ।"

"हां, हां", सबने सिर हिलाए, "हमें याद है, तुम ठीक कहते हो, लड़की अभागिन है ।"

एक बोला– "बस्ती में अगर एक भी मनहूस व अभागी हो तो बलाएं अवतरित होती हैं और पूरी बस्ती उनकी लपेट में आ जाती है ।"

"बात तो ठीक है !" मुखिया ने कहा, "फिर तु क्या चाहते हो?"

"उसे बस्ती से निकाल दो", सबने एक साथ कहा ।

गांव में एक दीवाना-सा आदमी भी रहता था । उसका न कोई घर-बार था, न कोई रिश्तेदार । सारा दिन वह जंगलों मारा-मारा फिरता और शाम को किसी के भी दरवाज़े पर आकर पड़ा रहता और वहीं जो कुछ मिल जाता, खा लेता । वह उस गांव का रहनेवाला भी न था, बल्कि कहीं से घूमता-घामता आया था और फिर नियमित रूप से वहीं रहने लगा था । वह हमेशा अपनी ही धुन में मगन रहा करता था । वह हमेशा अपनी ही धुन में मगन रहा करता था । कभी मुंह ही मुंह में बड़बड़ाता और कभी क़हक़हे लगाने लगता ।

उस वक़्त वह भी चौपाल के एक कोने में बैठा गांवलावों की बातें सुन रहा था । जब लोगों ने लड़की को बस्ती से निकालने की बात की तो वह ज़ोर से हंस पड़ा ।

"उसे बस्ती से निकाल दो । वह अभागिन है ।" वह हंसते हुए बोला, "क्योंकि उसके मां-बाप मर गए हैं और वह चांद ग्रहण के वक़्त पैदा हुई थी । बहुत बड़ा जुर्म है न उसका? और फिर चांद ने यह बात तुम्हारे कान में कह दी कि लड़की अभागिन है? भला बताओ, अगर यह ग्रहण से दो-चार घड़ी आगे-पीछे पैदा हो जाती तो दुर्भाग्यपन से निजात न पा जाती । और हां, अगर तुम और तुम्हारी बीवियां मर जाएं तो अपनी औलादों को भी गांव से निकाल देना, वरना गांव पर बलाएं टूट पड़ेगी, समझे?"

लोग नागवारनी से चिल्लाए– "अरे, यह यहां, कहां से आ मरा ?"

"पागल है ।"

"निकालो यहां से ।"

और चुन्नी को गांव से निकाल दिया गया । वह अपनी इकलौती गाय की रस्सी थामे फूट-फूटकर रो रही थी । उसकी समझ में नहीं आता था कि कहां जाए?

इतने में वही पागल उस तरफ़ आ निकला और उसे देख कर बोला– "रो रही है ?"

"हां बाबा ! इस लम्बी-चौड़ी दुनिया में मेरा कहां ठिकाना है ! कहां जाऊं मैं?"

"हर जगह तेरा ठिकाना है ।" वह बोला । "नीले आसमान की यह छत तेरी ही है, बेटी !"

"मगर मैं भूखी मर जाऊंगी ।" चुन्नी से सिसकते हुए कहा ।

"क्या आज तक तू कभी भूखी रही है ?" पागल ने सवाल किया । फिर बोला, "मेरे पीछे चली आ ।"

चुन्नी गाय को लेकर उसके पीछे चल पड़ी ।

पगाल उसे लेकर उसी टीले पर जा पहुंचा जहां किसी ज़माने की एक झोपड़ी खड़ी थी । ऊंचा, नीचा, कच्चा फ़र्श, गिरती हुई दीवारें और जगह-जगह से टूटा हुआ छप्पर–शायद कभी कोई चरवाहा रहता रहा होगा उसमें ।

वह बोला, "ले बेटी, यहां तू इतमीनान से रह । यहां से तुझे कोई न निकालेगा ।"

चुन्नी हैरत से झोपड़ी की ख़स्ता हालत देखकर बोल उठी, "बाबा, मैं यहां अकेली रहूंगी? इस वीराने में, रात के अंधेरों में डर न लगेगा?"

वह हंस पड़ा । बोला– "बेटी, दुनिया में अकेला कोई है ही नहीं । रहा अंधेरों का सवाल तो ये हानिकारक नहीं । ख़तरनाक अंधेरे तो उस गांव में हैं जहां से तुझे निकाल दिया गया है, तू यहां रह । गाय का दूध गांव में जाकर बेच दिया कर, तू भूखी न रहेगी ।" ओर यह कहकर वह चला गया ।

चुन्नी उस दिन के बाद से गांव में दूध लेकर आले लगी । दूध के बदले उसे रोटी और ज़रूरत की दूसरी चीज़ें मिल जातीं, मगर औरतों की ज़बाने बदस्तूर चलती रहतीं ।

"टीले पर अकेली रहती है ।"

"डर भी तो नहीं लगता ।"

"हम तो एक दिन में ही सहमकर मर जाते ।"

"चुड़ैलों को भी कहीं डर लगता है ।"

"भला देखो तो, इतनी छोटी-सी लड़की और उस वीराने में अकेली रहती है, फिर भी कोई ग़म नहीं ।"

चुन्नी सिर झुकाए उनकी बातें सुनती रहती और उसकी पलकें भीग जातीं । मगर वह ख़ामोश रहती, कहती भी क्या? कौन सुनता उसकी बात?

वीराने में रहने पर मजबूर उन्हीं लोगों ने तो किया था, और वह भी बग़ैर किसी क़सूर के ।

कई बार गांव में यह बहस भी छिड़ी कि उस अभागिन

का दूध ही न लिया जाए। मगर चूंकि उसकी गाय का दूध बहुत-ही उम्दा क़िस्म का होता था। इसलिए बहस ख़त्म हो गई। किसी ने यह भी कहा कि अभागिन लड़की है, गाय नहीं। इन्सान अभागी होता है, जानवर नहीं।

इसी तरह दिन गुज़रते गए। हफ़्ते गुज़रे, फिर महीनें।

मनहूस लड़की को ग़ांव से निकालने के बाद गांव से नहूसत दूर न हुई। वही ग़रीबी, वही बार-बार की मुसीबतें। कभी पानी की कमी, कभी बाढ़ और कभी वबाएं। लोग इस ख़याल से दिल बहला लेते थे कि अगर चुन्नी को गांव से न निकाला गया होता तो गांव से न निकाला गया होता तो गांव के दुख और भी बढ़ जाते, हो सकता है आसमान टूट पड़ता और ज़मीन फट जाती।

गांव पर सुबहें आती रहीं और शामें धुंधलके बिखेरती रहीं। सितारों के क़ाफ़िलें आसमान की शाहराहों पर से हर रात गुज़रते रहे।

एक रात लोग हमेशा की तरह चौपाल पर इकट्ठा थे और कुछ इस क़िस्म की बातें हो रहीं थी :

"तुमने सुना, टीलेवाली झोपड़ी के आस पास रात के वक़्त कुछ साए-से देखे गए हैं।"

"कलुआ धोबी भी यही कह रहा था। टीले के दूसरी तरफ़ तालाब पर कपड़े धोने जाता है। एक बार दिन छुप गया लौटते-लौटते, तभी उसने झोपड़ी के पास हिलते-डुलते साए से देखे थे।"

"भला क्या हो सकता है ?"

"दिन के उजाले में तो वहां कुछ भी नहीं नज़र आता।"

"पागल वहां घूमता फिरता रहता होगा।"

"लेकिन जिस रात कलुआ धोबी ने साए देखे थे, उस रात को पागल भोंदू हलवाई की दुकान की भट्टी के सामने सो रहा था।"

"न जाने क्या हो ! हमारी बला से।"

लोग इसी तरह चर्चा करते रहे।

देखते ही देखते हवा तेज़ हो गई, आसमान बादलों से घिर गया। बिजली चमकने लगी ओर बादलों की गड़-गड़ाहट से ज़मीन दहलने लगी। बूंदा-बांदी शुरू हुई और मूसलाधार बारिश होने लगी। सड़क और गलियारों में नदी-नाले बहने लगे, सिवाए बारिश के शोर के और कोई आवाज़ सुनाई नहीं दे रही थी। हवा की तेज़ी से पेड़ इस तरह हिल रहे थे जैसे जड़ों से ही उखड़ जाएंगे।

मुखिया ने कहा– "आज की बारिश में टीलेवाली छोपड़ी शायद ही बाक़ी रह पाए।"

"हां, रहीमू चौधरी ने लम्बा सांस भरा, "न जाने उस बच्ची पर क्या गुज़रेगी।"

"अरे हमें क्या ?" बुन्दू लोहार बोल पड़ा, "हमें उसकी परवाह क्यों हो ?"

इन्सानी हमदर्दी के जज़्बे बिजली के झमाकों की तरह थे जो एक पल के लिए दिखाई देते और फिर अंधेरों में खो जाते– बड़े गहरे थे उनके दिलों के अंधेरे। इन्सानियत के झमाकों का पल भर में खा जाते थे। उसी समय एक अजीब-सी घटना हुई।

चिरागी जो मवेशियों के ख़रीदने और बेचने का काम करता था, पानी में शाराबोर, हांफता कांपता हुआ आया और मारे घबराहट के अटक-अटक कहने लगा–

"भाइयों ! मैं... चांद नगर... मवेशियों के बाज़ार से... लौट रहा था... रास्ते में... बारिश ने आ लिया... टीले के पास... से जो गुज़रा... नज़र ऊपर उठाई... बिजली का झमाका हुआ... मैंने देखा... झोपड़ी के चारों तरफ़... भ... भूत.... !"

चिरागी को चक्कर आ गया। उसका बदन थर-थर कांप रहा था।

चौपाल पर एकदम सन्नाटा छा गया। और फिर सभी बोल उठे।

"हम पहले ही समझ गए थे, लड़की चुड़ैल है।"

"भूतों के साए में रहनेवाली भूतनी ही हो सकती है।"

"मेरा विचार है वे भूत नहीं, डाकू होंगे, लड़की डाकुकों की साथी है।"

"जादूवाली है, तभी तो निडर होकर रहती है। दरिंदे भी उसे नुक़सान नहीं पहुंचा सकते, जबकि झोपड़ी में किवाड़ तक नहीं है।"

"उसे टीले पर से भगाओ वरना गांव पर कोई बला टूटेगी।"

"चिरागी थोड़े ही झूठ कर रहा है।"

चौपाल के बाहर पागल बारिश में भीगता हुआ कह रहा था– "अंधेरों के बाश्न्दे हो तुम लोग। भूतों के अलावा तुम्हें और क्या नज़र आएगा। अरे अंधो ! भूत क्या तुम से भी बुरे होंगे जो एक बेसहारा बच्ची को अपने साए में रखे हुए हैं ?"

लोग चिल्लाए– "अरे यह फिर चला आया। चल भाग यहां से।"

अचानक मुखिया के दिल में न जाने क्या विचार आया कि वह उठा, लालटेन एक हाथ में पकड़ी और दूसरे हाथ में लाठी ली ।

"मैं ख़ुद जाकर पता लगाता हूं कि यह क्या भेद है ।" उसने कहा ।

लोगों ने हैरानी से कहा– "अकेले ही? ऐसी तुफ़ानी रात में? भूत-प्रेत का मामला है !"

"जब भूत एक छोटी-सी लड़की का कुछ न बिगाड़ सके तो मेरा क्या बिगाड़ लेंगे ! मैं तो उससे बड़ा हूं । तुम बेफ़िक्र रहो, मुझे कुछ नहीं होगा ।" मुखिया बोला ।

वह बाहर आया तो बारिश कुछ थम गई थी । बादल अब भी आसमान में गड़गड़ा रहे थे । मेंढकों की टरटराहट हर तरफ़ गूंज रही थी ।

वह कच्ची सड़क के पानी से भरे गढ्ढों से बचता हुआ गांव से बाहर निकल आया । अब उसके क़दम टीले की तरफ़ उठ रहे थे, उस टीले की तरफ़ जहां शाम में धुंधलके फैलने के बाद कोई जाने की हिम्मत नहीं करता था । सुनसान, वीरान और भयानक टीला जो शायद भूतों या डाकुओं का ठिकाना था ।

चलते-चलते उसने सोचा, "अगर वहां वाक़ई भूत हुए तो ?"

"देखा जाएगा" उसने बेख़ौफ़ी से कांधे को झटक कर ख़ुद से कहा, "जो कुछ भी है आज उसका राज़ मालूम हो जाएगा ।"

वह तेज़ी से क़दम बढ़ा रहा था । लालटेन को अपनी चादर की आड़ में कर रखा था ताकि वह बुझ न जाए । हवा अब भी साएं-साएं चल रही थी । बिजली ज़ोर से चमकी और फिर बादलों की गरज ने ज़मीन को दहला दिया । वह उछल पड़ा, मगर फिर दूसरे ही क्षण उसके क़दम आगे की तरफ़ उठने लगे ।

जंगल में गीदड़ों की 'हाओ-हाओ' हर तरफ़ सुनाई दे रही थी । कभी-कभार किसी दरिन्दे की दहाड़ भी गूंज जाती । बारिश सर पर खड़ी थी । वह किसी तरह टीले तक पहुंच ही गया यहां से चढ़ाई शुरू होती थी । अंधेरों में डूबी हुई चोटी पर झोपड़ी ख़ामोश खड़ी थी ।

वह टीले के ऊपर चढ़ तो गया मगर उसका दिल ज़ोर-ज़ोर से धड़कने लगा । बदन पर रोंगटे कांटों की तरह खड़े हो गए, वह ठिठक कर रुक गया ।

"भाग जा, भाग जा !" उसका दिल कह रहा था, "यह किन बलाओ में आ फंसा है ।"

उसने अंधेरे में भी देख लिया था । झोपड़ी के चारों तरफ़ कुछ साए से खड़े थे । नहीं, नहीं वे शायद इन्सान ही थे । बिजली चकती तो उसने देखा, उनके बदन पर सफ़ेद लिबास थे, और कंधों पर नंगी तलवारें । वे मूर्तियों की तरह चुपचाप थे । हिम्मत करके उसने क़दम आगे बढ़ाया ।

"ख़बरदार !" उनमें से एक ने मुखिया को ललकारा, "वह सो रही है, झोपड़ी से दूर रहो ।"

उसने कहा– "यक़ीन करो, मैं उसे नुक़सान पहुंचाने नहीं आया । बस एक नज़र देख लेने दो ।"

"ठीक है, देख लो ! मगर उसकी नींद न ख़राब हो ।"

उसने दरवाज़े पर खड़े होकर अन्दर देखा तो हैरत के मारे लालटेन उसके हाथ से छूटकर गिरते-गिरते बची । कहीं वह ख़्वाब तो नहीं देख रहा था ? दांतों से अपनी उंगली को काटकर देखा और दर्द से बिलबिला उठा ।

उसकी निगाहों के सामने एक महल का शानदार कमरा था । जिसके फ़र्श पर नर्म और मोटा क़ालीन बिछा था । दीवारें संगमरमर की थीं जिन पर रंगीन बेल-बूटे बने हुए थे, बिल्लौरे, झाड़-फानूस लटक रहे थे । काफ़ूरी शमएं सफ़ेद ठंडी रोशनी बिखेर रही थीं, और कमरे के बीचों बीच एक ख़ूबसूरत छपरघट पर रेशमी परदों के अंदर, चुन्नी शहज़ादियों जैसे कपड़े पहने मीठी नींद सो रही थी ।

न जाने क्या जादू था !

जब वह वापस जाने लगा तो उन भेदी सायों या इन्सानों में से एक ने कहा–

"ठहरो !"

वह सहम कर रुक गया ।

"जो कुछ भी तुमने देखा वह राज़ ही रहे– समझे !"

उसने सिर हिला दिया और वापसी के लिए धीरे-धीरे क़दम बढ़ाने लगा । आख़िर वह गांव वापस लौट आया ।

सारी रात वह एक क्षण भी न सो सका । टीले पर वे साए, झोंपड़ी के अन्दर का वह अजीबो ग़रीब मंज़र सब के उसकी आंखों के सामने घूमता रहा । किसी तरह रात काटी, जैसे ही गांव में मुर्ग़ों ने बांगें देनी शुरू कीं, वह लाठी उठाकर फिर टीले की तरफ़ चल पड़ा ।

वहां पहुंचते-पहुंचते दिन का उजाला फैलने लगा । रात की बारिश की वजह से रास्ते में कीचड़ भरी थी । सूखे

तालाब भी लबालब भर गए थे । जब वह टीले पर पहुंचा तो वहां कोई भी न था ।

झोपड़ी के अन्दर झांका । वही टूटा हुआ फ़र्श, आधा छप्पर, टूटी-फूटी दीवारें । छप्पर के नीचे घास-फूंस पर चुन्नी अपने फटे-पुराने कपड़ों में बेख़बर सो रही थी । वहीं एक कोने में उसकी गाय बैठी थी । फ़र्श पर कीचड़ ही कीचड़ था ।

"चुन्नी ! चुन्नी !" मुखिया ने उसे झंझोड़ा । वह आंखें मलती हुई उठ बैठी और मुखिया को देखकर हैरान रह गई ।

"रात में नींद कैसी आई ?" मुखिया ने पूछा ।

"वैसी ही जैसे रोज़ आती है ।" चुन्नी ने जवाब दिया ।

"रात को तूफ़ान भी तो आया था ।" मुखिया ने उसके चेहरे को ग़ौर से देखते हुए कहा ।

वह हंस कर बोली– "चाचा, जब नींद आ जाए तो क्या आंधी और क्या तूफ़ान !"

अब तो मुखिया और भी चकराया । वह भी वहीं बैठ गया और बोला–

"बेटी ! एक बात पूंछू ?"

"हां, हां !"

"रात को तुझे डर नहीं लगता ?"

"भला ऐसे वीराने में किसे डर न लगेगा ?" चुन्नी ने जवाब दिया ।

मुखिया ने फिर पूछा– "तो फिर तू यहां रातें कैसे गुज़ारती है ?"

वह हंसकर बोली, "बस यूं ही । डर तो बहुत लगता है, मगर नींद डर को ख़त्म कर देती है ।"

मुखिया गहरी सोच में डूब गया, फिर बोला– "अच्छा, ज़रा यह तो बता कि सोने से पहले तू क्या करती है ?"

चुन्नी ने बड़ी मासूमियत से कहा– "कुछ भी तो नहीं । बस अंधेरे में थर-थर कांपते हुए पयाल पर लेटकर आंखे बंद कर लेती हूं और फिर मेरा दिल पुकार उठता है– ऐ अंधेरों और उजालों के मालिक ! इस अंधेरी और भयानक रात में जबकि बच्चे मांओं के बाजुओं की पनाह में बेफ़िक्र सो रहे होंगे, यह छोटी-सी बच्ची अकेली, बेसहारा, बेघर और बेबस है । सुना है, जिन्हें कहीं पनाह नहीं मिलती वे तेरी पनाह में आते हैं । यह डरावने अंधेरे, यह वीरानी, यह सरसराती हवाएं, यह जंगल और इसमें दहाड़ते जानवर, और इनके बीच में अकेली ! सुना है तू कभी किसी को अकेला नहीं छोड़ता । ऐ आसमान की अंधेरी राहों में सितारों के चिराग़ जलानेवाले ! क्या तेरे उजालों में मेरा कोई हिस्सा नहीं ? मुझे हिफ़ाज़त कर, मुझे अपनी पनाह में रख– मुझे अपनी पनाह में रख–मुझे हौसला दे । तेरे सिवा मेरा और कोई नहीं । यह टूटी हुई झोपड़ी, जिसमें किवाड़ भी नहीं है, बिलकुल असुरक्षित हूं । मेरी निगहबानी कर....." –और फिर वह चुप हो गई ।

मुखिया के दिमाग़ में आंधियां-सी चल रही थीं, तूफ़ान उठ रहे थे । उसका पूरा बदन कांप रहा था ।

"फिर क्या करती है, तू ?" उसने पूछा ।

"फिर आंखों में नींद भर आती है और न जाने कब रात बीत जाती है ।"

मुखिया ने फिर कांपती हुई आवाज़ में सवाल किया– "क्या तूने कभी रात को झोंपड़ी के आस-पास कुछ देखा है ?"

"हां"

"क्या"

"अंधेरे"

और वह खिलखिला कर हंस पड़ी । मुखिया की समझ में सारी बात आ गई । उसकी आंखों से आंसू बहने लगे ।

उसी शाम चौपाल पर सारा गांव था और मुखिया के पास चुन्नी बैठी हुई थी ।

मुखिया कह रहा था, "तुम सब लोग कान खोलकर सुन लो, चुन्नी आज से मेरी बेटी है, और मेरे घर में ही रहेगी ।"

कुछ आवज़ें सुनाई दीं– "मगर यह तो अभागिन और मनहूस है । चांद ग्रहण की रात को पैदा हुई थी । मां-बाप को खा गई ।"

मुखिया ने दहाड़कर कहा– "जिहालत की बातें न करो । याद रखो, जिसके आदेश से चांद-सूरज को ग्रहण लगता है, जो हर जानदार को जिलाता और मारता है, वही इसका भी निगहबान है । वह इससे बहुत प्यार करता है क्योंकि तुमने इसे अपना प्यार नहीं दिया है । जिन्हें तुम ठुकरा देते हो उन्हें उसकी रहमत बढ़कर अपनी गोद में ले लेती है । किसने तुम्हें यह हक़ दिया है कि उसके बंदों के बारे में फ़ैसला करो? क्या हक़ है तुम्हें इसे गांव से निकालने का ? ख़बरदार जो कभी किसी ने जिहालत की बातें कीं !'

भीड़ पर गहरा सन्नाटा छाया हुआ था ।

आधार की अनिवार्यता पर सवाल

■ रीतिका खेड़ा

21 अप्रैल 2017 को जस्टिस ए॰के॰ सीकरी तथा जस्टिस अशोक भूषण की खंडपीठ ने आयकर अधिनियम में किये गये नवीनतम संशोधन को चुनौती देनेवाली दो रिट याचिकाओं को सुना ।

इस अधिनियम में धारा 139एए को जोड़ कर यह संशोधन आयकर रिटर्न दाख़िल करते वक़्त एवं स्थायी खाता संख्या (पैन) हासिल करने और उसे क़ायम रखने के लिए आधार/विशिष्ट पहचान (यूआइडी) का उल्लेख अनिवार्य बनाता है । इसके अलावा, यह भारत में किसी आयकर दाता के लिए आधार/यूआइडी हेतु अपना नामांकन न कराने को एक दंडनीय अपराध करार देता है । ये दो याचिकाएं सीपीआइ नेता बिनय विश्वम (जिनका प्रतिनिधित्व वरीय अधिवक्ता अरविंद दातार कर रहे हैं) और सुधीर वोमबटकेरे तथा बेजवाड़ा विल्सन (जिनका प्रतिनिधित्व वरीष्ठ अधिवक्ता श्याम दीवान कर रहे हैं) ने दायर की हैं ।

यह मामला सिर्फ़ उनके लिए अहम नहीं है जो आयकर देते हैं और जिनके पास पैन कार्ड है, बल्कि ऐसा भारतीय लोकतंत्र के लिए भी है । 21 अप्रैल को दलीलों के दौरान जस्टिस सीकरी ने सरकार का प्रतिनिधित्व करते महान्यायवादी (एजी) से पूछा कि जब कोर्ट के ऐसे अंतरिम आदेश हैं, जो सरकार को इसकी अनुमति नहीं देते, तो वह कैसे किसी को आधार/यूआइडी के लिए बाध्य कर सकती है?

स्मरणीय है कि वर्ष 2015 में सुप्रीम कोर्ट ने ये आदेश दिये थे कि आधार केवल छह कल्याण योजनाओं में ऐच्छिक रूप से ही प्रयुक्त किया जा सकता है । एजी (अटॉर्नी जनरल) ने इस संशोधन के पक्ष में तीन दलीलें दीं- पहली, सुप्रीम कोर्ट ने अंतरिम आदेश आधार अधिनियम 2016 लागू होने के पूर्व दिये थे और वे आधार के संबंध में किसी क़ानून की ग़ैर-मौजूदगी पर आधारित थे । अधिनियम लागू होने के बाद, ये आदेश प्रभावी नहीं रहे, दूसरी, 6 फ़रवरी, 2017 को सुप्रीम कोर्ट ने लोकनीति फाउंडेशन मामले में सिम कार्ड के सत्यापन हेतु आधार/यूआइडी के अनिवार्य उपयोग का समर्थन किया था और, तीसरी, 27 मार्च 2017 को अपनी मौखिक टिप्पणी में सुप्रीम कोर्ट ने यह संकेत किया था कि आधार/यूआइडी को कल्याण योजनाओं का लाभ उठाने के लिए अनिवार्य नहीं बनाया जा सकता, पर अन्य उद्देश्यों के लिए अनिवार्य क़रार दिया जा सकता है ।

कोर्ट को जो कुछ बताने में एजी किल रहे, वह यह था– पहला, सितंबर 2016 में आधार अधिनियम पारित होने के बाद भी, कोर्ट ने आधार के ऐच्छिक होने के विषय में अपने पूर्व आदेश को दोहराया था, दूसरा, लोकनीति मामले में, एजी ने कोर्ट को यह बताया था कि सरकार ने 'मोबाइल कनेक्शन जारी करने के लिए 16 अगस्त 2016 को आधार आधारित इ-केवाइसी की शुरुआत की है,' और यह कि 'एक नया टेलीफोन कनेक्शन हासिल करने के लिए वर्तमान में आधार कार्ड या बायोमेट्रिक प्रमाणीकरण अनिवार्य नहीं है ।'

उसके बाद दिया गया सुप्रीम कोर्ट का आदेश सिम कार्ड प्राप्त करने अथवा उसे इस्तेमाल करने के लिए आधार/यूआइडी को अनिवार्य बनाने की स्वीकार्यता अथवा वांछनीयता का समर्थन नहीं करता और तीसरा, एजी ने सुप्रीम कोर्ट की जिस मौखिक टिप्पणी का संदर्भ दिया, वह वरीय अधिवक्ता दीवान के द्वारा 'मेंशनिंग' के दौरान दी गयी थी ।

पीठ द्वारा कोर्ट के पूर्व आदेश को समझने की कोशिश के दौरान पीठ एवं दीवान के बीच एक संक्षिप्त संवाद हुआ था, जिसमें मुख्य न्यायाधीश द्वारा इस विषय में की गयी कुछ टिप्पणियां शामिल थीं कि क्या 15 अक्तूबर, 2015 का आदेश संभवत: सामाजिक कल्याण एवं लाभ योजनाओं पर ही लागू होता है, या कि आयकर दाख़िल करने जैसी अन्य गतिविधियों पर । प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया (पीटीआइ) समेत कई मीडिया संगठनों ने इस टिप्पणी की ग़लत रिपोर्ट की और उन्हें निर्णायक अवलोकन क़रार देते हुए न्यायिक आदेश के बराबर मान लिया, जो त्रुटिपूर्ण है ।

कोर्ट में हुई उपर्युक्त चर्चा का यह निहितार्थ नहीं निकाला जा सकता कि कोर्ट ने आयकर रिटर्न दाख़िल करने के लिए आधार को अनिवार्य करने की अनुमति दे दी ।

नयी मुद्रा 'बिट कॉइन'

■ संकलित

बिटकॉइन का आविष्कार किसने किया, यह ठीक-ठीक पता नहीं है । कुछ लोगों का मानना है कि इसका आविष्कार किसी अज्ञात प्रोग्रामर ने किया था, तो कुछ लोगों का कहना है कि सातोशी नाकामोटो नाम के प्रोग्रामरों के समूह ने । इस आभासी मुद्रा का सबसे पहले उपयोग 3 जनवरी, 2009 को किया गया था, लेकिन इसकी लोकप्रियता में इज़ाफ़ा होना वर्ष 2012 से शुरू हुआ । इसकी लोकप्रियता का अंदाज़ा इसी से लगाया जा सकता है कि वैंकूवर में वर्ष 2013 में बिटकॉइन के बदले भौतिक मुद्रा देने का दावा करने वाला एक एटीएम लगाया गया था । फिलहाल, यह दुनिया की सबसे महंगी मुद्रा है और विश्व की विभिन्न करेंसियों की मज़बूती के बरक्स इसके मूल्य का आकलन प्रतिदिन किया जाता है ।

फ़रवरी, 2015 तक लगभग एक लाख व्यापारी और खुदरा बिक्रेता बिटक्वाइन को भुगतान के तौर पर स्वीकार कर चुके थे । कैंब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा इस वर्ष कराए गए एक सर्वेक्षण के मुताबिक़ लगभग 29 से 58 लाख लोग आभासी मुद्रा का इस्तेमाल कर रहे थे । भारत में भी लाखों लोग इसका इस्तेमाल कर रहे हैं । तेईस मई, 2017 तक बिटकॉइन के डेढ़ करोड़ उपभोक्ता हो गए थे ।

बिटकॉइन का इतिहास सिर्फ़ आठ साल पुराना है । सबसे पहले इसकी चर्चा 2008 में हुई थी । शुरुआती दौर में तकनीकी तौर पर इसकी संख्या को लेकर दिक़्क़तें आई थीं । बिटकॉइन की मौजूदगी 2009 से है, लेकिन 2011 तक यह अपनी पहचान बनाने में सफल नहीं हो पाया था, क्योंकि इसकी क़ीमत प्रति कॉइन महज दो डॉलर थी । 2013 तक आते-आते इसकी क़ीमत बढ़ कर बीस डॉलर प्रति कॉइन हो गई । आज यूरो, अमेरिकी डॉलर आदि की तुलना में बिटक्वाइन के मूल्य में तेज़ी से इज़ाफ़ा हो रहा है । भारत में 23 मई, 2017 को एक बिटकॉइन की क़ीमत लगभए एक लाख चौवन हज़ार रुपए थी । डॉलर में इसकी क़ीमत में हर मिनट बदलाव आता रहता है ।



भारतीय रिजर्व बैंक ने बिटक्वाइंस समेत तमाम आभासी मुद्राओं के उपयोग करने वालों, धारकों और कारोबारियों को इनसे जुड़े संभावित वित्तीय, परिचालनात्मक क़ानूनी, उपभोक्ता संरक्षण और सुरक्षा जोखिमों को लेकर आगाह किया है । बावजूद इसके एक अनुमान के मुताबिक़ भारत में फिलवक़्त इसके पांच लाख से ज़्यादा उपयोगकर्ता हैं और प्रतिदिन ढाई हज़ार लोग इसमें शामिल हो रहे हैं । इसलिए, आभासी मुद्राओं की मौजूदा रूपरेखा पर ग़ौर करने के लिए 12 अप्रैल, 2017 को भारत सरकार ने आभासी मुद्रा पर विशेष सचिव, आर्थिक मामले की अध्यक्षता में एक अंतर-अनुशासनात्मक समिति गठित की है, जिसमें आर्थिक मामलों का विभाग, वित्तीय सेवा विभाग, राजस्व विभाग (सीबीडीटी), गृह मंत्रालय, इलेक्ट्रॉनिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारतीय रिजर्व बैंक, नीति आयोग और भारतीय स्टेट बैंक के प्रतिनिधि शामिल हैं । यह समिति देश-विदेश में आभासी मुद्राओं से संबंधित समस्याओं, जैसे उपभोक्ता संरक्षण, मनी लाड्रिंग आदि का निष्पादन करेगी । साथ ही, यह समिति आभासी मुद्राओं से संबंधित ऐसे किसी भी मसले पर ग़ौर करेगी, जो प्रासंगिक हो सकता है । यह समिति तीन महीने के अंदर अपनी रिपोर्ट सरकार को देगी ।

बिट कॉइन की कार्यप्रणाली

बिटकॉइन डिजिटल टोकन पर चलने वाली आभासी मुद्रा है । यह एक ऐसे ट्रांजेक्शन लेजर पर काम करता है, जिसे इसके उपयोगकर्ता संयुक्त रूप से नियंत्रित करते हैं

और इसके बही को क्रिप्टोग्राफिक तकनीक के जरिए जांचा-परखा जाता है । इसकी वजह से इसे क्रिप्टो करेंसी भी कहते हैं । इसके लेन-देन के लिए डिजिटल रूप से हस्ताक्षर किए गए संदेश को प्रसारित किया जाता है, जिसकी सत्यता की जांच विश्व भर में फैले कंप्यूटर के विकेंद्रीकृत नेटवर्क के जरिए की जाती है ।

हालांकि, इसमें एक ही आभासी मुद्रा के दो बार इस्तेमाल करने की समस्या आती है, जिसे डबल स्पेंडिंग कहते हैं, लेकिन ख़ासतौर से डिजाइन किए गए कंप्यूटर की मदद से इसकी कॉपी बना कर इसके दोबारा इस्तेमाल को रोका जाता है । कंप्यूटर द्वारा की जाने वाली इस प्रक्रिया को माइंनर्स कहते हैं । बिटकॉइन के इस्तेमाल में ट्रॉजेक्शन का हिसाब रखा जाता है और लेन-देन को नेटवर्क नोड द्वारा सत्यापित किया जाता है, जिसका विवरण पब्लिक डिस्ट्रीब्यूटेड लेजर में दर्ज होता है, जिसे ब्लॉक चेन कहते हैं । ब्लॉकचेन का रखरखाव किसी केंद्रीय इकाई द्वारा नहीं, बल्कि कई जगहों पर बंटे कंप्यूटर नेटवर्क द्वारा किया जाता है, जो बिटक्वाइन के क्रिप्टोग्राफिक सूचनाओं को संभाल कर रखते हैं । बिटकॉइन से जुड़े लोगों ने इसे डिजिटल गोल्ड की संज्ञा दी है । चूंकि यह प्रणाली बिना सेंट्रल रिपोजटरी के कार्य करती है, इसलिए इसे विकेंद्रित डिजिटल करेंसी भी कहते हैं । इसे ऑनलाइन एकाउंटिंग बुक भी कहा जाता है । यही नहीं, किसी खास व्यक्ति ने बिटक्वाइन से कितनी बार लेन-देन की, इसका भी इसके तहत रिकॉर्ड रखा जाता है ।

यह पारंपरिक मुद्राओं के विपरीत किसी देश या बैंक से संबद्ध नहीं होता और न ही इसका कोई भंडार होता है । बिटकॉइन का लेन-देन पूरी तरह आपसी समझ और विश्वास पर आधारित है, जिसका लेन-देन वेबसाइट पर किया जाता है, जो उपयोगकर्ता के बीच सीधे होता है, यानी इसके लेन-देन में बिचौलिए की कोई भूमिका नहीं होती । इसका स्वरूप मोबाइल एप या कंप्यूटर प्रोग्राम की तरह है, जिसके तहत उपयोगकर्ता को बिटकॉइन वॉलेट मुहैया कराया जाता है, जो उपयोगकर्ता को बिटक्वाइन भेजने और प्राप्त करने में समक्ष बनाता है । बिटकॉइन लेन-देन के जरिए ख़रीदे जाते हैं । इस प्रक्रिया के अंतर्गत पहले एक खाता खोला जाता है, फिर उसमें राशि अंतरित की जाती है, ताकि बिटक्वाइन ख़रीदे जा सकें । इसका लेन-देन प्रतिभागियों द्वारा न्यून शुल्क पर किया जाता है । इसका एक बार भुगतान करने के बाद उसे वापस नहीं किया जा सकता । इसके लेन-देन में उपयोगकर्ता की निजता सुरक्षित रहती है । सार्वजनिक रूप से इसका लेन-देन होने से यह डाटाबेस में उपलब्ध होता है, लेकिन इसके उपयोगकर्ता अपने लेन-देन पर ख़ुद भी नियंत्रण रख सकते हैं ।

बिटकॉइन को रखने के लिए उपयोगकर्ताओं को 27-34 अक्षरों या अंकों के कोड के रूप में अपने पते को निर्बंधित करना होता है, जिस पर बिटकॉइन भेजे जातें । इस पता को बिटकॉइन वॉलेट में सुरक्षित रखा जाता है, इसी में बिटकॉइन भी रखे जाते हैं । इससे जुड़े लोगों की पहचान को गुप्त रखा जाता है । क्रेडिट या डेबिट कार्ड से लेन-देन करने पर पांच प्रतिशत कर देना पड़ता है, लेकिन बिटकॉइन के लेन-देन पर कोई कर नहीं देना होता । पेपाल, माइक्रोसॉफ्ट, डेल, न्यूयेग, इक्सपीडिया, डिश नेटवर्क समेत दुनिया की कई कंपनियां बिटकॉइन के जरिए लेन-देन करती हैं । बिटकॉइन के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए माइनर को पुरस्कार देने का भी चलन है ।

आलोचना होने लगी

भूख है बेचारगी है हरतरफ़
संक्रमण की त्रासदी है हरतरफ़
युद्ध की दीवानगी है हरतरफ़
सनसनी ही सनसनी है हरतरफ़
ये करूं या ना करूं या क्या करूं
फितरतन बेचीदगी है हरतरफ़
शुक्र है अल्लाह का वो मौजूद है
वरना धन की बंदगी है हरतरफ़
प्यास दरिया के मुहाने पर खड़ी
और तट पर गंदगी है हरतरफ़
लूटमारी अब हमारा शौक़ है
सेंध नगरी में लगी है हरतरफ़
एक साधक साधना में रम गया
आलोचना होने लगी है हरतरफ़
नंबरों का सिलसिला है ज़िंदगी
हाथ सबके डायरी है हरतरफ़ ।

■ **योगेन्द्र मौदगिल**

वरिष्ठजनों को सहानुभूति नहीं, सम्मान दीजिए

■ राखी बंसल

आज की ज़िन्दगी में आपाधापी है, भागदोड़ है और अधिक से अधिक भौतिक सुविधाएं पा लेने की एक निरंतर चलने वाली होड़ है । ऐसी ज़िन्दगी में सक्रियता आवश्यक है और तो सक्रियता खो बैठते है वे हाशिये पर सरक जाते हैं या सरका दिये जाते हैं । आज हर भावना तभी तक सार्थक रह पाती है जब तक उसकी कोई उपादेयता है । उपयोगितावाद पर टिकी इस उपभोक्ता संस्कृति में हर वह चीज़ डस्टबिन में डाल देने लायक़ हो जाती है । जो अपनी उपादेयता को खो देती है । हमारे समाज में बड़े-बूढ़े एक ग़ैर ज़रूरी चीज़ होकर रह गये हैं । और उनकी चिंता किसी को भी नहीं है । हमारे देश में बूढ़ों की तादाद दूसरे नंबर पर है और यह संख्या जनसंख्या बढ़ने के साथ-साथ निरंतर बढ़ती जा रही है ।

शहरीकरण, आधुनिकीकरण और औधोगिकीकरण से जिन जीवन मूल्यों का निर्माण हुआ है उसने बूढ़े लोगों के जीवन को अनेक भावनात्मक दुष्वारियों से भर दिया है । स्थिति यह है कि धन सम्पदा है, उससे मिलने वाले साधन हैं, पहले की अपेक्षा बेहतर चिकित्सा सुविधाएं है, लेकिन परिवार के बूढ़े लोगों की देखभाल के लिए न तो समय है, न ही ऐसी कोई सामाजिक बाध्यता जिसके चलते बूढ़े लोगों की सही देखभाल आवश्यक हो जाए ।

आज बूढ़ों का जीवन और भी असुरक्षित हो गया है । महानगरो का जो जीवन है उसमें बुढ़ापा एक अभिशाप की तरह है । लड़का भी कामकाजी है, बहू भी कामकाजी है । दोनों ही नियत समय पर काम पर निकल जाते हैं, बच्चे स्कूल चले जाते हैं, भरा-पूरा घर होने के बावजूद वृद्धजन दिन में अधिकांश समय सन्नाटा, एकाकीपन और अपनी ही सांसों की प्रतिध्वनि सुन-सुनकर दिन काटा करते हैं ।

किसी भी महानगर की कॉलोनी में यदि दिन के समय सर्वेक्षण किया जाए तो ऐसे अनेक घर मिल जाएंगे जहां बूढ़े एकाकीपन में अपने जीवन के शेष दिनों को काटते हुए मिलेगे । बुढ़ापे में सबसे अधिक आवश्यकता स्नेह और सान्निध्य की होती हैं और यही दो चीज़ें ऐसी हैं जिनका आधुनिक महानगरीय जीवन में यदि सर्वथा अभाव न भी हो तो भी दुर्लभ अवश्य है ।

एक समाज सेवी संगठन द्वारा हाल में ही किया गया एक सर्वेक्षण बताता है कि 60 वर्ष या इससे ऊपर के 45 प्रतिशत बूढ़े एक ऐसी मानसिक व्याधि के शिकार हो जाते हैं । जिसका कारण एकाकीपन होता है । एकाकीपन के कारण ही बूढ़ो को उच्च रक्त चाप, हृदय रोग और गहरी निराशा जैसे रोग घेर लेते हैं ।

हमारे संविधान निर्माताओं ने बूढ़े लोगों के प्रति राज्य की ज़िम्मेदारी निर्धारित अवश्य की है, लेकिन इस दिशा में कोई सार्थक प्रयास अभी तक नहीं हो पाया है । हमारे आधुनिक हो जाने के तमाम दावों के बावजूद अभी तक हमारे दृष्टिकोन में वैज्ञानिक सोच की भारी कमी है । नौकरी से रिटायर होते ही अधिकांश लोग यह मान लेते हैं कि हमने जो करना था कर लिया बस अब तो मौत का इंतिज़ार करना है । जबकि रिटायरमेंट का एक अर्थ यह भी लिया जा सकता है कि एक बंधी-बंधायी ज़िन्दगी की ढर्रा समाप्त हुआ जब जीवन उन्भुक्त है ।

नौकरी में रहते अनेक बंधनों के कारण जो मनचाहा नहीं कर पाये थे रिटायरमेंट के बाद कार्यों को कर लेने का अवसर मिलता है । यदि रिटायरमेंट के बाद भी आदमी अपने आपको अपने मनचाहे कामों में लगाये रखे तो शायद बुढ़ापा इतना कठिन न हो । वास्तविकता यह है कि आदमी कभी भी मौत से पहले रिटायर नहीं हुआ करता । एक सांस

के शेष रहते तक जीवन होता है और जब तक जीवन है जब तक सक्रियता को तिलांजलि नहीं दी जानी चाहिए । बूढ़े हो जाने का यह अर्थ नहीं होता कि आदमी अपनी ऊर्जा का इस्तेमाल बंद कर दें और निश्चय बैठकर मौत की घड़ी का इंतिज़ार करे ।

सर्वेक्षण बताते हैं कि वे लोग जो अपने आपको गतिविधियों में लगाये रहते हैं, लम्बी उम्र पाते है । वैसे भी जीवन का तो अर्थ ही होता है बहता हुआ पानी, जिसमें ठहर जाने का कोई अवसर नहीं होता । बूढ़े लोगों के प्रति सामाजिक सरोकारों की नये सिरे से पड़ताल का समय आ गया है क्योंकि बूढ़ा एक न एक दिन सबको ही होना है । यह बात भी एकदम साफ़ है कि जैसा व्यवहार हम अपने बुज़ुर्गों के लिए करेंगे ठीक वैसा ही व्यवहार हमारी सन्तति भी हमारे करेगी ।

बूढ़े लोगों को बोझ या फ़ालतू चीज़ समझने की सोच को भी बदलना है क्योंकि बूढ़ा व्यक्ति चाहे शारीरिक रूप से कितना भी अशक्त क्यों न हो अनुभवों की पूंजी उसके पास होती है । बूढ़े लोगों के अनुभवों का लाभ उठाने की समझ और सहृदयता किसी परिवार में एक बूढ़े की उपस्थिति एका बड़ा संबल बन जाती है । बड़े बूढ़ो की उपस्थिति मात्र ही अनजाने ही परिवार को अनेक झंझवातों और संकटो से बचाये रहता है ।

बड़े-बूढ़ों को यदि अपना हिस्सा माना जाए, तो वे कभी भी बोझ लग ही नहीं सकते बोझ तो वह होता है जिससे कोई भावनात्मक लगाव न हों । ज़िन्दगी को लाभ-हानि के गणित के अनुसार जिया भी नहीं जा सकता । छोटी-छोटी बातें और भावनाएं ही आदमी को आदमी बनाती हैं । यदि भावना है तो कोई भी वृद्ध व्यर्थ की चीज़ नहीं हो सकता । बूढ़ो को बूढ़ा नहीं वरिष्ठजन कहिए और उनकी वरिष्ठता को पर्याप्त आदर व सम्मान देना सीखिए ।

सीरिया-वैश्विक शक्तियों की...

(पृष्ठ 38 का शेष)

वैश्विक शक्तियों को जनता के साथ सचमुच हमदर्दी होती, तो सीरिया के लोगों को केवल नैतिक समर्थन ही बशारुल असद के खुनी पंजे से उनकी मुक्ति के लिए काफ़ी होता, मगर सीरिया के लोगों की तुलना में वैश्विक खिलाड़ियों को क्षेत्र में अपने स्वार्थ ज़्यादा प्रिय थे, अत: तब से अब तक सीरिया की जनता पर एक ख़त्म न होने वाली जंग का अज़ाब थोप दिया गया है।

जानकर विश्लेषकों के अनुसार सीरिया की बढ़ती हुई समस्या के पीछे इसराईल की सुरक्षा से जुड़ी हुई भावनाएं हैं, जिनका ख़याल रखना वैश्विक शक्तियां अपना कर्तव्य समझती हैं । उन्हें बशारुल असद की मौजूदगी में ही इसराईल की भलाई नज़र आती है और बशारुल असद के मुक़ाबले में कोई दूसरा व्यक्ति भी उन्हें उस वक़्त ही स्वीकार करने योग्य हो सकता है, जो उन्हें इसराईल की सलामती व अस्तित्व के बारे में ठोस ज़मानत प्रदान करे और उस ज़मानत पर इसराईल संतुष्ट भी हो ।

इस समय चूंकि बशारुल असद का ऐसा कोई विकल्प उन्हें नहीं मिल सका है, इसलिए उनकी इच्छा है कि बशारुल असद की सत्ता सुरक्षित रहे, चाहे इसकी क़ीमत पूरी सीरिया को खंडहर बनाकर अदा करनी पड़े । हालात के इस पशमंज़र में सबसे अफ़सोसनाक बात यह है कि धार्मिक और सांप्रदायिक आधार पर अपने दृष्टिकोण की राजनैतिक महत्वाकांक्षा और आधिपत्य प्राप्त करने की इच्छा में क्षेत्र का एक मुस्लिम पहचान वाला देश भी इराक़ के बाद सीरिया, लेबनान और यमन में वैश्विक शक्तियों के खेल के लिए मैदान हमवार कर रहा है ।

2011 ईसवी से अब तक सीरिया में जो कुछ हुआ और हो रहा है, इससे यही ज़ाहिर होता है कि वैश्विक शक्तियों को सीरिया की जनता से कोई सहानुभूति नहीं है । ट्रंप प्रशासन ने तो ओबामा प्रशासन के ख़िलाफ़ खुलकर कहा है कि उसे बशारुल असद को हटाने में कोई दिलचस्पी नहीं है, जिसके बाद इस बात की तनिक भर भी गुंजाइश नहीं रहती कि इस्लामी दुनिया सीरिया की समस्याओं के निवारण के लिए वैश्विक शक्तियों से कोई उम्मीद रखे ।

हालात व घटनाओं ने यह साबित कर दिया है कि वैश्विक खिलाड़ियों को इससे कुछ मतलब नहीं कि बशारुल असद अपनी जनता के साथ, जो उनके समर्थकों से कई गुना अधिक हैं, क्या व्यवहार करता है । इदलिब में रासायनिक हथियारों का इस्तेमाल कोई पहली कार्रवाई नहीं, पिछले छह सालों में बार-बार बशारुल असद निहत्थे लोगों पर रासायनिक गैसों के द्वारा मौत थोप चुका है । 2013 ईसवी में अल-फ़ौता नामक बस्ती में इस निषिद्ध और मानवता भक्षक हथियार को आज़माकर बीस से अधिक लोगों को मौत की घाटी में सुला दिया गया ।

ऑस्ट्रेलिया की खोज

आस्ट्रेलिया में हज़ारों वर्षों से एबोरीजिनल लोगों का निवास था। डच नाविक विलियम जेन्स्ज वह पहला यूरोपियन था जो सागर पार कर वहां 1606 ई॰ में पहुंचा।



1770 ई॰ में ऑस्ट्रेलिया के पूर्वी समुद्रतट जेम्स कुक ने पहली बार कदम रखे। उसने कंगारुओं का वर्णन करते हुए लिखा कि वे कुत्ते की तरह दौड़ते हैं और ख़रगोश की तरह कूदते हैं।

ऑस्ट्रेलिया का पूरा चक्कर लगाने वाला व्यक्ति था मैथ्यू फ़िलंडर्स जो ब्रिट्श नौसैनिक था। उसने अपनी यात्र 1801 में शुरू की और 1803 में वापस लौटा।

जॉन स्टूअर्ट ने 1862 में आस्ट्रेलियन सरकार ने उसे इसके लिए 10,000 पाउंड का पुरस्कार दिया।

अफ़्रीक़ा की खोज

अफ़्रीक़ा के विशाल महाद्वीप का पता सबसे पहले योरोपीय नाविकों ने 19वीं सदी में लगाया। घने जंगल, विस्तृत मरुस्थल और चौड़े पाट वाली गहरी नदियों के कारण इसकी खोज में अनेक कठिनाइयाँ थीं।





ब्रिटिश अन्वेषक और ईसाई धार्मप्रचारक डेविड लिविंगस्टोन ने 1841 से 1873 में अपनी मृत्यु तक अफ़्रीक़ा की 5,000 किलो मीटर की लंबी यात्र की। एक बार उसे शेर ने हमल का शिकार भी होना पड़ा ।

अफ़्रीक़ा की सबसे प्रसिद्ध महिला अन्वेषक मेरी किंग्स्ले थीं। 1890 में उन्होंने पश्चिम अफ़्रीक़ी चिड़ियों क अनेक ऐसी प्रजातियों की सूची बनायी और जानकारी इकटठा की जिनके विषय में शेष विश्व को पहले कुछ पत नहीं था ।

1820 में अन्वेषक हग क्लैप्परटन, वाल्ट ओडनी औ डिक्सन डैनहम ने सहारा के मरुस्थल को पार किया औ अनेक अरब नेताओं से दोस्ती की । एक जर्मन अन्वेषक हांस मेयर ने 1889 में अफ़्रीक़ा के सबसे ऊंची पर्वत श्रृंखल किलिमंजरो की सबसे ऊंची चोटी पर विजय प्राप्त की

सूंड़ हिलाता हाथी

ऊपर हाथी का एक चित्र है । इसको किसी कागज़ पर छापकर सुंदर रंगों से रंग लो । आंखों की जगह बाज़ा में मिलने वाली आंखें भी चिपका सकते हैं । इसक पोस्टकार्ड जितने मोटे कागज़ पर चिपकाओ और सफ़ाई से काट लो । नाक बना हुआ गोला काटकर निकाल दो ।

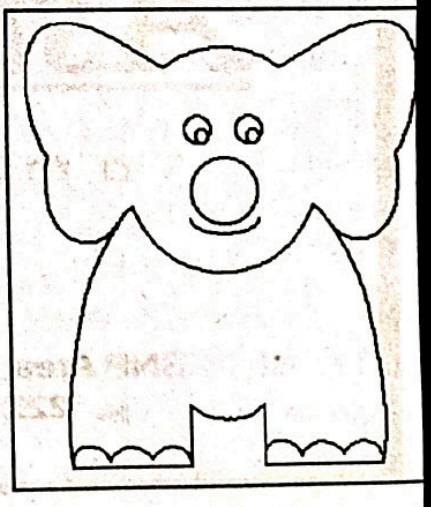

अपनी पहली और तीसरी उंगली को हाथी के पीछे के पैर बनाते हुए बीच की

उंगली को गोले से बाहर निकालकर सूंड़ बना दो । मेज पर अपनी उंगलियां चलाकर अभ्यास करो, हाथी क्या मजे़ से सूंड़ हिलाता हुई चलता है ।

फूल

हम फूलों ने सीखा खिलना
हंसना और हंसाना,
अपनी मधुर महक से सारे
उपवन की महकाना ।
मन्द पवन में झूम-झूमकर
डाली पर इतराना,
भौरों के मन के प्याले को
मधु रस से भर जाना ।
तितली अपने चपल परों की
रंगत हम से पाती,
इधर-उधर उड़ अपनी छवि से
सबका चित्त लुभाती ।
गीत हमारी ही शोभा के
कोयल गाने आती,
गौरैया गुणगान हमारे
गाते नहीं अघाती ।
कांटों की गोदी में पल कर
हम हंसते रहते हैं,
सूरज की गर्मी में जलकर
हम हंसते रहते हैं ।
अन्त समय धरती पर गिरकर
हम हंसते रहते हैं,
हम जीवन भर समझ न पाते
दुख किसको कहते हैं ।

–निरंकार देव

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद अहमद द्वारा दावत ट्रस्ट (रजि॰), D-314, दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, जामिया नगर, नयी दिल्ली-110025 से प्रकाशित एवं भारत ऑफ़सेट प्रेस, 2035, क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली–110006 से मुद्रित । फ़ोन : 011-26949430, 09818799223
संपादक : डॉ॰ मुहम्मद अहमद

संस्था की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुनर्प्रकाशन पूर्णतः प्रतिबंधित है ।


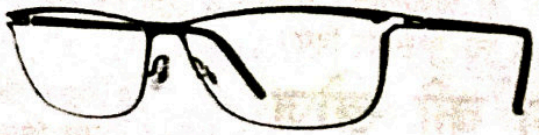
Asian Optics
a multibrand showroom
SNP Area, Sakchi ,Jsr.
2221184
Main Road, Golmuri ,Jsr.
2341175

अक़ायद व इबादात पर हमारी अहम पुस्तकें

आवागमनीय पुर्नजन्म	डॉ० मुहम्मद अहमद	50.00
अनेकेश्वरवाद की वास्तविकता	मौलाना अमीन अहसन इस्लाही	70.00
एकेश्वरवाद की वास्तविकता	मौलाना अमीन अहसन इस्लाही	35.00
एक ईश्वर की धारणा	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	40.00
परलोक की छाया में	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	90.00
पहेली जीवन की	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	12.00
रिसालत	मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ	45.00
लोगो: हिसाब का समय निकट आ चुका है	मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी	14.00
खुदा की गुलामी इंसान की बुलन्दी	मौलाना सैय्यद जलालुद्दीन उमरी	18.00
जीवन मृत्यु के पश्चात्	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
बनाव और बिगाड़	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	12.00
शान्ति-मार्ग	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	15.00
सोचने की बातें	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
प्यारी माँ के नाम इस्लामी संदेश	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फ़लाही	07.00
मानव जीवन और परलोक	शोबा-ए-दावत	22.00
मुक्ति-मार्ग	इनामुर्रहमान ख़ाँ	10.00
मौत के बाद क्या?	डॉ० शाहिद अली	10.00
मरने के बाद क्या होगा?	बिन्तुल इस्लाम	60.00
सत्य की खोज	मौलाना वहीदुद्दीन खाँ	16.00
नबी करीम (सल्ल०) की दुआएँ (पाकेट साइज़)	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	64.00
रमज़ान कैसे गुज़ारें?	खुर्रम मुराद	22.00
रोज़ा और उसका असली मक़सद	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	10.00
इबादत	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	16.00
इस्लाम में पाकी और सफाई	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फलाही	20.00
नमाज़ में आप क्या पढ़ते हैं?	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
इमान की कसौटी	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	08.00
खुतबाते हरम	मौलाना सैय्यद अबुल आला मौदूदी	18.00
नमाज़	मौलाना नसीम ग़ाज़ी फलाही	12.00

MMI PUBLISHERS
D-307,Dawat Nagar,Abul Fazal Enclave,Jamia Nagar,New Delhi-110025
Phone: 26981652,26984347 Fax: 26987858
E-mail:mmipublishers@gmail.com Website: www.mmipublishers.net

Posted on 20-21 July 2017
August 2017
E-mail: kantihindimonthly@yahoo.com
Publishing Date: 18.07.2017
Total Pages-52 (With Covers)

हिन्दी भाषियों की मासिक पत्रिका
कान्ति

RNI 53372/91
DL(S)-01/3147/2015-2017
LICENSED TO POST WITHOUT PREPAYMENT
License No. U (SE)-73/2015-2017
Posted at DELHI R.M.S. Delhi-6

स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार

कान्ति
स्वस्थ चेतना का वाहक हिन्दी साप्ताहिक अख़बार

पढ़िए और पढ़ाइए

जो केवल समाचार ही न दे

- बल्कि बताए समाचारों का मर्म और आगे-पीछे का हाल
- देश व समाज की उन्नति के लिए प्रस्तुत करे ठोस उपाय
- प्रस्तुत करे इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ होने वाले दुष्प्रचार का तोड़
- सामने लाए सही स्थिति और अवगत कराये वास्तविकताओं से
- रखे ध्यान नैतिक मूल्यों का और मार्गदर्शन करे भलाई व कल्याण की ओर

सहयोग राशि :-

● प्रतिकॉपी ₹ 5/= ● अर्द्धवार्षिक ₹ 125/= ● वार्षिक ₹ 250/=

एजेंसी और ग्राहक बनने के लिए सम्पर्क करें ।

KANTI WEEKLY

D-314, Dawat Nagar, Abul Fazl Enclave, Jamia Nagar, New Delhi-25
Phone : 09818799223, 011-26949430
E-mail : kantiweekly@hotmail.com